

# यूनियन धारा Union Dhara

जिल्द 41, सं. 3 Vol. XXXXI, No.3, मुंबई

जुलाई-सितंबर, 2016

त्रिहारा लाभ  
Triple Bottom Line



जन  
People



जग  
Planet



धन  
profit

सी.एस.आर. - बैंक का सामाजिक सरोकार  
C.S.R.-Bank's Social Concern

# अनुक्रमणिका Contents

यूनियन धारा  
जुलाई-सितंबर, 2016



UNION DHARA  
July-Sept. 2016

प्रकाशन तिथि : 10.11.2016

महाप्रबंधक (मा.सं.)

आर. आर. मोहंती

General Manager (HR)

**R. R. Mohanty**

संपादक

सविता शर्मा

Editor

**Savita Sharma**

संपादकीय सलाहकार

देबज्योति गुप्ता

एच.एन. सक्सेना

केशव बैजल

राम गोपाल सागर

Editorial Advisors

**Debjyoti Gupta**

**H. N. Saxena**

**Keshav Baijal**

**Ram Gopal Sagar**

**Printed and published by Savita Sharma  
on behalf of Union Bank of India  
and printed at SAP Print Solutions Pvt. Ltd.**

**Lower Parel, Mumbai-400013**

**and published at Union Bank Bhavan,**

**239, Vidhan Bhavan Marg,**

**Nariman Point, Mumbai-400021.**

**Editor-Savita Sharma.**

**E-mail: savita.sharma@unionbankofindia.com**

**Our Address : Union Dhara,**

**11th Floor, Union Bank Bhavan,**

**239, Vidhan Bhavan Marg,**

**Nariman Point, Mumbai - 400 021.**

**E-mail: uniondhara@unionbankofindia.com**

**Mob. No. 9920037916**

**Tel.: 22020853 / 22896545 / 22896590**

SPECIAL FEATURE ON

CSR

परिदृश्य .....	3	हमारी सामाजिक जिम्मेदारियाँ .....	36
Welcome/एक और पुरस्कार .....	4	Canada Calling .....	38
संपादकीय/Editorial .....	5	CSR and Brand Value .....	40
सोशल फाउंडेशन के प्रभारी का संदेश .....	6	बधाई .....	41
सामाजिक उत्तरदायित्व का रहे एहसास (कविता).....	7	पुरस्कार और सम्मान.....	42
साहित्य जगत से .....	8	तमसो मा ज्योतिर्गमय.....	44
कॉर्पोरेट सामाजिक दायित्व की संकल्पना .....	10	हमें गर्व है.....	45
What, how & why CSR.....	11	Bank a Responsible	
Beyond the Head Quarters.....	12	Corporate Citizen .....	46
Uni One Diary .....	13	कॉर्पोरेट सामाजिक दायित्व	
परहित सरिस धर्म.....	14	का उपभोक्ता के व्यवहार पर प्रभाव.....	48
Bal Pratibha/बड़े लोग! (कविता).....	15	शुभमस्तु.....	50
केंद्रीय कार्यालय में हिन्दी उत्सव .....	16	I am happy/औरतें (कविता) .....	50
मुझे नहीं पता ? / हमारी योजनाएँ.....	18	जिंदगी/शिखर की ओर .....	51
CSR – a way of revising.....	19	परोपकार परमोधर्म .....	52
Legally Speaking.....	20	सामाजिक दायित्व .....	53
कॉर्पोरेट जगत की समाजोन्मुखता.....	22	कॉर्पोरेट सोशल रिस्पॉन्सिबिलिटी.....	54
सी.एस.आर. यूनियन बैंक का		Train to Jelapang .....	56
सामाजिक सरोकार .....	24	Quiz.....	58
सी.एस.आर. से संबंधित		हेल्थ टिप्स.....	59
बैंक के प्रयास .....	26	Face in the	
साक्षात्कार .....	28	Union Bank Crowd.....	60
सहजन .....	29	परिपत्रों की सूची .....	62
What's New .....	30	Overseas Activities.....	63
New lease of hope for Divyang .	31	समाचार दीर्घा .....	65
तुम तो निर्भया हो (कविता) .....	31	चरक का कोना .....	71
ग्रीन हाउस गैस उत्सर्जन .....	32	Cross word.....	72
कारगर लीडर .....	33	Cabinet Secretariat.....	73
Project Utkarsh .....	34	व्यंजन .....	74
		आप की पाती .....	75

अगला आकर्षण

सतर्कता विशेषांक



इस पत्रिका में व्यक्त विचारों से प्रबंधन का सहमत होना अनिवार्य नहीं है.

Designed and Printed at SAP Print Solutions Pvt. Ltd., Lower Parel, Mumbai - 400 013.



प्रिय साथियो,

आर्थिक विकास की धीमी गति और विभिन्न क्षेत्रों के अंतर्गत असमान विस्तार के कारण अर्थव्यवस्था एक पहली सी बनी हुई है। इन सब चुनौतियों के बावजूद, यूनियन बैंक, कम लागतवाली आस्तियों व ऋण बढ़ोतरी के केंद्र यथा, रैम क्षेत्र; अनर्जक आस्तियों की वसूली हेतु सघन प्रयासों तथा विभिन्न डिजिटल उत्पादों पर की गई पहल पर सुनियोजित प्रयासों के कारण अपना विशिष्ट स्थान बना सका है। यह बैंक के ब्रांड की बढ़ रही मज़बूती में परिलक्षित है। "इकोनॉमिक टाइम्स" के अनुसार इस दृष्टि से हमारा बैंक ₹2,072 करोड़ की ब्रांड वैल्यू के साथ भारत के श्रेष्ठतम 50 ब्रांडों में से 36वें स्थान पर है। हार्दिक बधाई।

हमारा बैंक विकास और लाभ के मौलिक व्यावसायिक लक्ष्य का अनुसरण करते हुए "समाज को पुनः वापस" करने की धारणा में दृढ़ विश्वास रखता है। तदनुसार, कॉर्पोरेट सामाजिक दायित्व की संकल्पना के शुरू होने से काफी पहले से ही हमारे बैंक द्वारा समाज के वंचित जनों को आजीविका एवं सम्मानित जीवन शैली प्रदान करने की दिशा में कई पहलें की गई हैं। वर्ष 2006 में "यूनियन बैंक सोशल फाउंडेशन ट्रस्ट" (यूबीएसएफटी) की स्थापना के साथ हमने इन पहलों को संस्थागत रूप देते हुए इनके कार्य क्षेत्र का विस्तार किया है।

फाउंडेशन के माध्यम से, हमारा बैंक लोगों के स्वास्थ्य को सुधारने, उनकी सुख-सुविधाओं को बढ़ाने, उन्हें पर्यावरण हितैषी खुशहाल जीवन उपलब्ध कराने तथा उनकी आजीविका को बेहतर बनाने में सहयोग करता रहा है। तदनुसार हमारे बैंक द्वारा कैंसर जागरूकता कैंप की व्यवस्था, विद्यालय/सामुदायिक प्रसाधनों के निर्माण, गाँवों में सोलर लाइट, अस्पतालों में एम्बुलेंस सुविधा, आदिवासी छात्राओं हेतु हॉस्टल की व्यवस्था तथा 'दिव्यांग' छात्रों की सहायता जैसे जनकल्याणकारी कार्य किए गए हैं। फाउंडेशन द्वारा किए गए इन प्रयासों के लिए बैंक को एबीपी न्यूज़ द्वारा "बैंक विद बेस्ट सीएसआर प्रैक्टिसेस" तथा सीएनबीसी आवाज़ द्वारा "एडवांसिंग फाइनेंशियल इंकलूज़न बाय चैनलाइजिंग सीएसआर बजट इन टू फाइनेंशियल एड्स" जैसे पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है।

मुझे अत्यंत खुशी है कि 'यूनियन धारा' का सितंबर, 2016 अंक, कॉर्पोरेट सामाजिक दायित्व को समर्पित है। प्रस्तुत अंक में कॉर्पोरेट सामाजिक दायित्व की विभिन्न संकल्पनाओं, गतिविधियों एवं समाज के विभिन्न क्षेत्रों पर पड़ने वाले प्रभावों को शामिल किया गया है। मुझे विश्वास है कि यह अंक विभिन्न स्टैक होल्डरों को एकजुट करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा, जिससे बैंक की सीएसआर गतिविधियों को गहराई से समझने में मदद मिलेगी।

इस दिशा में किए जा रहे समवेत और प्रशंसनीय प्रयासों हेतु आप सभी को मेरी ओर से बधाई।

शुभकामनाओं सहित,  
आपका

प्रतिकारी..

अरुण तिवारी  
अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक

# परिदृश्य Perspective

Dear Unionites,

Macros continue to be enigmatic, with economic recovery being gradual and sectoral spread uneven. Challenges notwithstanding, Union Bank has been able to carve a niche, with strategic pursuit of low cost liabilities and loan growth in focus areas, viz. RAM sectors, concerted efforts on NPA resolution & recovery, and digital initiatives. It reflects in our Bank's growing brand strength, which, valued at ₹2,072 crore, ranked 36th among Top 50 brands in India, well ahead of our banking peers, as per 'The Economic Times'. Congratulation!

Our Bank has been a firm believer in the concept of 'giving back to society' while pursuing core business objectives of growth and profitability. Accordingly, much before the buzz of 'corporate social responsibility' (CSR) started, the Bank took initiatives empowering the underprivileged for a dignified life, and living. We institutionalised the initiatives, while expanding their scope, by creating 'Union Bank Social Foundation Trust' (UBSFT) in the year 2006.

Through the UBSFT, our Bank is helping people to improve their health and wellbeing, reduce the carbon footprint, and enhance livelihoods. Accordingly, the Bank has helped arranging cancer awareness camps, construction of school/community toilets, solar lights in villages, ambulances to hospitals, hostel for tribal girl students, support 'divyaang' students, and help during natural calamities like floods in Uttarakhand and Chennai. Our efforts are well acknowledged and appreciated with the Bank winning 'Bank with Best CSR Practices' award from ABP News as well as award for 'Advancing Financial Inclusion by Channelizing CSR Budgets into Financial Aids' from CNBC Awaz.

It gives me immense pleasure that 'Union Dhara' is dedicating its September, 2016 issue to the 'corporate social responsibility'—detailing the concept, activities, and the impact on various segments of society. I believe, this issue in hand will be highly useful in connecting various stake-holders, and, in turn, deepen understanding about our Bank's CSR activities.

I extend my best wishes and heartiest congratulations to all for their laudable endeavour in this direction.

With best compliments,  
Yours,

Arun Tiwari  
Chairman & Managing Director

# Welcome!



Shri Raj Kamal Verma has assumed charge as Executive Director of our Bank on 9th August, 2016.

Born on 7th February, 1959, Shri Verma is BA (Hons), with professional qualification of CAIIB. Shri Verma started his banking career at Bank of India as an Officer in December 1981.

Shri Verma has got varied field experience and abundant exposure in General Banking, Credit and International Operations.

His last posting was as General Manager, Inspection & Audit.



Shri Atul Kumar Goel assumed charge as Executive Director of our Bank on 15.09.2016. Prior to his elevation as Executive Director, he was General Manager and Chief Financial Officer (CFO) at India's oldest Bank, Allahabad Bank and his portfolio included Finance & Accounts, International Banking, Treasury & Joint Venture. He was also a Director on the Board of All Bank Finance Limited, a subsidiary of Allahabad Bank.

Born in December 1964, Shri Goel is a B.Com. (Hons) and is a member of ICAI, a Certified Associate of Indian Institute of Bankers (CAIIB). His career in Banking began when he joined Allahabad bank as Chartered Accountant on 27.03.1992.



## एक और पुरस्कार

बैंक की तिमाही हिन्दी गृह पत्रिका "यूनियन सृजन" को आशीर्वाद संस्था से वर्ष की सर्वश्रेष्ठ हिन्दी गृहपत्रिका का पुरस्कार प्राप्त हुआ, जिसे श्री केशव बैजल, उप महाप्रबंधक तथा श्री एस एस यादव, मुख्य प्रबंधक (राजभाषा) ने ग्रहण किया. श्री एस एस यादव को संस्था द्वारा 'राजभाषा सम्मान' से भी सम्मानित किया गया.

# संपादकीय Editorial

यूनियन धारा का सितंबर 2016 अंक कॉर्पोरेट सामाजिक दायित्व विशेषांक के रूप में आपके समक्ष है। भले ही "कॉर्पोरेट सामाजिक दायित्व" की अवधारणा नई-सी लगती हो, किंतु सच तो यह है कि प्राचीन भारतीय संस्कृति का यह अनिवार्य अंग रही है। हमारी लोकोक्तियाँ, कहावतें और लेखकों एवं कवियों ने अपनी कलम से इनका वर्णन भी किया है। जैसे:-

*चिड़ी चोंच भर ले गई, नदी ना घटयो नीर,  
दान दिए धन न घटे, कह गए भगत कबीर.*

*परोपकार परमो धर्म:*

*साई इतना दीजिए, जा मे कुटुंब समाए  
में भी भूखा ना रहूँ, साधु न भूखा जाए.*

*परहित सरिस धर्म नहीं भाई,  
परपीड़ा सम नहीं अधमाई.*

हमारा अस्तित्व ही सामाजिक प्राणी के रूप में है। यदि समाज का अस्तित्व है तो हमारा भी अस्तित्व है। सह-अस्तित्व की इसी भावना के कारण तो मनुष्य समूची पृथ्वी का अधिष्ठाता बना है वरना, मनुष्य भी अन्य प्राणियों की तरह ही "जिसकी लाठी, उसकी भैंस" वाले जीवन का ही हिस्सा है। बाकी पशु-पक्षी वह नहीं करते तो मनुष्य करता है- **जियो और जीने दो**।

प्राचीन काल में यह कार्य समाज का धनाढ्य, संपन्न वर्ग करता था और इसलिए सम्मान पाता था। इतिहास भी ऐसे शासकों को विशेष सम्मान के साथ रेखांकित करता है, जिन्होंने जन-कल्याण के लिए धर्मशालाएँ, कुएँ, सड़कें आदि बनवाईं। आज, अंतर इतना है कि यह कार्य संस्थागत रूप से सरकार द्वारा आबंटित कर दिया गया है। नियम-अधिनियम बना दिए गए हैं। वैश्विक स्तर पर इसे दायित्व के रूप में स्वीकार किया गया है।

इस अंक की प्रस्तुति में अपने सुधी लेखकों, कवियों, फोटोग्राफरों तथा दक्ष कार्टूनिस्ट के साथ-साथ मार्गदर्शन हेतु मैं **यूनियन बैंक सोशल फाउंडेशन ट्रस्ट** तथा इसके प्रभारी श्री पी. के. सिंह के प्रति आभार व्यक्त करती हूँ।

शुभकामनाओं सहित,



सविता शर्मा  
संपादक

This issue of Union Dhara has a special feature on '**Corporate Social Responsibility**'. Though the concept seems to be newer to the business world, its essence finds roots deeply penetrated into our ancient Indian culture which is very well evident from the verses, write-ups, proverbs like:

*Chidi chonch bhar le gayee, nadi na ghatyo neer,  
Daan diye dhan na ghate, kah gaye bhagat Kabir*

*Paropakar paramo dharmah*

*Sai itna dijiye, jaa me kutumb samaaye  
mai bhee bhukha na rahu, sadhu na bhukha jaye.*

*Parhit saris dharam nahi bhai,  
Parpira sam nahi adhmai.*

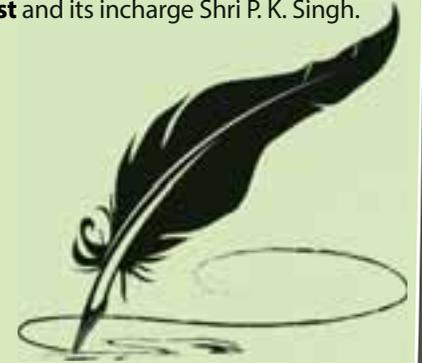
Existence of human being is as a social animal. If society exists, our existence also is ensured. Due to this very essence of co-existence, human being has become the king and controller of the planet, otherwise we also are a part of the world where "**survival of the fittest**" is the key. Man behaves in different way than the other creatures and that is- **LIVE & LET LIVE**.

In ancient times, social responsibility was a part of upper class people in India, who infact were the controller of the society. History also underlines respectfully those rulers' welfare works who did a lot for their people and state in the form of inns, wells, roads, etc. Today, the difference is only that this responsibility has been entrusted to the institutions; laws and rules have been framed. It has been accepted globally as Social Responsibility.

I, as an editor, owe the credit for the issue to my writers, poets, photographers and skilled cartoonist as well as **Union Bank Social Foundation Trust** and its incharge Shri P. K. Singh.

With Best Wishes,

Savita Sharma  
Editor





## यूनियन बैंक सोशल फाउंडेशन ट्रस्ट के प्रभारी का संदेश



प्रिय साथियो,

मुझे यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता हुई है कि यूनियन धारा का सितंबर 2016 अंक बैंक के कॉर्पोरेट सामाजिक दायित्व संबंधी प्रयासों को समर्पित किया गया है। इस अंक में बैंक/यूनियन बैंक सोशल फाउंडेशन ट्रस्ट द्वारा इस दिशा में किए गए प्रयासों तथा समाज के विभिन्न संवर्गों पर उनके प्रभाव की झलक प्रस्तुत की गई है।

किसी भी संस्था के विकास से समाज तथा पर्यावरण पर पड़ने वाले प्रभाव भी उसके उद्देश्य में शामिल होने चाहिए। सी.एस.आर. को केवल मानवता से ही संबंधित नहीं रहना चाहिए। छोटे-छोटे तथा अस्थायी प्रभाव वाले जन कल्याण के उपायों से कुछेक सामाजिक समस्याओं से तात्कालिक राहत मिलती है। वस्तुतः सी.एस.आर. को मुख्य रूप में समाज के उत्थान, नागरिकों को सशक्त एवं आत्मनिर्भर बनाने तथा उनमें उद्यमिता का जोश भरने हेतु रणनीतिक सामाजिक निवेश के रूप में देखा जाना चाहिए। इससे विकास के आवर्तन चक्र का निर्माण होता है।

यूनियन बैंक सोशल फाउंडेशन ट्रस्ट, जिसकी स्थापना यूनियन बैंक द्वारा अपने सामाजिक दायित्वों के निर्वहन हेतु की गई है, द्वारा अपने उपलब्ध संसाधनों का सदुपयोग समाज के कमजोर वर्गों को शिक्षा, स्वास्थ्य, कौशल विकास तथा वातावरण आदि हेतु लाभ पहुँचाने के लिये किया जा रहा है। मुझे विश्वास है कि पत्रिका का यह अंक स्टाफ सदस्यों की सी एस आर संबंधी जागरूकता बढ़ाने तथा बैंक के सामाजिक दायित्व निर्वहन हेतु सोशल फाउंडेशन के माध्यम से विभिन्न क्षेत्रों में किए गए सफल प्रयासों की जानकारी बढ़ाने में अत्यंत लाभकारी सिद्ध होगा।

इस अंक में सहयोग देने वाले प्रत्येक रचनाकार तथा सहयोगकर्ता को उनके प्रयासों तथा बहुमूल्य समय देने, इस अंक में अपने अनुभवों को साझा करने हेतु मैं बधाई तथा शुभकामनाएँ देता हूँ।

पी. के. सिंह

Dear Unionites

It gives me immense pleasure to learn that UNION DHARA is publishing it's September 2016 edition dedicated to CSR activities of the Bank, comprising various activities undertaken by Bank/UBSFT and its impact on various segments of society.

An organization's growth objectives must take into account the impact it will have on both society and environment. CSR should not be restricted to philanthropy. Piecemeal and ad-hoc philanthropic measures can only act as palliatives to certain social concerns. CSR should ideally be perceived as a strategic social investment aimed at uplifting the society at large, empowering individuals, making them self-reliant and fuelling the spirit of entrepreneurship, which sets in motion a virtuous cycle.

Union Bank Social Foundation Trust, which was created by Bank for discharging its social responsibility has ensured to channelize the available resources to various sectors like Education, Healthcare, Skill Development, Environment etc and the beneficiaries are from weaker sections of society. I am sure that this publication will be highly useful for creating awareness among our staff members about the successful initiatives taken by UBSF in different spheres.

I extend my best wishes and Heartiest Congratulations to all who have put in their valuable efforts and shared their details in this publication.

P. K. Singh

# सामाजिक उत्तरदायित्व का रहे एहसास

वैश्वीकरण के इस युग में,  
संभावनाएं हुई असीम अपार।  
देश-विदेश से रिश्ता बना,  
प्रगाढ़ संबंध, समृद्ध व्यापार॥

औद्योगिक विकास की छत्रछाया में,  
उद्यम, उद्यमी बढ़ने लगे।  
भारतीय समाज का उत्थान हुआ,  
गीत नई रीत के चलने लगे।

नीले गगन के निरभ्र पटल पर,  
कॉर्पोरेट संस्कृति का उद्भव हुआ।  
समाज के प्रति संवेदना जगी,  
सामाजिक दायित्व का अनुभव हुआ।

प्राकृतिक संसाधन इसी समाज के,  
मानव संसाधन का साथ मिला।  
सरकारी, निजी कंपनियां उभरीं,  
समाज को इनका विश्वास मिला।

उत्पादन क्षमता बढ़ने लगी,  
लाभ भी इनका फलीभूत हुआ।  
जिनसे मिलकर स्थापित हुए,  
उनके कल्याण का सूत्र मिला॥

वन पर्यावरण सुरक्षा खातिर,  
कंपनियों को ऐसा बोध हुआ।  
अपने कुछ हिस्से को देना,  
पूरे देश में शोध हुआ॥

कॉर्पोरेट समाज ने आगे आकर,  
सामाजिक दायित्व का एहसास किया।  
जंगल-जमीन-जीवन हो बेहतर,  
मिल-जुलकर ऐसा प्रयास किया॥

कॉर्पोरेट सामाजिक दायित्व  
विकास दूत बन आगे आया।  
गांव-शहर, कस्बों-नगरों में,  
मेहनत ने है धन बरसाया॥

नगर-नगर में बालोद्यान,  
गांव में सामुदायिक भवन बने।  
स्कूल, अस्पताल, अनाथालय, वृद्धाश्रम,  
दिव्यांगों को भी संबल मिले॥

निजी क्षेत्र के कई घराने,  
सार्वजनिक क्षेत्र के कई प्रतिष्ठान।  
सामाजिक दायित्व को आगे लेकर,  
करने लगे समस्या निदान॥

यूनियन बैंक की समृद्ध परंपरा,  
सामाजिक उत्थान में नित्य प्रयासरत।  
शाखा-शाखा हर क्षेत्र में,  
काम करने की लगी है त्वरा ॥

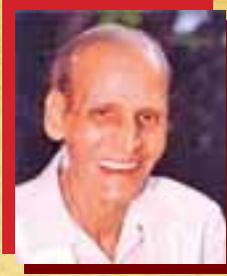
स्कूल में पंखा, पेयजल हो,  
शौचालय का निर्माण असंख्य।  
जरूरतमंदों का हो सपना पूरा,  
लाभार्थी बन जाए बहुसंख्य॥

शिक्षा, स्वास्थ्य, संस्कृति हो बेहतर,  
आगे बढ़कर पहल हुई।  
कॉर्पोरेट सामाजिक दायित्व की नीति,  
कर्तव्यनिष्ठा से सफल हुई॥

यह युग है उद्योगों का,  
इनकी जिम्मेदारी बनती है खास।  
आगे बढ़ सभी प्रयास करें,  
सामाजिक उत्तरदायित्व का रहे एहसास॥

विजय कुमार पाण्डेय  
क्षे. का., पटना





# काव्य प्रदीप

ऐ मेरे वतन के लोगों  
जरा आँसू में भर लो पानी  
जो शहीद हुए हैं उनकी  
जरा याद करो कुर्बानी

लता मंगेशकर द्वारा गाए इस गीत का सीधा प्रसारण तत्कालीन प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू की उपस्थिति में 26 जनवरी, 1963 को दिल्ली के रामलीला मैदान में किया गया. गीत सुनकर जवाहरलाल नेहरू की आंखें भर आई थीं.



ऐसे हृदयस्पर्शी, मार्मिक तथा आत्मा को विभोर करने वाले गीत की रचना भारतीय गीतकार एवं कवि - प्रदीप ने 1962 के भारत-चीन युद्ध के दौरान शहीद हुए सैनिकों की श्रद्धांजलि के रूप में की थी. कवि प्रदीप ने इस गीत का राजस्व युद्ध विधवा कोष में जमा करने की अपील की. मुंबई उच्च न्यायालय ने 25 अगस्त, 2005 को संगीत कंपनी एचएमवी को इस कोष में अग्रिम रूप से 10 लाख जमा करने का आदेश दिया.

देश प्रेम और देश-भक्ति से ओत-प्रोत भावनाओं को सुन्दर शब्दों में पिरोकर जन-जन तक पहुँचाने वाले कवि प्रदीप का जन्म 6 फरवरी, 1915 को उज्जैन के बड़नगढ़ नामक कस्बे में हुआ था. पिता का नाम नारायण भट्ट था. प्रदीप जी उदीच्य ब्राह्मण थे. प्रदीप जी की शुरुआती शिक्षा इंदौर के शिवाजी राव हाईस्कूल में हुई, जहाँ वे सातवीं कक्षा तक पढ़े. इसके बाद की शिक्षा इलाहाबाद के दारागंज हाईस्कूल में संपन्न हुई. इंटरमीडियेट की परीक्षा पूरी की. दारागंज उन दिनों साहित्य का गढ़ हुआ करता था. वर्ष 1933 से 1935 तक का इलाहाबाद का काल प्रदीप जी के लिए साहित्यिक दृष्टिकोण से बहुत अच्छा रहा. लखनऊ विश्वविद्यालय से स्नातक की डिग्री हासिल की. प्रदीप जी का विवाह भद्रा बेन के साथ हुआ था. प्रदीप का वास्तविक नाम रामचन्द्र नारायण द्विवेदी था, किन्तु एक बार हिमांशु राय

ने कहा कि ये रेलगाड़ी जैसा लम्बा नाम ठीक नहीं है, तभी से उन्होंने अपना नाम 'प्रदीप' रख लिया.

प्रदीप नाम के कारण उनके जीवन का एक रोचक प्रसंग है. उन दिनों बम्बई में कलाकार प्रदीप कुमार भी प्रसिद्ध हो रहे थे तो, अक्सर गलती से डाकिया कवि प्रदीप की चिट्ठी उनके पते पर डाल देता था. डाकिया सही पते पर पत्र दे इस वजह से उन्होंने प्रदीप के पहले कवि शब्द जोड़ दिया और यहीं से 'कवि प्रदीप' के नाम से प्रख्यात हुए.

कवि प्रदीप की पहचान 1940 में प्रदर्शित हुई फिल्म बंधन से बनी. हालांकि 1943 की स्वर्ण जयंती हिट फिल्म किस्मत के गीत "दूर हटो ऐ दुनिया वालों, हिंदुस्तान हमारा है" ने उन्हें देशभक्ति गीत के रचनाकारों में अमर कर दिया. गीत के अर्थ से क्रोधित तत्कालीन ब्रिटिश सरकार ने उनकी गिरफ्तारी के आदेश दिए. इससे बचने के लिए कवि प्रदीप को कुछ दिनों हेतु भूमिगत होना पड़ा.

जिस समय कवि प्रदीप की प्रतिभा उत्तरोत्तर मुखर हो रही थी, तब उन्हें तत्कालीन कवि सम्राट पं. गया प्रसाद शुक्ल का आशीर्वाद प्राप्त हुआ. प्रदीप जी भी उनके स्नेही मंडल के अभिन्न अंग बन गए. प्रदीप जी का जीवन संघर्षभरा, रोचक तथा प्रेरणादायक रहा. माता-पिता उन्हें शिक्षक बनाना चाहते थे, किन्तु तकदीर में तो कुछ और ही लिखा था. बम्बई की एक छोटी सी कवि गोष्ठी ने उन्हें सिनेमा जगत का गीतकार बना दिया. उनकी पहली फिल्म थी - कंगन, जो बहुत ही सफल रही. उनके द्वारा बंधन (1940) फिल्म में रचित गीत, 'चल-चल रे नौजवान' राष्ट्रीय गीत बन गया. सिंध और पंजाब की विधान सभा ने इस गीत को राष्ट्रीय गीत की मान्यता दी और यह गीत विधान सभा में गाया जाने लगा. बलराज साहनी उस समय लंदन में थे, उन्होंने इस गीत को लंदन बी.बी.सी. से प्रसारित कर दिया. अहमदाबाद में महादेव भाई ने इसकी तुलना उपनिषद् के मंत्र 'चरैवेति-चरैवेति' से की. जब भी यह गीत सिनेमा घर में बजता, लोग एक बार फिर-एक बार फिर कहकर पुनः दिखाने की मांग करते थे और यह गीत फिर से दिखाना पड़ता था. उनका फिल्मी जीवन बाम्बे टॉकिज से शुरू हुआ था, जिसके संस्थापक हिमांशु राय थे. यहीं से प्रदीप जी को बहुत प्रसिद्धि, सफलता एवं यश मिला.

पांच दशकों के अपने पेशे में कवि प्रदीप ने 71 फिल्मों के लिए 1700 गीत लिखे. उनके देशभक्ति गीतों में, फिल्म बंधन (1940) में "चल चल रे नौजवान", फिल्म जागृति (1954) में "आओ बच्चों तुम्हें दिखाएं", "दे दी हमें आजादी बिना खड़ग-ढाल" और फिल्म जय संतोषी मां (1975) में "यहां वहां जहां तहां मत पूछो कहां-कहां" है. इस गीत को उन्होंने फिल्म के लिए स्वयं गाया भी था.

कवि प्रदीप गाँधी विचारधारा के कवि थे. प्रदीप जी ने जीवन मूल्यों की कीमत पर धन-दौलत को कभी महत्व नहीं दिया. कठोर संघर्षों के बावजूद उनके निवास स्थान 'पंचामृत' पर सोने के कंगुरे भले ही न मिलें परन्तु वैश्विक ख्याति का कलश जरूर दिखेगा. प्रदीप जी के लिखे गीत भारत में ही नहीं वरन् अफ्रीका, यूरोप और अमेरिका में भी सुने जाते हैं. पं. प्रदीप जी ने कमर्शियल लाइन में रहते हुए, कभी भी अपने गीतों से कोई समझौता नहीं किया. उन्होंने कभी भी कोई अश्लील या हल्के गीत न गाए और न लिखे. प्रदीप जी को अनेकों सम्मान से सम्मानित किया गया है. 1961 में संगीत नाटक अकादमी द्वारा महत्वपूर्ण गीतकार घोषित किया गया.

यह पुरस्कार उन्हें डॉ. राजेन्द्र प्रसाद द्वारा प्रदान किया गया था. किसी गीतकार को राष्ट्रपति द्वारा इस तरह से सम्मान सिर्फ प्रदीप जी को ही मिला है. भारत सरकार ने उन्हें सन् 1997-98 में दादासाहब फाल्के पुरस्कार से सम्मानित किया. मजरूह सुल्तानपुरी के बाद ये दूसरे गीतकार हैं, जिन्हें यह पुरस्कार मिला है.

प्रदीप जी स्वतंत्रता के आन्दोलन में बढ़-चढ़ कर हिस्सा लेते थे. एक बार स्वतंत्रता के आन्दोलन में उनका पैर टूट गया था और कई दिनों तक उन्हें अस्पताल में रहना पड़ा. प्रदीप जी अंग्रेजों के अनाचार-अत्याचार से दुखी थे. उनका मानना था कि यदि आपस में हम लोगों में ईर्ष्या-द्वेष न होता तो हम गुलाम न होते. परम देशभक्त आजाद की शहादत पर कवि प्रदीप का मन करुणा से भर गया था और उन्होंने अपने अंतर्मन से एक गीत रच डाला. वह गीत है -

**वह इस घर का एक दिया था,  
विधि ने अनल स्फुलिंगों से उसके जीवन का वसन सिया था  
जिसने अनल लेखनी से अपनी गीता का लिखा प्रकथन  
जिसने जीवन भर ज्वालाओं के पथ पर ही किया पर्यटन  
जिसे साध थी दलितों की झोपड़ियों को आबाद करुं मैं  
आज वही परिचय-विहीन सा पूर्ण कर गया अन्नत के शरण.**

1962 में चीन से युद्ध के पश्चात् पूरा देश आहत था. इसी परिपेक्ष्य में प्रदीप जी ने एक गीत लिखा था, जिसने उनको अमर बना दिया.

**ऐ मेरे वतन के लोगों, तुम खूब लगाओ नारा  
यह शुभ दिन है हम सबका, लहरा दो तिरंगा प्यारा  
पर मत भूलो सीमा पर, वीरों ने हैं प्राण गँवार,**

उन्होंने आर्य समाज के संस्थापक दयानंद सरस्वती के सम्मान में भी अमर कहानी लिखी, जिसका ऑडियो ऋषि गाथा के नाम से जारी किया गया है. सादा जीवन उच्च विचार के धनी प्रदीप जी की मृत्यु कैंसर के कारण 11 दिसम्बर, 1998 को हुई थी.

प्रदीप जी ने देशवासियों को स्वतंत्रता प्राप्त करने के लिए आह्वान किया. उन्होंने फिल्मी गीत जरूर लिखे लेकिन उसमें देशप्रेम की अजस्रधारा को प्रवाहित करने में कामयाब रहे. साहित्य समीक्षा के मानदण्डों के आधार पर कवि प्रदीप एक उच्च कोटी के साहित्यकार हैं. प्रदीप जी राष्ट्रीय चेतना के प्रतिनिधि कवियों की अग्रिम पंक्ति में अपना स्थान रखते हैं. भाषा की दृष्टि से कवि प्रदीप का स्थान अन्य गीतकारों से श्रेष्ठ है. समाज की बिगड़ती दशा को देखकर उनकी अंतरआत्मा ईश्वर से कहती है कि -

**देख तेरे संसार की हालत क्या हो गई भगवान, कितना बदल गया इंसान.**

आज समस्त ओर यही हालात हैं. सामाजिकता की भावना से ओतप्रोत होकर विश्वबंधुत्व की भावना में उन्होंने लिखा था कि -

**इन्सान से इन्सान का हो भाई चारा, यही पैगाम हमारा  
संसार में गूँजे समता का इकतारा, यही है गान हमारा.**

कवि प्रदीप जी के संदेश भारत के हर घर में पहुँचे. वे न सिर्फ एक कवि, रचनाकार थे, बल्कि सजग क्रांतिकारी एवं जागृत व्यक्ति थे. उनके निधन से भारत माँ ने अपना एक अनमोल लाल खो दिया, जिसकी क्षतिपूर्ति शायद ही हो सकती है. फिर भी उनके विचारों एवं सिद्धांतों पर चलकर हम उन्हें सच्चे अर्थों में श्रद्धांजलि दे सकते हैं.

श्वेता सिंह,  
क्षे. का., हावड़ा



का  
टूँ  
न  
की  
ना



## कॉर्पोरेट सामाजिक दायित्व की संकल्पना

कल्पना की आंखों से इतिहास को देखें, तो हम पाते हैं कि मनुष्य जैसे-जैसे बदलावों को स्वीकारता गया वैसे-वैसे विकसित होता गया. उसके व्यवहार, आचरण और क्रिया-कलापों ने उसे सामाजिक बना दिया. अर्थात्, एक दूसरे के काम में परस्पर सहयोग से अपनी आवश्यकताओं को पूरा करना व आगे बढ़ते रहना.

मनुष्य के सामाजिक होने की क्रमिक अवस्थाओं में वस्तु विनिमय (बार्टर सिस्टम) समाज की सभ्यता का संकेत था. यह पुरातन प्रथा भारत के ग्रामीण अंचलों में आज भी बदस्तूर प्रचलन में है. अपनी आवश्यकता की वस्तु पाने के लिए सामने वाले को उसकी आवश्यकता की वस्तु से आदान-प्रदान करना ही इसकी विशेषता है. कभी-कभी ऐसे अवसर भी आते हैं, जब कुछ जरूरतमंदों के पास देने लायक कुछ नहीं होता पर चूँकि वे समाज के अंग हैं तो उनकी सहायता के लिए भी समाज के हाथ बढ़ते हैं, चाहे दान के रूप में या परोपकार के रूप में या सौगात के रूप में अथवा उधारी के रूप में, सामाजिक उत्थान के चलते अब हमारे देश के समाज की बनावट ही ऐसी हो गई है, जिसमें जरूरतमंदों को मदद की परंपरा पुरातन से विद्यमान है. शासकों, प्रशासकों ने भी लोक कल्याणकारी कार्यों में धन लगाकर ऐसे काम किए, जो आज भी याद किए जाते हैं.

जिस तेजी से दुनिया बदली है, लोक कल्याण के सहयोग का नजरिया व साधन भी बदले हैं. समाज के जरूरतमंद लोगों के सहयोग हेतु कई संस्थाएं (एनजीओ) जुटी हुई हैं. बैंक भी ऐसी पहल में पीछे नहीं रहे. राष्ट्रीयकरण व अग्रणी बैंक योजना के बाद से बैंक ग्रामीण क्षेत्रों में जनोपयोगी सुविधाएं उपलब्ध कराने हेतु ग्रामीण प्रचार के तहत कार्य कर रहे हैं, इसमें यूनियन बैंक ने अपना अप्रतिम योगदान दिया है, जो समय-समय पर उपलब्ध आंकड़ों से स्पष्ट है. यहां तक कि वर्ष 2006 में यूनियन बैंक सोशल फाउंडेशन ट्रस्ट स्थापित कर इसके माध्यम से देश भर में कई तरह से मदद की है. आकस्मिक प्राकृतिक आपदाओं के समय भी ट्रस्ट की ओर से समयानुकूल मदद पहुंचाई गई है. ये कारोबारी उपलब्धियां नहीं बल्कि सामाजिक दायित्व निभाने की और समाज के जरूरतमंद लोगों के उत्थान में सहयोग देने की बैंक की कल्याणकारी पहल है.



हमारा देश आज भी कई कठिन चुनौतियों का सामना करने में विविध तरीकों से जुटा है. फिर भी देश में गरीबी, अशिक्षा, अपर्याप्त स्वास्थ्य सुविधाएं, आर्थिक तंगी के कारण बच्चों द्वारा स्कूल छोड़ देना, समाज के कई तबकों के लिए जीवन की मूलभूत जरूरतों का अभाव व बेरोजगारी के कारण समाज में बढ़ते अपराध जैसी तमाम चुनौतियां हैं. यही वजह है कि जनता का एक बड़ा भाग देश के विकास की मुख्यधारा से नहीं जुड़ पाता. यहां तक कि कई मायनों में समाज से अलग-थलग सा पड़ जाता है. ऐसे वर्ग को मदद के हाथों की जरूरत है. ऐसी ही अवधारणा के उद्देश्य से सरकार ने कॉर्पोरेट संस्थाओं से यह अपील की थी कि वे स्वेच्छा से ऐसे वर्ग की मदद के लिए आगे आए. फलस्वरूप, यह परोपकारी कार्य अब विभिन्न सामाजिक संस्थाओं, ट्रस्टों के माध्यम किया जाने लगा है. ऐसी सामाजिक चुनौतियों का सामना मिलकर आसानी से किया जा सकता है.

वर्ष 2009 से सरकार ने यह नई अवधारणा प्रारम्भ की. कॉर्पोरेट सामाजिक दायित्व (Corporate Social Responsibility), जिसके तहत बैंक केंद्रीय स्तर पर गठित समिति के अनुमोदन के तहत स्तरीय सामाजिक सुविधाओं हेतु दान व सहयोग स्वरूप निधि उपलब्ध कराता है. यह मंच समाज को उन्नत बनाने की दिशा में अहम भूमिका निभा रहा है, इसमें वे सभी क्षेत्र, चाहे शासकीय संचालित संस्थान हों या एनजीओ, ट्रस्ट, सोसायटी/समाज द्वारा संचालित हों, सीएसआर, जरूरत, मांग और धन के अंतिम सदुपयोग की गुणवत्ता सुनिश्चित कर आर्थिक सहयोग करता है. 'यूनियन बैंक सोशल फाउंडेशन ट्रस्ट' हमारे बैंक की संस्था है, जिसके माध्यम से CSR के दायित्व क्रियान्वित किए जाते हैं.

निःसंदेह बैंक एक सेवा उद्योग व लाभ के उद्देश्य से कारोबार में जुटा है पर यह भी सच है कि प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से हमारा मुख्य उद्देश्य समाज के हर वर्ग को सहयोग देना है तथा समाज व देश के विकास में भागीदार बनना है, चाहे वह ग्राहकों को उत्कृष्ट ग्राहक सेवा प्रदान करना हो या समाज के सहयोग के लिए सच्चे मन से मदद के प्रयास, हमारा यही विजन बैंक के कारोबार विकास के साथ समाज में अच्छी गुडविल स्थापित करने में समर्थ होगा.

रामगोपाल सागर  
रा.भा.का.प्र, के. का., मुंबई



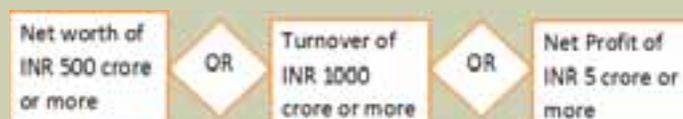


# WHAT HOW & WHY

The term “CSR” is used continually, many complementary and overlapping concepts, such as corporate citizenship, business ethics, stakeholder management and sustainability, have emerged. These extensive ranges of synonymously used terms indicate that multiple definitions have been devised for CSR, mostly from different perspectives and by those in facilitating roles such as the corporate sector, government agencies, academics and the public sector. As defined by the European Union (EU) in the business and social context the CSR is the concept that an enterprise is accountable for its impact on all relevant stakeholders. It is the continuing commitment by business to behave fairly and responsibly and contribute to economic development while improving the quality of life of the workforce and their families as well as of the local community and society at large. CSR not only includes the activities that a company undertakes in order to utilize their profit to enable social and environmental development, but also includes the methods that a company employs in order to earn these profits including socially responsible investments and transparency to various stakeholders among others.

**Evolution in India:** India has a long tradition of paternalistic philanthropy. The process, though acclaimed recently, has been followed since ancient times albeit informally. Philosopher such as Kautilya from India and pre-Christian era philosophers in the West preached and promoted ethical principles while doing business. The industrial families of the 19th century had a strong inclination towards charity and social considerations. During this period the industrial families also established temples, schools, higher education institutions and other infrastructure for public use. The last decade of the twentieth century witnessed a shift in focus from charity and traditional philanthropy toward more direct engagement of business in mainstream development and concern for disadvantaged groups in the society.

**For whom it is applicable:** The companies on whom the provision of CSR shall be applicable are contained in Sub Section 1 of Section 135 of the Companies Act, 2013. The pictorial representation below gives the representation of Section 135 (1):



The above provision requires every company having such prescribed Net worth or Turnover or Net Profit shall be covered within the ambit of CSR provisions. The section has used the word “companies” which connotes a wider meaning and shall include the foreign companies having branch or project offices in India.

**Relevance of CSR within an organisation:** Undertaking CSR initiatives and being socially responsible can have a host of benefits for companies such as the following:

- ❖ Strengthening relationships with stakeholders.
- ❖ Enabling continuous improvement and encouraging innovation.
- ❖ Attracting the best industry talent as a social responsible company.
- ❖ Additional motivation to employees.
- ❖ Risk mitigation because of an effective corporate governance framework.
- ❖ Enhanced ability to manage stakeholder expectations.

**Conclusion:** Companies have in their own ways been contributing to the foundation of CSR in India. They have with their desired methods of intervention, been addressing national concerns such as livelihood promotion, community development, and environment, making health services more accessible, creating inclusive markets and so on. However, the efforts are not coordinated and a strategic national policy framework with the involvement of all stakeholders may ensure that the efforts made by companies, individuals, organizations and the government are synchronized to create a snowball effect. Therefore it benefits more people, utilizes resources more effectively, minimizes duplication and creates more value and achieves development goals. Currently the stance of CSR in India is headed in a positive direction as there already exist a multitude of enabling organizations and regulatory bodies such as DPE, MCA and IICA that have already set the wheels in motion and are playing important role in making CSR a widespread practice and ensuring success in reducing inequalities without risking business growth.

**MANISH KUMAR**  
R. O., Chandigarh





# Beyond the Head Quarters

Businesses have unique opportunities to give back to communities in a way that amplifies the intentions of their employees and company mission. 10 corporate houses who have gone beyond their head quarters to do the best of the CSR in the world are:

- **Toms** : 'One for one' motto is a well known phrase. They've recently upped the ante by donating a portion of their sunglass sales to vision care for children in need. But it's not just consumers that are involved in Toms' social good, it's employees as well. Toms' employees participate in an annual Shoe Drop where they travel and donate a variety of goods to children. Their career-page specifically calls for employees that want to change lives and be a part of a movement.
- **LinkedIn**: One Friday each month LinkedIn's employees participate 'InDay.' InDay's purpose is to give back to the community through employee volunteerism and resources. Each InDay has a different theme allowing diverse departments to come together for a common cause. InDay activities range from guest speakers discussing global justice, to initiating global learning programs, and volunteering in local communities.
- **PG & E**: It takes part to serve the communities of California. On Earth Day employees help clean and restore 18 state parks. They are exemplary members of Habitat for Humanity and volunteer by providing solar panels on new Habitat homes. Employee volunteerism hits inside the home as well by participating in various food programs providing those struggling to make ends meet with care packages and thousands of pounds of groceries. The employees clearly care about their Coast.
- **Zappos**: It is a company creating a social impact with a shoebox.

Zappos is known for a company culture that focuses on the well being of their employees and they are on a mission to make the world a better place, for everyone. They also donate huge amounts of Zappos goods to tons of charitable organizations. Their employees are paid for time off if they are volunteering, because Zappos knows 9 to 5 isn't the only work that matters.

- **General Electric**: Their employees volunteer over 1 million hours per year. Donations from the GE Foundation have supported senior centers, children with autism, literacy programs and neglected urban spaces among many other programs. On Global Community Days, GE coordinates company-wide to address urgent projects around the world. GE knows that a helping hand started in your backyard extends across the world.
- **Cisco**: Their initiatives cover every aspect of daily life. Global projects provide education, healthcare, economic empowerment, and disaster relief to areas in need. Cisco employee's log more than 160,000 volunteer hours around the world in a year. Teams of Cisco employees '**Civic Councils**' get involved in their local communities by organizing events and donation projects. Cisco asks their employees to be a part of the equation 'You + Networks = Impact Multiplied'
- **Deloitte**: Their employees have both the opportunity to lead and attend conferences that provide training on volunteerism and non-profit organization. Deloitte has a keen awareness that training employees on skills based volunteer programs and running functional non-profit programs have the ability to have long term effects rather than simply taking an employee volunteer trip.
- **Verizon**: Verizon is proud to support the generosity of their employees. The Verizon Matching

Gifts program matches employee financial donations 1:1 to qualified organizations. The spirit of giving doesn't stop there. They also encourage employees to volunteer. If employees log more than 50 hours with an organization, they can apply for a \$750 grant awarded to the organization from Verizon.

- **Dell**: It supports over 4,615 charities around the world. Dell Youth Connect provides technology and educational facilities in 11 countries. The Dell Social Innovation Challenge provides funding and mentorship to college students to further projects that help solve social problems. Dell's Disaster Relief Program provides holistic assistance to communities affected by natural disaster around the world. Dell's employees are a social good force to be reckoned with.
- **IBM**: It believes in Corporate Citizenship. Their social good projects extend across societal issues. Employees volunteer in environmental efforts, community economic development, education, health, literacy, language and culture. Their year long volunteer initiative, 'Celebration of Service,' logged over 3,00,000 hours of service. IBM has also established 'On Demand Community,' enabling employees and retirees to find volunteer opportunities through trainings and placement.

*Corporate social responsibility is one of the ways that you can show a job candidate what it is like to work at your company. Candidates want to know they work for a company whose values are aligned with their own values. These 10 companies are proof that corporate social responsibility isn't just a buzz word but an activity that every responsible corporate house should undergo.*



**Debashis Chatterjee**  
R.O., Kottayam



# Uni One Diary Cherishing Memories

Desmond Tutu said, "Do your little bit of good where you are, it is those little bits of good put together that overwhelm the world."

I have been very fortunate to do my bit for an organization which has always been a home for us in these last 2 years. Union Bank is an organization that truly believes in - "Achche Log, Achcha Bank!"

My association with Uni-One began at its inception stage itself. This unique concept is the brainchild of Mrs. Namrata Tiwari, a lady with great vision and an empathetic approach. Her constant efforts and zeal have energized the entire Uni-One family and within a short span of time, we have been able to make our mark.

We have visited 'Old Homes' where the 'silver people' taught us the golden mantras to live life. We were a part of 'Nanhi-Kali', an adoption centre exclusively for girl child. We have conducted many craft melas, the proceeds of which have gone to charity.

As I now take leave this organization due to retirement, these memories will always warm my heart and will forever enrich my life.

**Ela Gaba**  
C.O., Mumbai



# परहित सरिस धर्म

नहिं भाई..

**परहित सरिस धर्म नहिं भाई  
परपीड़ा सम नहिं अधमाई॥**

गोस्वामी तुलसी दास जी द्वारा रचित प्रसिद्ध ग्रंथ 'श्री रामचरितमानस' की चौपाई का अंश 'गागर में सागर' की तरह है. 'परहित' का अर्थ परोपकार से है. जहाँ एक ओर परोपकार को मनुष्य का सबसे बड़ा धर्म बताया गया है, वहीं दूसरों को कष्ट पहुंचाने के समान कोई दूसरा पाप भी नहीं माना गया है. परोपकार ही वह गुण है जिसके कारण कई महापुरुषों ने दुनिया के सामने ऐसे उदाहरण प्रस्तुत किए कि वे अमर हो गए. 'सुकरात' ने विष के प्याले का वरण किया लेकिन मानवता को सच्चा ज्ञान देने के मार्ग का त्याग नहीं किया. 'परोपकार' वह महान गुण है जो मानव को इस सृष्टि के अन्य जीवों से उसे अलग करता है और श्रेष्ठता प्रदान करता है. इस गुण के अभाव में मानव तथा पशु में अंतर समाप्त हो जाता है.

धर्म तथा परोपकार की भावना को समाहित कर जन कल्याण के कार्यों में कर्तव्य के निर्वहन हेतु उपरोक्त उद्धृत पंक्तियां बेहद प्रेरणादायक प्रतीत होती हैं. आज के परिवेश में जहां दुनिया भौतिकवाद की तरफ प्रवृत्त होती जा रही है, मानव कल्याण हेतु किए जा रहे प्रयास जनमानस के लिए सकारात्मक भावनाओं को बल प्रदान करने वाले हैं. एक तरफ वैश्वीकरण के पश्चात् जहां पूरी दुनिया एक-दूसरे के नजदीक होती जा रही है, वहीं औद्योगिक विकास के कारण पर्यावरण तथा वनों पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ रहा है. परिणामस्वरूप इसका खामियाजा भी हम लोगों को ही भुगतना पड़ रहा है.

इन सबके बावजूद भी सभी धर्मों में मानव कल्याण तथा परोपकार की महत्ता को प्राथमिकता प्रदान की गई है. मानव सेवा अर्थात् 'सर्वभूत हितेतरता' को सभी धर्मों में आवश्यक माना गया है. दरिद्रनारायण तक की अवधारणा भी उद्धृत हुई है, जिसके अंतर्गत गरीब तथा लाचार मानव के भीतर नारायण की परिकल्पना को चरितार्थ माना गया. भूखे को भोजन कराना, वस्त्रहीनों को वस्त्र देना, बीमार लोगों की देख-भाल करना, भटकों को सही मार्ग दिखाना आदि धर्म का पालन करना है, क्योंकि धर्म वह शाश्वत तत्व है जो सर्व कल्याणकारी है. ईश्वर ने यह प्रकृति स्वयं रची है, जिसमें अनेक चेतन और जड़ जीव परहित के काम में लगे रहते हैं.

**संत विटप सरिता गिरि धरनी;  
परहित हेतु सबन्ह कै करनी॥**

**वृक्ष कबहुं नहिं फल भखै, नदी न संचै नीर.  
परमारथ के कारने, साधुन धरा शरीर.**

संत जन भी लोक-मंगल के लिए कार्य करते हैं. नदियां लोक कल्याण के लिए ही अपने जल को समर्पित कर देती हैं तो वृक्ष दूसरों के लिए ही अपनी छाया तथा फल देते हैं. बादल वसुन्धरा पर जनहित में पानी बरसाते हैं. इसी प्रकार सत्पुरुष स्वभाव से ही परहित के लिए कटिबद्ध रहते हैं. इसके विपरीत परपीड़ा अर्थात् दूसरों को कष्ट पहुंचाने से बढ़कर कोई नीचता का काम नहीं है. परहित निःस्वार्थ होना चाहिए. जहां स्वार्थ का भाव आ गया, वहां परहित रहता ही नहीं.

यदि किसी की भलाई का प्रतिदान ले लिया जाए तो वह भलाई नहीं, एक प्रकार का व्यापार हो जाता है. परहित तो वह है, जिसमें दधीचि मुनि देवताओं की रक्षा के लिए अपनी अस्थियां तक दे देते हैं. अर्थात् स्वयं का बलिदान तक कर देना परहित की सीमा में होता है.

परहित में मुख्य भाव यह रहता है कि 'ईश्वर द्वारा दी गई मेरी यह शक्ति और सामर्थ्य किसी की भलाई के काम आ सके'. मानस में अन्यत्र यह प्रसंग आता है जिसमें गोस्वामी जी ने उद्धृत किया है:

**परहित बस जिन्ह के मन माहीं;  
तिन्ह कहूँ जग दुर्लभ कछु नाहीं॥**

यह बात स्वयं भगवान राम ने अंतिम सांस लेते हुए जटायु से बहुत स्नेह और आभार भाव से कही कि जो दूसरों का हित करने में लगे रहते हैं, उनके लिए संसार में कुछ भी दुर्लभ नहीं है. परहित करने में प्रेम, सदभाव और सहिष्णुता जैसे सभी सकारात्मक भाव समाहित हैं. यदि हमें खुशियां पानी हैं तो कहीं न कहीं हमें जरूरतमंद लोगों की मदद कर उनके आशीष पाने के पश्चात्, जो संतोष एवं खुशी प्राप्त होती है, उसका अनुभव चमत्कारिक होता है. केवल धन-दौलत पाने के लिए किए गए प्रयास केवल दुःख के कारण ही नहीं वरन् यह भौतिकता की घोर दलदल में ढकेलने का कारण बनते हैं. धन-दौलत प्राप्त करके भी व्यक्ति अपनी खुशी की चाहत को पूर्ण नहीं कर सकता. आम लोगों में यह धारणा व्याप्त है कि सुख से रहने के लिए अधिक से अधिक धन तथा पैसा होना आवश्यक है. परंतु यह भी एक अधूरा सच ही है कि धन से ही दुनिया की सारी खुशियां एवं निरोगी जीवन संभव है. दौलत और शोहरत का सच यहीं समाप्त हो जाता है कि इससे मनुष्य के अहं को संतुष्टि मिलती है. मनुष्य के जीवन की श्रेष्ठता इसी में है कि उससे जितना भी संभव हो सके वह अपनी शक्ति, सामर्थ्य, संपदा को समाज कल्याण में, जनहित में और उच्च उद्देश्यों के लिए लगाए, जिससे न केवल वह अपने जीवन का पथ प्रशस्त करे, अपितु औरों के जीवन के लिए भी प्रेरणा बन सके. अपने संसाधनों को मानव कल्याण हेतु बांटकर जरूरतमंद लोगों के कल्याण हेतु व्यय करने में परमार्थ प्राप्त होता है. राष्ट्रकवि श्री मैथिलीशरण गुप्त ने भी अपनी रचना में लिखा है कि,

**अमर्त्य वीर तुम हो, मृत्यु से न डरो कभी.  
मरो परंतु यूँ मरो कि याद भी करें सभी.  
हुई न यूँ जो मृत्यु तो, वृथा जिए, वृथा मरे.  
वही मनुष्य है जो मनुष्य के लिए मरे.**

गुप्त जी ने तो यहां तक कहा है कि यदि मानव कल्याण हेतु कोई मनुष्य अपने जीवन को नहीं लगाता तथा उसकी मृत्यु सामान्य मृत्यु हो जाती है तो वह पशु के समान है. मनुष्य तो वह है जो मनुष्य के लिए मरता है तथा मानव कल्याण हेतु अपना जीवन खपा देता है.

महान कवि, लेखक एवं रचनाकार श्री जयशंकर प्रसाद ने भी इस संबंध में अपनी प्रसिद्ध रचना **कामायनी** में लिखा है कि:-

# The KARATE KID in making!!

अपने में सबकुछ भर कैसे व्यक्ति विकास करेगा.  
यह तो एकांत स्वार्थ भीषण है, अपना नाश करेगा.  
औरो को हंसते देख मनु हंसो और सुख पाओ.  
अपने सुख को विस्तृत करके सबको सुखी बनाओ.

महाकवि ने स्पष्ट शब्दों में परमार्थ की चर्चा करते हुए मनुष्य को अपने सुख को अपने तक ही सीमित न रखते हुए इसे बांटने की बात कही है. जब मानव समुदाय हंसता दिखेगा तो सुख एवं खुशी तो स्वयं ही संचरित होने लगती है. यदि हम स्वार्थ में अंधे होकर केवल अपने बारे में या फिर अपने सुख एवं समृद्धि के बारे में सोचते रहेंगे तो इससे न केवल स्वयं का नाश करेंगे बल्कि जन-मानस के प्रतिकूल काम करेंगे.

ऐसे भी देखा जाए तो हमारा शरीर नश्वर होता है. अतः यदि यह किसी के काम आ जाए तो हमारा जीवन सार्थक हो जाता है. आज हम देखते हैं कि पूरे विश्व में अंग दान एवं शरीर दान की स्वस्थ परंपरा दिखाई दे रही है. मरने के पश्चात् मानव अंगों एवं शरीर को दान देकर किसी जरूरतमंद को नया जीवन प्रदान किए जाने का प्रयास किया जाता है. साथ ही मृत शरीर को विभिन्न चिकित्सा महाविद्यालयों को सुपुर्द कर नए चिकित्सा वैज्ञानिकों को शोध हेतु प्रदान किया जाता है, जिससे चिकित्सा विज्ञान के क्षेत्र में उनसे बेहतर परिणाम की अपेक्षा की जाती है.

ऐसे में हमारा भी कर्तव्य बनता है कि परहित के लिए अपने जीवन को समर्पित करें तथा मानव कल्याण हेतु अपने को विश्व समुदाय में शामिल कर भारतीय दर्शन, सभ्यता, संस्कृति एवं अध्यात्म के अनुरूप स्वयं को पेश करें. भारत वह देश है जहां 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की अवधारणा बलवती रही है. सचमुच हम हैं, तो जहां है और जहां है, तो हम हैं. दोनों एक-दूसरे के लिए हैं तथा एक-दूसरे से हैं.

तुषार गांगुली  
क्षे. का., पटना



## बड़े लोग!

क्या उम्र से ही इंसान हो जाता है बड़ा ? बड़ा बनाती हैं गलतियाँ,  
या बड़ा बना देता है देश ? बड़ा बनाती है सोच,  
या बड़ा बना देते हैं माँ-बाप ? बड़ा बनाती है नीयत,  
या बड़ा बना देती है पढाई ? बड़ा बनाते हैं कर्म,  
या बड़ा बना देती है नौकरी ? बड़ा बनाता है व्यवहार  
आखिर क्या है, और यही है असली प्रक्रिया  
जो बड़ा बना देता है इंसान को ? इंसान के बड़े होने की.

देवाशीष मजुमदार  
रा.भा.का.प्र, के. का., मुंबई



**Master DEVANSH**, son of Mr. Devendra Khare, Head Cashier-II/ Clerk of our M.P. Nagar Branch, Bhopal, is really the 'Karate Kid' in the making. Just a student of 5th class, Devansh participated in the Madhya Pradesh State Karate Tournament - both in the Individual as well as Team Kata categories.



Honing his skills art under the Chandrakant aspires to fetch Black Belt in On the path to master, he the more subtle techniques the kata's Though very determined to overpower the opponent on the karate mat, this little champ also loves playing with small car stones, household material and cycling too. He aspires to take up sports for physical fitness and have a good personality as well.

in this martial able coach, Shri Adalak, he the prestigious near future. from beginner wishes to unlock and dangerous hidden in movements.

Union Dhara salutes his unique aspiration and wishes him all the best in his martial art career!!





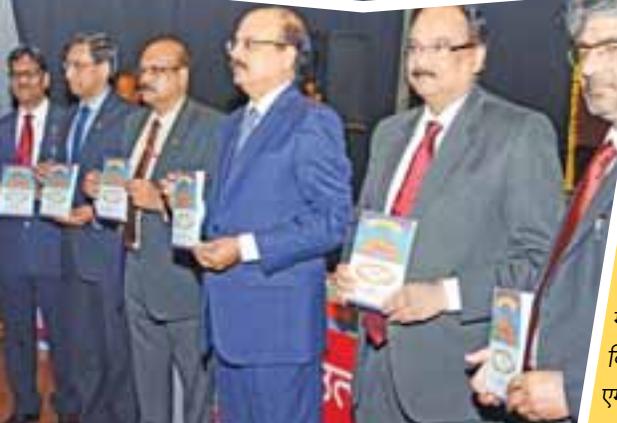


## केंद्रीय कार्यालय में हिन्दी उत्सव

राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार हेतु केंद्रीय कार्यालय में दिनांक 15 अगस्त, 2016 से 14 सितंबर, 2016 तक हिन्दी माह का आयोजन धूम-धाम से किया गया। इस दौरान राजभाषा कार्यान्वयन प्रभाग, मानव संसाधन विभाग द्वारा कुल 12 प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया, जिसमें अखिल भारतीय स्तर व विदेशी शाखाओं हेतु आयोजित ऑनलाइन प्रतियोगिताएं भी शामिल हैं। इन प्रतियोगिताओं में कुल 3612 प्रतिभागियों ने भाग लिया, जिसमें से 261 प्रतिभागियों को पुरस्कृत किया गया। हिन्दी उत्सव-2016 का मुख्य कार्यक्रम 'सांस्कृतिक कार्यक्रम एवं पुरस्कार वितरण समारोह' के रूप में दिनांक 26 सितंबर, 2016 को मुंबई के के.सी. कॉलेज में आयोजित किया गया। इस समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक महोदय श्री अरुण तिवारी एवं विशिष्ट अतिथि कार्यपालक निदेशकद्वय श्री आर.के. वर्मा एवं श्री अतुल कुमार गोयल उपस्थित रहे। बैंक के सभी उच्च कार्यपालकों के अलावा सामाजिक संस्था यूनि-वन (बैंक के उच्च कार्यपालकों की गृहणियों द्वारा चलाई जाने वाली सामाजिक संस्था) की प्रेसिडेंट, श्रीमती नम्रता तिवारी भी यूनि-वन के अन्य सदस्यों के साथ कार्यक्रम में उपस्थित थीं। इस कार्यक्रम में स्टाफ सदस्य सपरिवार उपस्थित थे।

राजभाषा कार्यान्वयन प्रभाग द्वारा ग्राहक सेवा पर आधारित कार्टून शृंखला की 8वीं पुस्तक बैंकिंग-सरल, सहज और शीघ्र तथा डिजिटल बैंकिंग विभाग व मानव संसाधन विभाग द्वारा प्रकाशित संदर्भ साहित्य क्रमशः 'डिजिपर्स' व 'सहज सेवा केंद्र' का अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक महोदय एवं कार्यपालक निदेशकों द्वारा विमोचन किया गया।

कार्यक्रम का मुख्य आकर्षण क्लब नौस्टेल्लिया द्वारा सदाबहार गीतों की प्रस्तुति रही, जिसका स्टाफ सदस्यों व उनके परिवारजनों ने भरपूर आनंद उठाया। संगीत कार्यक्रम के समापन के पश्चात् हिन्दी माह के दौरान आयोजित सभी प्रतियोगिताओं के विजेताओं तथा हिन्दी में उत्कृष्ट कार्य करने वाले स्टाफ सदस्यों को अतिथियों द्वारा पुरस्कृत किया गया। कार्यक्रम का समापन श्री केशव बैजल, उप महाप्रबंधक, एमएसएमई द्वारा सभी के प्रति धन्यवाद ज्ञापन के साथ किया गया।





# मुझे वहीं पता ?

मुझे नहीं पता ?  
 मैं कौन हूँ ?  
 मुझे नहीं पता ?  
 कहां से आया ? , कैसे आया ?  
 किसकी सत्ता ?  
 मुझे नहीं पता ?  
 जिनसे मिला, अपने लगे,  
 संग-संग उनके चलने लगे,  
 कमी लगी, प्रयास किया,  
 प्रतिफल पल-पल मिलने लगे।  
 कोई कुछ, कोई कुछ, सभी का सुना।  
 आगे भी, पीछे भी,  
 किसने वफा की,  
 किसने खत्ता।  
 मुझे नहीं पता ?  
 मैं तो बस चलता रहा,  
 लगातार, निरंतर,  
 मंजिल की ओर,  
 मंजिल है मेरी आवाम,  
 उनका गिला-शिकवा,  
 दूँढते हैं, मानवता को,  
 मानव, कल्याण की खातिर,  
 चाहे किसी की भी हो सत्ता,  
 मुझे नहीं पता ?  
 वह अकेली बैठी,  
 विलाप रही थी, चौराहे पर,  
 किसी की मदद की खातिर,  
 सबको अपनी पड़ी है,

कोई सुनने वाला नहीं,  
 रोज कोई न कोई बनती, नई निर्भया,  
 बता सब कानूनों को धत्ता।  
 क्यों ? मुझे नहीं पता ?  
 पर खड़ा होता हूँ,  
 हर चौराहे पर, सड़क पर,  
 उनके लिए, जो हैं असहाय,  
 शायद मिल जाए,  
 डूबते को तिनके का सहारा,  
 यह सोचकर  
 चाहे कोई न हो नाता  
 क्यों ? मुझे नहीं पता ?  
 अपने उत्तरदायित्व का बोध है मुझे,  
 हर जिम्मेदारी का एहसास है मुझे,  
 इसीलिए चल पड़ा हूँ,  
 अकेला, लक्ष्य की ओर,  
 जिम्मेदारी को समझने, निर्वहन करने,  
 मामला भले लगे अटपटा।  
 मुझे नहीं पता ?  
 मैं एक योद्धा की तरह,  
 लड़ता रहा हूँ, मानवता के लिए,  
 अस्मिता के लिए,  
 सामाजिक उत्तरदायित्व के लिए,  
 यह मेरा जुनून है, जज्बा है,  
 मिट जाऊं, या मिटा दूँ नफरतों को,  
 चाहे होता रहूँ कुर्बान सदा।  
 क्यों ? मुझे नहीं पता ?



एस.के. ठाकुर  
 क्षे. का., पटना



एस. के. श्रीवास्तव  
 के.का., मुम्बई



हमारी योजनाएँ

## बचत खातों में III टियर योजना

बैंक द्वारा अखिल भारतीय स्तर पर हाईनेटवर्थ एवं उच्च क्रय शक्ति वाले ग्राहकों हेतु विभिन्न निःशुल्क एवं अधिमान्य सुविधाओं के साथ बचत खातों में टियर योजना प्रारम्भ की गई है। इस योजना के अन्तर्गत चार तिमाहियों के औसत शेष के अनुसार बचत खातों का निम्नानुसार वर्गीकरण किया गया है :

क्र.सं	खाता संवर्ग	औसत शेष की सीमा
1.	नियमित बचत खाता	₹50,000/- से कम
2.	गोल्ड	₹50,000/- से लेकर ₹1.00 लाख से कम
3.	प्लेटिनम	₹1.00 लाख से लेकर ₹2.00 लाख से कम
4.	प्रिविलेज	₹2.00 लाख से अधिक

### प्रमुख बातें :

- खातों का वर्गीकरण पिछली 4 तिमाहियों में रखे गए औसत तिमाही शेष के अनुसार त्रैमासिक आधार पर किया जाएगा।
- औसत शेष राशि की गणना 15 मार्च से 16 जून, 16 जून से 15 सितम्बर, 16 सितम्बर से 15 दिसम्बर एवं 16 दिसम्बर से मार्च की अवधि के लिए की जाएगी।

### ग्राहकों को सुविधाएं :

- प्रति वित्त वर्ष आधार पर निःशुल्क चेक बुक प्राप्त होगी।
- दैनिक आधार पर एटीएम एवं पीओएस पर डेबिट कार्ड के लिए सीमा निर्धारित।
- एनईएफटी/आरटीजीएस/डीडी/पीओ सहित निःशुल्क जावक विप्रेषण सुविधा।
- बाहरी चेकों के संग्रहण में संग्रहण प्रभार में छूट।
- ₹1 लाख की सीमा के लिए क्रेडिट कार्ड की सुविधा।
- खुदरा ऋण की स्थिति में प्रक्रिया प्रभार में छूट।
- बैंकिंग सुविधाओं को प्राप्त करने के लिए ग्राहक कतार में नहीं खड़े होंगे तथा सीधे शाखा प्रमुख/उप शाखा प्रमुख से सम्पर्क करेंगे।

स्रोत : अनुदेश परिपत्र क्रमांक 00506-2016 दिनांकित 04.07.2016 एवं अनुदेश परिपत्र क्रमांक 00565-2016 दिनांकित 22.08.2016.



# CSR - A WAY OF REVISING OUR ECONOMIC THINKING

CSR is an approach towards inclusive and sustainable growth. It's the outcome of a collective conscience and of course originates from the basic constitutional concept of the Directive Principles of States Policy towards providing and delivering economic, social and environmental benefits by all stakeholders. Thus CSR approach is beset with the core business strategy of addressing social and environmental impact of business; human rights, corporate governance, health and safety, etc. The moot question is to drive a change towards sustainability.

CSR improves public image and relationship with customers, increases the Social / Electronic and Print Media coverage, instills and enriches employee retention and productivity, attracts investors, creates a positive workplace environment. This apart, it's an effort of a company for its long term interest and Brand differentiation.

Legally speaking, CSR Policy provides broad contours within which eligible companies are required to formulate their CSR Policies (sec-135 of Companies Act, 2013). The amount spent by a company for CSR can not be claimed as a business expenditure. The Act permits companies to spend at least 2% of their average net profit in the previous three years on CSR activities. The prime thrust of the law is to generate conducive environment for enabling the corporates to conduct themselves in a socially responsible manner. The Act applies to companies- Private or Public/ Listed or unlisted- which have had a net profit of ₹5.00 crore or Net worth of ₹500 crore or more or a turnover of ₹1000 crore in any financial year.

Common Actions/Activities under CSR Include issues dealing with extreme hunger & poverty, promotion of education, gender equality & women empowerment, development of vocational skills & Social Business Projects, reducing child mortality and improving material health etc.

The CSR Committee of the company oversees its process & guidelines that includes developing CSR Strategy & operationalising the institutional mechanism, Project approval & development, impact measurement, etc. while the strategy of CSR addresses the target group, the place/geography of

its implementation. The process includes receiving directions & guidance from the Board, the requirements as enacted, Corporate Business strategy and, above all, the development priorities including profile of the beneficiaries.

CSR contributes mainly as a demographic dividend and enriches the index of human development, their quality of life and, as such, building a better sustainable life. Thus, its cardinal Principle is to contribute actively to the social & economic development of the Communities in which we operate; the absence of which may not lead to gainful employment leveraging standard of life; therefore, it is a social responsibility of all corporate citizens. Investment beyond business is a philanthropic way for the common good of a larger group of economically untouched segment. It makes and marks a difference for a company and certainly indicates the simple truth that corporates came for the people, came for their all round growth and development and therefore it is indirectly catering to even and balanced economic growth so that political and social stress are removed by paving way to tranquility of human society and quality of life.

## Expectations under CSR

The corporate should adopt villages and make them smart villages ensuring its healthcare and family welfare, development of agriculture and allied activities, education and improvement of livelihood activities and, above all, obviously infrastructure and communication activities. This will encourage people to increase creativity and increase productivity and bring in a more equitable Society. Thus, what our Indian Constitution enshrines in its preamble to ensure Justice – social, economic and political – can, in fact, be in essence among each and all irrespective of caste, creed, sex and religion. Thus with prejudice towards none and charity for all, let our corporate citizens hold their head high; this becomes an effective way of implementing the philosophy of 'Sab ka Saath, Sab ka Vikas'.



**P. C. Panigrahi**  
F. I. Dept., C.O. Mumbai.

# CSR Policy & Section 135



Ministry of Corporate affairs, Government of India has implemented Corporate Social Responsibility policy by introducing the Section 135 in the Companies Act, 2013. Corporate Social Responsibility Policy is mandatory for all those companies who come under the criteria mentioned under Sub-section 1 under Section 135 of Company Act, 2013. Corporate Social Responsibility is the way through which company achieves the balance of economic, environmental and social imperative. Corporate Social Responsibility referred as corporate initiatives assessed for the company effects/ impact on social welfare. Company's social responsibility depends on various factors such as market, area of operation, business activity, socio economic environment of the area, etc. In India earlier, CSR activity was done by very large companies only. Now Section 135 of Companies Act introduces guidelines for companies. So here we discuss on Section 135.

### Regulatory Guidelines:

Under Sec 135 of Companies Act

- a. Every company having net worth of ₹500 crore or more, or turnover of ₹1000 crore or more or profit of ₹5 crore or more during any financial year shall have to constitute a Corporate Social Responsibility Committee of the Board consisting of three or more Directors of which at least one is an independent Director.
- b. The Board reports under Sub-section(3) of Section 134 and disclose the composition of the Corporate Social Responsibility Committee.
- c. The Corporate Social Responsibility Committee shall:-
  - i) Formulate the guidelines in line with Section 135 and recommend to the Board, a Corporate Social Responsibility Policy which shall indicate the activities to be undertaken by the company as specified in Schedule VII.
  - ii) CSR Committee also recommends the amount of expenditure to be incurred on the activities.
  - iii) CSR Committee also monitors the Corporate Social Responsibility Policy of the company from time to time.

- d.
  - i) The Board of the Company after taking into account the instructions mentioned in Sub-section 1 of Sec 135 forms a Corporate Social Responsibility Committee and approves the CSR Policy for the company and discloses the contents of such policy in its report and also places it on the company's website.
  - ii) The Board of the company also ensures that the activities are included in the Corporate Social Responsibility Policy as per the Company Act.
- e. The Board of every company should ensure that the company shall spend at least 2% of the average net profits of the company made during the three immediately preceding financial years in pursuance of its Corporate Social Responsibility Policy. The company shall give preference to the local area and areas around it where it operates for spending the amount earmarked for CSR activities.

### Functions of the CSR Committee:

- The CSR Committee formulates the CSR policy.
- They recommend CSR activities to be implemented by the company.
- They set forth budget in detail how the company will implement the project and establish transparency.

### Disclosures:

If the company fails to spend such amount, the Board has to furnish its report made under Clause (O) of Sub-section 134, specifying the reasons for not spending the amount. Under Section 8 of the CSR rules, it is mandatory for a company after 1st April 2014, to furnish in its annual report a report on CSR as prescribed below

- The company CSR policy
- Proposed programs to be undertaken by the company
- The composition of the CSR committee
- Average net profit of the company for the last three financial years

- CSR expenditure i.e. 2% of the average net profit of the last three financial year as per financial statements
- During calculation of net profits of the company exclude following things : Any profit arising from any overseas branch or branches of the company or any dividend received from other companies in India which are covered under and complying with the provisions of the Section 135 of the Act.
- The surplus arises out of the CSR activity will not be part of business profits of the company.

### Activities under CSR:

CSR responsibility of the company is a commitment to support or to take initiatives to improve the lives of weaker sections or underprivileged sectors. The focus areas notified under the Section 135 of the Companies Act, 2013 and companies Corporate Social Responsibility Policy Rules 2014 are as under:

1. Eradication of hunger, poverty, malnutrition, promoting healthcare and sanitation, clean drinking water.
2. Promoting education, special education, employment enhancing skills among children, women, etc.
3. Promoting gender equality, empowering women, setting up old age homes, Day Care Centers, etc.
4. Promotion of road safety, Drivers' training.
5. Training to enforcement personnel.
6. Promoting health care including preventive health care.
7. Vocational skills livelihood enhancement projects.
8. Consumer education and awareness program.
9. Conservation and renovation of school building and classrooms as promoting education.
10. Disaster relief i.e. medical aid for promoting health, food supply for eradicating hunger, poverty or malnutrition, supply of clean water, sanitation, etc. in case of any disaster.
11. Reducing child mortality and improving maternal health by providing good hospital facilities and low cost medicines.



12. Any assistance in ensuring environmental sustainability, ecological balance, protection of flora & fauna, animal welfare, agro forestry, conservation of natural resources and maintaining quality of soil air and water.
13. Employment enhancing vocational skills.
14. Protection of natural heritage, art and culture including restoration of buildings and sites of historical importance, work of art, setting up public libraries, promotion and development of traditional arts and handicrafts.
15. Contribution of funds provided to technology incubators located within academic institutions which are approved by the Central Government.
16. Rural Development Projects.
17. Slum Area Development i.e. the slum area declared by the Central Government or any State Government or any other competent authority.
18. Training to promote rural sports, nationally recognized sports, sports and Olympic.

19. Benefit given to armed forces veterans, war widows and their dependents.
20. Contribution to the Swachh Bharat Kosh.
21. Contribution to the Clean Ganga Fund.

All these activities are a few examples of CSR activities. It means that all those activities which are environment friendly, socially acceptable by the people and society come under CSR activities. The contribution towards C.M. Relief Fund shall also a part of CSR activities but the amount is on or above 2% of net profit. However, the Company CSR Committee may identify areas other than the ones stated above. Company has to give preference to the local area and areas around, where it operates for spending the amount under CSR activity.

The company can meet the CSR obligations by implementing activities on its own or through a third party, such as a Society, Trust, Charitable Foundations, etc. as per purposes defined under Company Act.

**Prabhat Singh Suman**  
Staff Training College, Bengaluru.

B	(20)	C	(19)	C	(18)	B	(17)	D	(16)	B	(15)	A	(14)	D	(13)	C	(12)	B	(11)
A	(10)	D	(9)	C	(8)	B	(7)	A	(6)	D	(5)	C	(4)	B	(3)	A	(2)	A	(1)

**Answers: Banking Quiz (Pg. 58-59)**

# कॉर्पोरेट जगत की समाजोन्मुखता

## समय की मांग

एक आभारी भगवत्प्रेमी समाज से सभ्य कॉर्पोरेट जगत पैदा होता है, जो अपने उद्भव के समय शपथ लेता है कि समाज के सारे संसाधनों का औचित्यपूर्ण इस्तेमाल करके वह आगे बढ़ेगा व सामाजिक दायित्व का निर्वहन करेगा और संसाधनों का विस्तार करेगा। कॉर्पोरेट जगत जब सब संसाधनों को लेकर आगे बढ़ता है तो लाभ कमाने में लीन हो जाता है। शायद वह अपने मूल उद्देश्य से भटक जाता है और जन्मदाता समाज की अवमानना करता है। इससे होता यह है, कि न रहेगा बांस न बजेगी बांसुरी। कॉर्पोरेट जगत जब नफा कमाने में लीन होकर हीन हो जाता है, तब पंचभूतों से उद्भूत समाज का क्षय हो जाता है। समाज कलुषित हो जाए तो कॉर्पोरेट जगत को संसाधन कौन उपलब्ध कराएगा? किसी भी कीमत पर नफा कमाने का लक्ष्य कॉर्पोरेट जगत के पतन को अनिवार्य बनाता है, अल्प आयुष बनाता है, बीमार बनाता है तथा एक बीमार कॉर्पोरेट, एक समृद्ध समाज को विकृत तथा कलुषित करता है।

यह सच है कि कॉर्पोरेट लाभप्रदता समाज को और समृद्ध बनाती है, परंतु कितने दिनों तक यह रहने वाली है! **टॉप लाइन** और **बाटम लाइन** की मोहमाया कॉर्पोरेट जगत के भटक जाने और वादा भूल जाने में सक्रिय योगदान करती है। किसी भी मोहमाया से बचने के लिए आत्मचिंतन की आवश्यकता होती है। अतः यह आत्मचिंतन समय की मांग है, हम हमेशा के लिए मित जाएं या फिर चिरस्थायी बनें, जिएं और सबको जीने दें। यही आत्मचिंतन-मंथन कॉर्पोरेट जगत को सही मार्गदर्शन कराता है। इस संसार में पंच महाभूतों से पैदा होने वाले संसाधन हैं: **जमीन, श्रम, पूंजी और साहस**।

### 1. जमीन {Land}

जमीन कॉर्पोरेट जगत का पहला संसाधन है, यह समाज का अंग है तथा कॉर्पोरेट जगत को ट्रस्टी (Trustee) के रूप में मिली है कि-फूलो, फलो लेकिन हिफाजत करो। गलत इस्तेमाल मत करो। कॉर्पोरेट जगत के विस्तार के लिए जमीन चाहिए, क्रमशः ज्यादा जमीन चाहिए। परंतु कॉर्पोरेट जगत इसका सही मूल्यांकन करे। जमीन के सही मूल्य का भुगतान करे। जमीन अधिग्रहण के लिए उसका मूल्यांकन लागत के हिसाब से करे। भूमि अधिग्रहण के मामले में सही मालिक को सही मूल्य कॉर्पोरेट जगत की पहली जिम्मेदारी है। जमीन आवश्यकता के हिसाब से प्राप्त की जानी चाहिए, लालच के लिए नहीं। जमीन एक दुर्लभ संसाधन है, अतः उसका सही और उचित (optimum) उपयोग कॉर्पोरेट जगत की पहली जिम्मेदारी है। साथ ही जमीन की उत्पादकता, उर्वरता तथा उपयोगिता की हिफाजत करना कॉर्पोरेट की जिम्मेदारी है। अतः ऐसा कुछ न करें जिससे मिट्टी का क्षय हो, वनस्पति एवं जीव-जंतुओं का नाश हो, परिवेश व पर्यावरण का नुकसान हो। सबसे महत्वपूर्ण है कि किसान को लालच दिखाकर या भय दिखाकर उसके अनाज उपजाने वाले खेत पर कब्जा न किया जाए। कोई कॉर्पोरेट समुदाय ऐसी प्राथमिक कृषि की कीमत पर जिंदा नहीं रह सकता है, जिससे कॉर्पोरेट क्षेत्र को कच्चा माल मिलता है। जमीन का रख-रखाव और सही कीमत कच्चे माल की निरंतर आपूर्ति में सहायक होता है। जमीन के अंतर्गत संविदा खेती भी एक

हिस्सा है। कॉर्पोरेट जगत अपने कच्चे माल की आपूर्ति बरकरार रखने के लिए ऐसी कुछ अनैतिक प्रथाएं न अपनाए, जिससे खेतिहर नागरिक को नुकसान पहुँचे। संविदा की सभी शर्तें बाजार स्थितियों के हिसाब से निर्धारित की जाएं। फिर कूड़ा निष्कासन भी एक बहुत बड़ी जिम्मेदारी है, कि कॉर्पोरेट जगत के कचड़े से समाज प्रदूषित न हो। कॉर्पोरेट जगत का कचरा जमीन को प्रदूषित/कलुषित करता है, समाज के पंच महाभूतों का अपमान करता है। ओजोन (ozone) की परत को घटाने वाले माल, प्लास्टिक, कम्प्यूटर उपकरणों, आटोमोबाइल्स-जमीन समेत सारे पंच महाभूतों से बने वातावरण को कलुषित करता है। कॉर्पोरेट जगत की यह जिम्मेदारी है कि वह कार्बन के उत्सर्जन को नियंत्रित करे तथा जमीन, मिट्टी, हवा, पानी तथा आसमान को बचाए।

### 2. श्रम {Labour}

कॉर्पोरेट जगत की दूसरी पूंजी श्रम है, जो व्यक्ति भी है तथा समूह भी है। पहली जिम्मेदारी तो यह है कि जिसकी जमीन इस्तेमाल की गई है, उसके सभी कुशल, अर्धकुशल तथा अकुशल व्यक्तियों को वरीयता के आधार पर तैनात किया जाए। इससे कॉर्पोरेट जगत का दोहरा फायदा होगा। श्रम बल का अपनी जमीन और मातृभूमि से भावनात्मक जुड़ाव होता है, जिसकी परिणति निरंतर उच्च उत्पादकता के रूप में होती है। संतुलित व समर्पित श्रम एक अनोखी संपदा है जो निरंतरता व उत्पादकता में सुधार लाकर अल्पावधि लाभ व दीर्घावधि मूल्य में इजाफा करती है। श्रम सक्रिय, सजीव, भावुक तथा सामाजिक पूंजी है। इसलिए कॉर्पोरेट जगत को इस अनोखी पूंजी के कल्याण व विकास के लिए सदैव नीतिगत कदम उठाने चाहिए। कॉर्पोरेट जगत में टाटा ग्रुप को एक जानी मानी महान हस्ती माना जाता है। कॉर्पोरेट सामाजिक दायित्व कोई इनसे सीखे। इनका नारा है:-

**हम हमारे श्रम बल की हिफाजत करते हैं। इनके लिए मकान, अस्पताल, मंदिर बनाते हैं, इनके बच्चों के लिए स्कूल, कॉलेज बनाते हैं। इनको प्रबंधकीय निर्णयों में हिस्सेदार बनाते हैं। इनके मनोरंजन के लिए समुदाय केंद्र व सांस्कृतिक मंच बनाए हैं एवं हम लोग मजबूत लोहा-इस्पात भी बनाते हैं।**

यह सिर्फ वाक्य नहीं है। टाटा ग्रुप ने सचमुच यह सब कर दिखाया है और वे कॉर्पोरेट जगत के लिए मिसाल बना चुके हैं। कॉर्पोरेट जगत को यह मालूम होना चाहिए कि श्रम बल उत्पादन घटक की जड़ होता है तथा इनपुट को वांछित व बहुमूल्य आउटपुट में बदलने के लिए समर्पित व प्रोत्साहित श्रमिक बल की सख्त जरूरत है। इसलिए कॉर्पोरेट जगत की यह जिम्मेदारी है कि लाभ का समुचित हिस्सा श्रमिकों के वेतन व परिलब्धियों में स्पष्ट रूप से दिखाई दे। कॉर्पोरेट जगत को यह महसूस होना चाहिए कि समर्पित व प्रोत्साहित श्रमिक बल उनको नए शिखर पर खड़ा कर सकता है।

### 3. पूंजी {Capital}

कॉर्पोरेट जगत की पूंजी चाहे इक्विटी (equity) के रूप में हो या ऋण (debt) के रूप में, समाज की ही पूंजी होती है। समाज समृद्ध हो तो पूंजी की कमी कभी महसूस नहीं होगी। भारत जैसे प्रगतिशील देश में आर्थिक पूंजी की कमी हमेशा

खलती है। आर्थिक पूंजी को हासिल करने के लिए कितने उद्यमी अपने समस्त प्रयासों के बावजूद निराश होते हैं व उनका सपना टूट जाता है। पर्याप्त आर्थिक पूंजी, निरंतर विकास की जड़ है तथा होश व हौसला बढ़ाने में सतत मदद करती है। सारे सपने एक तरफ, आर्थिक पूंजी दूसरी तरफ। समाज के पास यह विडम्बना है कि खान है लेकिन सोना नहीं है – सोना है लेकिन खान नहीं है। इस विडम्बना को नजर में रखते हुए कॉर्पोरेट जगत को यह प्रतिज्ञा करनी है कि हम जो भी कदम उठाएंगे-सोच समझकर उठाएंगे, ताकि आर्थिक पूंजी की निरंतर बढ़ोत्तरी हो। पहले तो पर्याप्त लाभ का एक हिस्सा कारोबार में पुनः लगाया जाना तथा प्रबंधन गुणवत्ता को और बेहतर बनाया जाना बेहतर होगा। बाजार में छवि तैयार करना, समाज को कुछ देना तथा ऐसा कोई अवांछित कदम न उठाना भी कॉर्पोरेट जिम्मेदारी है, जिससे पूंजी का नुकसान हो सकता है। कॉर्पोरेट जगत समाज का ट्रस्टी है। सामाजिक सपनों का अभिरक्षक है। आर्थिक पूंजी सारे सपनों को साकार करती है, समृद्ध करती है। अतः कॉर्पोरेट जानबूझ कर या अनजाने में ऐसा कुछ न करे जिससे पूंजी की हानि हो। यह प्रतिज्ञा है-वचन है।

संसार के जाने-माने कॉर्पोरेट लीडर वारेन बफेट (Warren Buffet) जो एक जमाने में संसार के सबसे अमीर व्यक्ति थे, का सुझाव है कि कॉर्पोरेट जगत कितने भी शिखर पर जाएं परंतु उसे समाज का आभारी होना चाहिए। उनका कहना है:-

“मैं सारे जगत के हित के लिए ब्रती हूँ। मेरा कोई ऐशो-आराम, ठाठ से भरा जीवन नहीं है। मैं अपनी कार खुद चलाता हूँ। मेरा अपना मोबाइल सेट नहीं है। शाम को मैं कॉर्पोरेट पार्टियों में न जाकर, घर में बैठकर पापकॉन खाते हुए अपना पसंदीदा सीरियल देखता हूँ। मेरा प्रतिवर्ष एक लाइन का संदेश होता है “खाओ, पिओ, मस्त रहो.....सब कुछ करो, परंतु ऐसा कुछ भूल से भी न करो, जिससे स्टोक होल्डर की पूंजी में क्षय हो।”

वारेन बफेट (Warren Buffet) के ये विचार कितने भावुक व सराहनीय हैं, कॉर्पोरेट जगत को इन पर विचार करना चाहिए।

#### 4. उद्यमिता {Enterprise}

कॉर्पोरेट जगत की सृष्टि उद्यम से ही होती है। सारे उद्यमियों के पास तीसरी आंख एवं छठी इन्द्रिय होती है। यह गुण सौ साल आगे का सपना देखने में सक्षम होता है। ये लोग समाज के अंग हैं। समाज में पैदा हुए हैं, लेकिन आम नागरिक से हट कर हैं, इनके पास एक दायरे से बाहर सोचने की क्षमता है, नवोन्मेषित सृजनात्मकता, साहसिक कार्य करने की भावना, जोखिम उठाने की क्षमता तथा संकट प्रबंधन दृष्टिकोण सदैव बरकरार रहता है। लेकिन सही परवरिश के अभाव में ये धीरे-धीरे कम हो रहे हैं। उदाहरण के लिए अगर सारे लोग आम नागरिक बनकर नौकरी ढूँढने लगेंगे तो सपना कौन देखेगा? खतरों से कौन खेलेगा? कॉर्पोरेट जगत को कौन साराहेगा व संभालेगा?

अतः कॉर्पोरेट जगत की यह जिम्मेदारी बनती है कि उद्यमी भावना वाली नई पीढ़ी तैयार करे। शोध एवं विकास एवं उद्यमिता विकास परियोजना जैसे अभिनव उद्यम करे, जिससे कॉर्पोरेट जगत को नेतृत्व संकट का सामना न करना पड़े। उद्यम तथा उद्यम कौशल जब तक संरक्षित एवं बरकरार रहेगा, तब तक कॉर्पोरेट जगत शान से सिर उठाकर बोल सकता है कि

“चुनौतियां आ सकती हैं, चुनौतियां जा सकती हैं, परंतु कॉर्पोरेट जगत हमेशा चलता रहेगा।”

अब सवाल यह उठता है कि क्या उद्यम के बिना कॉर्पोरेट जगत की स्थिति संभव है। इसका शायद एक ही जवाब होगा कि “अभी नहीं, तो कभी नहीं तथा आगे भी कभी नहीं”

अगर उक्त जवाब विश्वव्यापी है तो कॉर्पोरेट जगत को सामाजिक अनुकूलन पर विशेष ध्यान देना चाहिए। गरीबी, बेरोजगारी, बुनियादी सुविधाओं की कमी, प्राथमिक शिक्षा तथा स्वास्थ्य रक्षा में कमी समाज को खोखला बना देते हैं। शायद एक आने वाला सक्रिय उद्यमी जन्म लेने से पहले ही मर जाता है। इसलिए उद्यमिता भावना को जिन्दा रखने के लिए एक स्वस्थ सामाजिक व्यवस्था को बरकरार रखना पड़ेगा, जिसमें कॉर्पोरेट जगत प्रमुख भूमिका निभा सकता है। सरकार की योजनाओं के तहत सरकार व निजी उद्यमों की भागीदारी (Public, Private partnership) परियोजनाओं में सक्रिय योगदान देकर वित्तीय साक्षरता, वित्तीय समावेशन, प्राथमिक शिक्षा, स्वास्थ्य देखभाल, बिजली, सड़क और पानी को उपलब्ध कराने के लिए आगे आएँ। यह सब कार्यक्रम को तुरंत नफा के दृष्टिकोण से न सोच के आगामी पूंजी निवेश (Future investment) के रूप में सोचें।

कॉर्पोरेट जगत अपने को सामाजिक मंगल के विशाल उद्यान का माली समझे। असली माली का काम है कि न केवल उद्यान का पका हुआ फल तोड़े, बल्कि आने वाले दिनों के लिए चुनिंदा फल-फूल, पेड़ पौधों का संरक्षण करे। उनको पर्याप्त हवा, पानी, खाद, रोशनी व जीने का मकसद सिखाए। उद्यम एक ऐसे पेड़ का बीज है, जिसको सही वातावरण की जरूरत है। सही वातावरण में शरीर व आत्मा दोनों के लिए आहार उपलब्ध होगा। यह प्रयास pump pricing principle पर आधारित एक लोटा भर पानी से सही समय पर बाल्टी भर निकालने का प्रयास है।

जैसा कि पहले भी वर्णन किया गया है कि समाज एवं सामाजिक व्यवस्था पंच महाभूतों से बनी है। कॉर्पोरेट जगत इस समाज पर निर्भर है और उसे हमेशा इसका आभारी होना चाहिए। इनके उत्पादक घटक जमीन, श्रम, पूंजी तथा उद्यम समाज से ही प्राप्त होते हैं। अतः कॉर्पोरेट नागरिक समाज का संरक्षण करें। पंच महाभूतों को प्रणाम कर मिट्टी, हवा, पानी, रोशनी, आकाश का सम्मान करें। उनको पर्यावरण प्रदूषण से बचाएँ। एक अस्वस्थ पर्यावरण से कॉर्पोरेट जगत को अबाधित रूप से कच्चा माल- जमीन, श्रम, पूंजी तथा उद्यमिता की भावना मुहैया नहीं होगी।

हे कॉर्पोरेट जगत! आपकी अंतिम रेखा (Bottomline) में अब एक पी का स्थान निम्न तीन पी ने ले लिया है।

Planet – जग  
People – जन  
Profit – धन

अगर कॉर्पोरेट जगत की समाजोन्मुखता बढ़ जाएगी, तो सचमुच कितनी सुन्दर व कल्याणकारी होगी यह अंतिम (लाभ) रेखा-जीवन रेखा!

Bottomline is really lifeline!!!

P. K. Mohanty  
Staff Training Centre, Bhopal



# “यूनियन बैंक का सामाजिक सरोकार”

(यूनियन बैंक सोशल फ़ाउंडेशन)

सी.एस.आर. यानि कॉर्पोरेट सामाजिक दायित्व, अर्थात् एक ऐसा पुण्य कर्म जिसका ध्येय मानव मात्र की सेवा है. अगर हम इतिहास के पन्नों को टटोलें, तो पाएंगे कि हमारे पूर्वजों ने इस कर्म को पुण्य व धर्म से जोड़कर सामाजिक परंपरा का स्वरूप प्रदान किया था. इसी परंपरा का निर्वाह करते हुए आधुनिक युग में वाणिज्यिक संस्थानों, कंपनियों आदि ने अपने इस दायित्व को बखूबी निभाया है तथा समाज के निर्धन और जरूरतमंद तबके की हर संभव मदद की है. हमारी भारत सरकार ने भी इन प्रयासों को संवैधानिक स्वरूप प्रदान कर प्रभावी बनाने के लिए वर्ष 2013 में कंपनी अधिनियम में संशोधन करते हुए निर्धारित मानदंडों को पूरा करने वाली संस्थाओं/कंपनियों के द्वारा अपने लाभ के कुछ हिस्से को सामाजिक दायित्व के कार्यों में लगाना अनिवार्य कर दिया है.



सी.एस.आर. विजन:-

यूनियन बैंक शुरुआत से ही अपने कॉर्पोरेट सामाजिक दायित्वों को निभाने में अग्रणी रहा है. इस पुण्य दायित्व को निभाने की प्रक्रिया हमारे बैंक की स्थापना वर्ष 1919 से ही प्रारम्भ हो गई थी तथा उसी समय से यह हमारे बैंक की बुनियादी पहचान बनी हुई है. महात्मा गांधी के स्वदेशी आंदोलन से प्रभावित होकर ही हमारे बैंक की स्थापना कुछ स्वदेशी तथा उच्च प्रभाव वाले लोगों ने की थी तथा इसी प्रक्रिया के फलस्वरूप हमारे केन्द्रीय कार्यालय का उद्घाटन भी सन् 1921 में आदरणीय महात्मा गांधी जी के कर कमलों से हुआ था. गांधी जी के सामाजिक विकास के विचारों का अनुकरण करते हुए हमारा बैंक अभी तक निःस्वार्थ सेवा-भाव से सामाजिक दायित्वों को निभाने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम उठाता चला जा रहा है.

यूनियन बैंक में सी.एस.आर. का विकास :-

हालांकि कंपनी अधिनियम के दायरे में भले बैंकिंग क्षेत्र नहीं आते, परंतु जहां तक हमारे बैंक का प्रश्न है, स्वतःस्फूर्त भाव से हमारा बैंक काफी पहले से ही सामाजिक दायित्वों को निभाता आ रहा है. सामाजिक दायित्वों की प्रतिपूर्ति शुरुआत से ही हमारे बैंक का अभिन्न अंग रही है. बैंक शुरुआत से ही समाज पर व्यापक एवं स्थायी प्रभाव डालने के लिए अपने सामाजिक क्रियाकलापों से सामाजिक, पर्यावरणिक एवं आर्थिक क्रियाकलापों में महत्वपूर्ण भागीदारी करता रहा है.

अपने सुदृढ़ निश्चय तथा सिद्धान्त “giving back to the society” के द्वारा यूनियन बैंक शुरुआत से ही सामाजिक उत्थान की दिशा में सहयोग कर रहा है. हमारे कॉर्पोरेट सेक्टर में सी.एस.आर. की धारणा आने के काफी समय पहले से ही हमारे बैंक ने अपने सामाजिक सरोकार को समर्पित भाव से आगे बढ़ाने के लिए 2 मार्च, 2006 में यूनियन बैंक सोशल फ़ाउंडेशन ट्रस्ट का पंजीकरण कराकर इस दिशा में अपने कदम पहले ही बढ़ा दिए थे. इस ट्रस्ट/फ़ाउंडेशन का मुख्य उद्देश्य सामाजिक आर्थिक विकास के कार्यों को प्रभावी रूप से क्रियान्वित करते हुए सहायता प्रदान करना है.



तब से यह फ़ाउंडेशन वर्ष दर वर्ष इस मद में किए जाने वाले कार्यों में बढ़ोत्तरी के साथ अपने दायित्वों का निर्वाह कर रहा है. पहले इस फ़ाउंडेशन का संचालन केन्द्रीय कार्यालय से होता था, परंतु 2013 से इस कार्यालय ने प्रभावी ढंग से बेंगलूर में कार्य करना प्रारम्भ किया. अभी वर्तमान में इस फ़ाउंडेशन का पंजीकृत कार्यालय बेंगलूर में ही है तथा प्रशासनिक कार्यालय केन्द्रीय कार्यालय, मुंबई से संचालित किया जाता है.

#### यूनियन बैंक सोशल फ़ाउंडेशन का द्विआयामी दृष्टिकोण :-

इस प्रक्रिया को प्रभावी ढंग से आगे बढ़ाने के लिए फ़ाउंडेशन ने द्विआयामी दृष्टिकोण को अपनाया है. इसका प्रथम आधार सामाजिक कल्याणकारी तथा परोपकारी गतिविधियों में लगे सोसाइटीस/ट्रस्ट्स के साथ सहभागिता करना है तथा द्वितीय आधार बैंक की ग्रामीण शाखाओं के सहयोग से प्रत्यक्ष रूप से ग्रामीण विकास गतिविधियों का आयोजन करना है.

निचले तबके और पिछड़े वर्ग के सामाजिक उत्थान एवं ग्रामीण क्षेत्र के विकास को लक्ष्य बनाकर हमारा बैंक/फ़ाउंडेशन निम्नांकित गतिविधियों को मुख्यतः निम्नलिखित क्षेत्रों में सहयोग प्रदान करता रहा है-

कल्याणकारी गतिविधियां	ग्रामीण विकास गतिविधियां
1 सामुदायिक कल्याण	1 ग्रामीण विद्यालयों में मूलभूत सुविधाएं
2 स्वास्थ्य कल्याण	2 ग्रामीण विकास एवं सामाजिक-कल्याण
3 कौशल विकास	3 ग्रामीण क्षेत्रों में बालिका शिक्षा एवं महिला सशक्तिकरण
4 शिक्षा एवं व्यावसायिक प्रशिक्षण	4 पर्यावरण संरक्षण (सोलर लाइटिंग, हैंडपम्प, वृक्षारोपण आदि)
5 मानसिक तथा शारीरिक विकलांग कल्याण	

#### कुछ महत्वपूर्ण आंकड़े :-

##### 1) बजट :-

क्र.	वर्ष	कुल स्वीकृत राशि (करोड़ रु. में)	कुल वितरित राशि (करोड़ रु. में)
1	2013-14	6.36	3.31
2	2014-15	17.80	10.15
3	2015-16	9.08	5.76
4	2016-17 (नवम्बर 2016 तक)	2.25	3.27
	<b>कुल योग</b>	<b>35.49</b>	<b>22.49</b>

##### 2) विभिन्न गतिविधियों में उपर्युक्त राशि का ब्यौरा (सन् 2013 से नवंबर 2016 तक) :-

क्र.	गतिविधि	कुल स्वीकृत राशि (करोड़ रु. में)	कुल वितरित राशि (करोड़ रु. में)
1	मानसिक तथा शारीरिक विकलांग कल्याण	6.27	5.33
2	ग्रामीण विकास	4.44	2.82
3	स्वास्थ्य कल्याण	5.91	3.83
4	बालिका शिक्षा एवं महिला सशक्तिकरण	4.23	3.57
5	सामुदायिक कल्याण	2.12	1.91
6	शिक्षा तथा विद्यालयों में मूलभूत सुविधाएं	4.12	1.61
7	पर्यावरण संरक्षण	0.32	0.27
8	कौशल विकास	2.45	2.17
9	स्वच्छता	5.63	0.98
	<b>कुल योग</b>	<b>35.49</b>	<b>22.49</b>

उपर्युक्त आंकड़े स्वतः ही इस बात के साक्षी हैं कि हमारा बैंक प्रत्येक क्षेत्र में हर संभव सहायता करने के लिए अपने इस फ़ाउंडेशन के माध्यम से पूर्णतः प्रतिबद्ध है तथा इस दिशा में निरंतर प्रयास जारी है.

विश्वास पाठक  
यूबीएसएफ, बेंगलूर







**सी.एस.आर. से  
संबंधित बैंक  
के प्रयास**





# 'मेहनत कभी बेकार नहीं जाती'

असोसिएशन द्वारा वर्ष 2007-08 के लिए पहली बार "बेस्ट बुलियन डीलिंग बैंक" का सम्मान मिला, वह मेरे लिए सबसे अधिक गौरवान्वित अनुभव रहा.

जिंदगी भर बैंकिंग सीखी है तो रिटायर होने के बाद भी बैंकिंग ही करेंगे - ये शब्द हैं हमारे पूर्व महाप्रबंधक श्री एस के सिंह के. जिन्होंने वाराणसी कैंट शाखा से 10 दिसंबर, 1981 से सहायक प्रबंधक के पद से अपने बैंकिंग कैरियर की शुरुआत की थी. अब 31 जुलाई, 2016 को वे महाप्रबंधक के सम्माननीय पद से सेवा निवृत्त हुए हैं. बैंकिंग क्षेत्र में मैनुअल से डिजिटल परिवर्तन के साक्षी श्री सिंह ने अपना बैंकिंग जीवन पूरे परिश्रम, सीख, कर्मठता व कुशल नेतृत्व के साथ जिया. अपना कार्य आनंद व जोश के साथ किया. उनसे लिए गए साक्षात्कार के कुछ अंश प्रस्तुत हैं:

## 1. कृपया अपने बचपन, शिक्षा और पारिवारिक पृष्ठभूमि के बारे में हमें कुछ बताएं ?

मेरे पिताजी वरिष्ठ सरकारी वकील थे और उनका भी स्थानांतरण होता रहता था, जिसके चलते मेरा अधिकांश बचपन पूर्वी उत्तर प्रदेश में- जौनपुर, बलिया, वाराणसी जैसे जिलों में बीता. बाद में मैंने वाराणसी के प्रतिष्ठित उदय प्रताप डिग्री कॉलेज से स्नातक किया. मेरी पृष्ठभूमि मध्यमवर्गीय सर्विस क्लास परिवार की रही है.

## 2. बैंक में आपका पहला दिन कैसा रहा ?

मैं बैंक में अपने पहले दिन को बहुत ही अच्छा मानता हूँ. मैंने वाराणसी कैंट शाखा से बैंकिंग कैरियर की शुरुआत की थी जहाँ बौद्ध प्रवासियों के चलते अधिकतर बिजनेस फॉरेक्स का ही था. मुझे ज्वाइनिंग के पहले ही दिन फॉरेक्स इंचार्ज बनाया गया. उन दिनों वाराणसी में टूरिस्ट बहुत आते थे. यह मेरे लिए एकदम नया अनुभव था, नए-नए लोगों से मिलने का मौका. उस वक्त संचार के इतने साधन नहीं थे, मुझे उन आने वाले टूरिस्टों से अलग-अलग देशों के बारे में काफी कुछ जानने का अवसर मिला.

## 3. आपने अब तक जिन कार्यालयों/शाखाओं में काम किया है, उनमें से सबसे अच्छा किसे मानते हो और आपके कैरियर का सबसे यादगार अनुभव क्या रहा ?

मैं अपने लिए सबसे अच्छा कार्यकाल, झवेरी बाजार शाखा, मुंबई और वाराणसी छावनी शाखा को मानता हूँ. वाराणसी छावनी शाखा से ही मुझे बैंक के अंदर पहचान मिली और झवेरी बाजार शाखा से कॉर्पोरेट लेवल पर पहचान मिली. मैं फिर यही कहूँगा कि झवेरी बाजार शाखा और भदोही शाखा में पोस्टिंग मेरे लिए यादगार अनुभव रहे हैं.

## 4. आपका सबसे अधिक चुनौतीपूर्ण कार्यदायित्व कौन-सा रहा, जिस पर आप गौरवान्वित महसूस करते हैं ?

झवेरी बाजार शाखा ही सबसे बड़ी चुनौती भरी रही. मेरे जाने से पहले शाखा 3-4 सालों से मंदी में थी. मैंने जाने के बाद वहाँ कई तरह के नए प्रयोग किए. डोमेस्टिक गोल्ड लोन की पहल की और इससे बिजनेस बढ़ाने में बड़ी मदद मिली. उस वक्त बॉम्बे के जितने भी बड़े ज्वेलर्स थे, उन सबके खाते यूनिजन बैंक ऑफ इंडिया में आ गए थे. मैं, दूसरी बड़ी चुनौती भदोही शाखा की एज ए मर्चेंट डीलर की पोस्टिंग को मानता हूँ. उस वक्त संचार के इतने साधन नहीं थे, टेलीफोन भी नहीं था, टेलेक्स से सूचना भेजनी पड़ती थी. आज सोचता हूँ तो हंसी आती है कि कैसे इस काम के लिए टेलेक्स वाले आदमी से मधुर संबंध बनाकर उसे दिन-भर बिठाए रखते थे, ताकि जानकारी समय से भेजी जा सके. झवेरी बाजार शाखा में रहते हुए जब हमारे बैंक को बॉम्बे बुलियन

## 5. आपकी रुचियां क्या हैं ?

'पढ़ना'. अच्छे व नए विषयों की जानकारी हेतु अध्ययन शुरू से ही मेरी रुचियों के केंद्र में रहा है. वैसे घूमना और हमेशा कुछ नया जानने की कोशिश करना मुझे अच्छा लगता है.

## 6. वर्तमान में बैंकिंग उद्योग की स्थिति को आप किस तरह देखते हैं व बैंक के भविष्य के बारे में आप क्या सोचते हैं ?

आज की स्थिति संक्रमण की स्थिति है. न सब कुछ डिजिटल है और न सब कुछ मैनुअल है. लेकिन बैंकिंग उद्योग का भविष्य बहुत उज्ज्वल है. डिजिटलाइज होने के कई फायदे हैं-एक ओर जहाँ पारदर्शिता आ जाएगी, वहीं दूसरी ओर बैंकिंग की पहुँच और कार्यकुशलता भी बढ़ जाएगी. शुरु से ही बैंक के जो भी टॉप मैनेजमेंट के लोग रहे हैं, उन्होंने बड़े ही सतर्क, सजग व दूरदर्शी तरीके से बैंक को आगे बढ़ाया है और आज भी जिस तरह से नवीनतम तकनीकी विधाएँ बैंक में आई हैं, जो हमारे बैंक को दूसरे बैंकों से अलग करेंगी और दूसरी महत्वपूर्ण बात है हमारा अपना डिजिटल प्लेटफॉर्म, इसके कारण हमारा महत्व बढ़ेगा, क्योंकि हम अपनी डिजिटल सेवाओं में भी दूसरों से बहुत अच्छे हैं.

## 7. आप यूनिनाइटेड्स, विशेषकर नई पीढ़ी (जनरेशन) को क्या संदेश देना चाहेंगे ?

नई पीढ़ी से सिर्फ यही कहना चाहूँगा कि वे स्वयं में विश्वास करें और जो भी करें वो पूरी निष्ठा से करें क्योंकि मेहनत कभी बेकार नहीं जाती. इसका फल स्वयमेव समय के साथ मिलता रहता है. चाहे किसी भी रूप में हो, अच्छा फल अवश्य मिलता है. अतः अपने लक्ष्य खुद निर्धारित करें और उसके बाद पूरे जी-जान से उन्हें पूरा करने में जुट जाएं.

## 8. आपके पसंदीदा व्यक्तित्व कौन हैं, अपने कैरियर के दौरान आप किसे अपना पथ प्रदर्शक मानते हैं ?

मेरे दादाजी श्री लक्ष्मीराम सिंह मेरे पसंदीदा व्यक्तित्व रहे हैं. उन्होंने पहले रेलवे में नोकरी की. रिटायर होने के बाद उन्होंने तीन स्कूल शुरू किए और अंत तक सक्रिय रहे. मुझे उनसे यही सीख मिली कि जीवन में हमेशा सक्रिय रहना और समाज के लिए कुछ करते रहना चाहिए. मेरे पथ प्रदर्शक मेरे अनुभवी सीनियर हैं, जिनसे मुश्किल समय में मुझे उनसे काफी मदद मिली है. हर एक सीनियर से हमेशा कुछ नया सीखने को मिला. अपना पथ प्रदर्शक किसी एक को नहीं कहा जा सकता. मेरे अनुभवी जूनियर जो मुझे समय-समय पर सलाह देते रहे, उन्होंने भी मेरे पथप्रदर्शन को काम किया. अक्सर मुश्किल समय में मुझे उनसे काफी मदद मिली है. हर एक सीनियर से हमेशा कुछ नया सीखने को मिला.

## 9. आप सेवानिवृत्ति के बाद क्या करना चाहते हैं ?

सेवा निवृत्ति के बाद भी बैंकिंग और वित्तीय क्षेत्रों से जुड़ा रहूँगा और खाली समय में समाज सेवा करूँगा. (मुस्कुराते हुए) भाई! जिंदगी भर बैंकिंग सीखी है, तो रिटायर होने के बाद भी बैंकिंग ही करेंगे. रिटायर होने के बाद किसी न किसी रूप में बैंकिंग क्षेत्र से जुड़े रहेंगे.

धन्यवाद

मनोज कुमार  
क्ष.का., अहमदाबाद





## एक चमत्कार

करीब पांच हजार साल पहले इस पेड़ की पहचान 'सहजन' या मनुगा के नाम से हिमालय की तराई में हुई थी। जब अंग्रेज यहाँ आए तो वे इसे ढोलक बजने की लाठी यानि drumstick के नाम से जानने लगे एवं लंदन के tropical flora and fauna research centre ने अपने अनुसंधान में जो पाया है, वह वास्तव में आश्चर्यजनक परंतु विश्वसनीय है, जिसका ज्ञान साधारण जनता तो दूर, पढ़े-लिखे ज्ञानी लोगों को भी नहीं है।



शोध में पाया गया है कि इसमें विटामिन 'सी' -संतरे से सात गुना, विटामिन 'ए' गाजर से चार गुना, 'कैल्शियम' दूध से चार गुना, पोटेशियम- केले से तीन गुना और प्रोटीन दही की तुलना में तीन गुना है। अर्थात् सहजन के सेवन से इन सभी विटामिनों से भरपूर संतुलित आहार प्राप्त हो सकता है। वैसे यह एक आजमाया हुआ तथ्य है कि गर्मी की शुरुआत में वसंत ऋतु के प्रादुर्भाव से इस देश में जब pox यानि चेचक रोग फैलने लगता है, सहजन का सेवन इसे रोकने में पूर्णतया सक्षम है फिर भी अगर कोई इस रोग का शिकार होता है तो उसका प्रकोप यानि intensity कम होती है। कुपोषण, अनिमिया (खून की कमी) के खिलाफ जंग में सर्वसुलभ और हर जगह पैदा होने वाला सहजन का महत्व हम समझ नहीं पाए हैं, तभी तो जलाशय के किनारे, गावों की बाहरी सीमाओं में या एकाध खेत में उगने वाला सहजन शहरों के बाजार में एक महंगी सब्जी के रूप में जाना जाता है। आयुर्वेद ने सहजन की जिन खूबियों को पहचाना था, आधुनिक युग में वे साबित हो चुकी हैं। दुर्भाग्य से आम आदमी इसके अमृत समान गुणों से अनजान है। देश के अपेक्षाकृत प्रगतिशील दक्षिणी भारत के राज्यों जैसे-आंध्रप्रदेश, तेलंगाना,

तमिलनाडु और कर्नाटक में इसकी खेती होती है। साथ ही इसकी फलियों और पत्तियों का कई तरह से प्रयोग किया जाता है। देश के पूर्व एवं पूर्वोत्तर प्रांतों में न केवल इसकी कली बल्कि इसके फूल एवं पत्ते से भी सब्जी एवं व्यंजन बनाने का प्रचलन है। इसके फूल एवं पत्ते में भेषज गुणों की भरमार है। सहजन की खेती करने वाले राज्यों में लोग इसका भरपूर सेवन सांभर में करते हैं और इन प्रदेशों में सहजन एक रोग प्रतिरोधक सब्जी के साथ किसानों के लिए रोजगार का सुलभ साधन भी है।

आज हम जैविक खेती की बात करते हैं लेकिन सुलभ सहजन पेड़ का उपयोग करने में चूक जाते हैं। एक एकड़ खेत में केवल दस से बीस सहजन के पेड़ लगाकर कोई इस तथ्य को आजमा कर देख ले कि बिना किसी प्रकार की मेहनत के सहजन से प्रत्येक वर्ष एक निश्चित उपज प्राप्त होने के साथ ही साथ इस पेड़ के पत्ते गिरने की प्रक्रिया, जो सालभर चलती रहती है, खेत को कितना उर्वर बना देती है। इस पेड़ की छाया न के बराबर होती है, इसलिए खेत में लगी दूसरी फसलों को पर्याप्त मात्रा में धूप मिलती रहती है। इसकी खूबियां यही खत्म नहीं होतीं। चारे के रूप में इसकी हरी या सूखी पत्तियों के प्रयोग से पशुओं के दूध में डेढ़ गुने से अधिक वृद्धि की रिपोर्ट है। सहजन के पेड़ लगाने के लिए अलग से जमीन की आवश्यकता नहीं है। खेत की मेड़ में इसे बिना खास प्रयास से लगाया जा सकता है।

इसको उगाने के दो तरीके होते हैं। By seeding यानि बीज से, दूसरा by way of Grafting (ग्राफ्टिंग). सबसे आसान तरीका सहजन की एक सीधी टहनी को जमीन में कम से कम 1 या 2 फीट गाढ़कर, इसके ऊपर वाले भाग, जो कि जमीन से कम से कम तीन या चार फीट ऊँचा हो, में एक रुमाल में गाय का गोबर एवं मिट्टी की (mould) मांड से बांध दिया जाता है। यह ध्यान रखा जाना चाहिए कि इस टहनी को नियमित रूप से पानी मिलता रहे। कुछ समय बाद ही टहनी में नई कोपलें उग जायेंगी। फिर इसमें पानी की जरूरत नहीं होती है। टहनी रूपी नया पेड़ अपने आप जमीन से पानी की व्यवस्था कर लेता है बशर्ते कि जमीन बंजर रेतीली एवं अत्यधिक शुष्क ना हो। ऐसा किसान पांच से दस साल तक प्रत्येक वर्ष बीस से तीस हजार रुपये नियमित रूप से कमा सकता है। सहजन के पेड़ से झड़े हुए फूल व इसके पत्ते जमीन को बिना प्रयास के नियमित रूप से जैविक खाद बनाने में सहायक सिद्ध होते हैं।

सहजन की पत्तियों, कलियों एवं इसके फूलों में भेषज गुणों के वैज्ञानिक अनुसन्धानों से इस बात का पता चला है कि इसमें कई रोगों के रोकथाम के गुण, दर्जनों विटामिन, एंटी आक्सीडेंट, कई दर्द निवारक एवं एमीनो एसिड मिलते हैं। आपके इर्द-गिर्द यूं ही उगने वाले सहजन में ये सभी गुण मिलते हैं। जरूरत है हमारे सम्मिलित प्रयासों से इस देश में सहजन का mass production (व्यापक उत्पादन) करने की।

ए. के. रॉय  
सेवानिवृत्त यूनिवर्सिटी

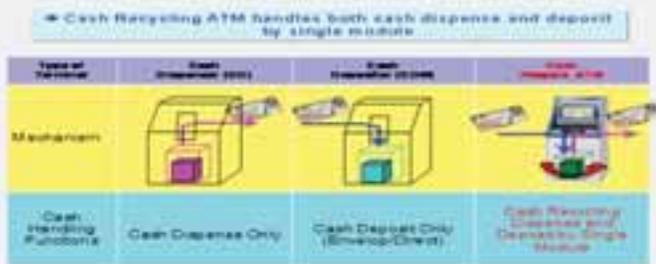
# CASH RECYCLER MACHINE (CRM)

What's New



Cash Recycler Machine is a latest technology in India with certain intrinsic benefits to the Banks and its customers. Bank gets protection from counterfeit/taped notes coming into the system and cost saving due to lesser Cash in Transit (CIT) runs. Customer gets convenience in withdrawal & deposit transaction 24X7 without the need to stand at the teller counter.

Banks are moving towards procurement of Cash Recycler Machines instead of Bunch Note Acceptor/Single Note Acceptor Machines, keeping the customer's requirement, technology upgradation and future prospects in mind.



These machines have found very good acceptance by its customers with an average of over 200+ cash deposit transactions per day at these machines. It may also be noted that the Reserve Bank of India (RBI) is providing a very cost-effective subsidy for these terminals and for the conceivable future is funding up to ₹2,50,000/- of the capital expenditure (CAPEX) of these devices. This is to encourage the use of machines for cash deposit on a 24x7 basis rather than use of costly branch infrastructure which is open for a limited amount of time.

As reported by NPCI, in Dec. 2016, the country has 2,31,277 ATMs. These ATMs dispensed close to ₹3 lac crore from the ATMs across India in the last financial year. This means the banking system along with the RBI generated these monies so that these could be dispensed via the ATMs. This cash moves through many hands, RBI, the mint, currency chests, vaults, cash in transit companies, tellers and custodians before they can reach the customer. So in addition to the cost of printing the currency, there is a large attended cost of cash handling and management of this currency. As per RBI, this figure is increasing at a staggering 12% year-on-year. To further complicate this, the country is also flooded with fake and fraudulent currency which is being introduced into the economy due to the inefficiencies in the current manual system.

The value proposition of cash recycler machines are as follows:

- Reduced cash handling costs and inefficiencies of cash handling. Since the cash deposited by the customer is machine readable, it also means it is ATM fit for dispensing. This means the cash is not required to be sorted, counted etc. (except in places where cash deposits outstrip withdrawals and the bin needs clearance).
- Capable of handling banknotes of multiple currencies with different sizes, design and security information.
- The recyclers have the capability of capturing the serial number of currency notes, which is particularly useful in case of identifying the depositor in case of fake notes or in case of any dispute. The machine also captures the fake note.
- Consistent and reliable counting of cash and detection of fraud notes. The machine if maintained properly will also not make mistakes in counting of cash notes as well as will detect the fraud currency in a consistent manner.
- A recycler is more cost effective than 2 specialized devices of dispensing and depositing especially in locations where the bank is unaware of the transaction patterns or if the amount of withdrawals matches the deposits.
- The 24x7 nature of the service would mean banks can offer after banking deposit services especially in locations where traders and business men operate their businesses beyond banking hours. These devices hence can be a source of customer acquisition – or retention of customer services.
- A new range of value-added services can be offered by the bank, which would normally be done by a teller e.g. bill payment versus cash etc. These devices can also be used for money transfer services since they can operate in a card or cardless model.

Experts view is that over the next 10 years Indian banks will convert all its ATM machines into cash recycling machines which is exactly what Japan, which is also a very cash dominated market did and having 2 lac machines currently in operation. These machines are more advantageous than ATMs, SNAs and BNAs.

The largest ATM shared network in the country, NFS (National Financial Switch) acts as a link between the acquirer and issuer for authorizing and settlement of transactions or settles the amounts between the ATM owning Bank and the Card Issuing Bank) has also announced the interoperability of cash deposit, which means, customers of a bank can deposit cash (with specific limits) in any other bank cash deposit terminals. This will further enhance the business case for banks deploying these terminals and will be able to acquire business by attracting other bank customers, gain non-interest income and fulfil short term need of cash.



**Pradeep Singh Fonia**  
D.B.D., C.O., Mumbai

# NEW LEASE OF HOPE FOR DIVYANG

Our Bank has sanctioned an amount of ₹36.90 lacs for the construction of 2.5 lac litre capacity overhead water tank for Jagadguru Rambhadracharya Handicapped University (JHRU), Chitrakoot.

This University is founded by Jagadguru Shri Swami Rambhadracharya, a Padma Vibhushan awardee and is committed to provide education, healthcare, training and employment to disabled (Divyang) children.

Chitrakoot, a part of Bundelkhand region, is deficient in water resources. Recently, Central Government has provided a tube well in the JHRU campus, whose full benefit cannot be derived without a water tank. The University was looking for support for construction of an overhead water tank.

Shri Shubham Tripathi, Asst. Manager, working in HR Department at Central Office, came to know about this University and the various activities undertaken by JHRU for

the Divyang, on his visit to his home town, Kanpur. While researching more about the University, he realised that it is a noble cause in which our Bank can also contribute. So he suggested the University name to our CSR team at Central Office. When the CSR team contacted the University they came to know about the requirement of construction of overhead water tank.

Hence the due diligence was carried out by our Regional Office, Rewa and Jankikund Branch in Rewa. Our FGM Bhopal submitted the report along with their recommendations.

This donation is going to benefit around 1500 Divyang children presently studying there and many more in future.

**Deepti Karnik**

HR Dept, C.O., Mumbai



तुम तो निर्भया हो,  
फिर भी जहन में ये भय ?  
सड़कों पर आधी रात  
अकेले निकलूँ कि नहीं,  
क्यों है ये संशय ?

गुजर गए पूरे चार साल,  
तुम तो चली गई,  
काश देख पाती  
फिर कितना हुआ बवाल !  
सड़क से संसद तक  
कितने उठे सवाल !!  
फिर चाहे जनता हो  
या हो कोई अभिनेता,  
या फिर क्यों न हो  
विपक्ष या सत्ता में बैठा हर नेता  
सबके अपने अलग खयाल !!  
ऐसा प्रतीत हो रहा था  
मानो आ गया हो कोई भूचाल !!

बदल तो दिया हमने कानून,  
सर पर जो सवार था हमारे वो जुनून !  
बदला जो लेना था  
तेरे साथ हुए अत्याचार का,  
सामूहिक बलात्कार का !

बदल देना था  
वो सारे कायदे,  
पुराने घिसे-पिटे वायदे !  
बदल भी दिया हमने  
कहा था जो तुमको  
जरा देखो तो,  
चिरनिद्रा से एक बार जागो तो  
सजा-ए-मौत मिलेगी उसको,  
जो भी अब छूणा तुमको !  
ऐसा है ये नया विधान,

## तुम तो निर्भया हो

देखो कितना मिला सम्मान !  
बनाकर ये विधान,  
बढ़ गया हम सबका मान !!

मगर अफसोस,  
आज भी महफूज नहीं है निर्भया !  
हो कोई सड़क या फिर दफ्तर,  
या फिर क्यों न हो तुम्हारा घर।  
फिर चाहे दिन हो या हो घनी रात,  
या हो चौबीस घंटे का कोई भी पहर।

आज भी मरती है निर्भया !!  
अखबारों में समाचारों में,  
रोज लहू से सनती है निर्भया !!  
कभी कुछ कह कर,  
तो कभी बस सह कर  
सड़कों से रोज गुजरती है निर्भया !!  
घर हो या दफ्तर,  
रोज मर-मर कर जीती है निर्भया !!  
जब-जब नोचा जाता है इसे,  
हर बार बहुत ही टूटती है निर्भया !!  
मगर टूट कर भी दुबारा से,  
हर उस समाज से भिड़ती है निर्भया !!  
जहाँ रोज मर-मर कर जीती है निर्भया !!

सावन सौरभ  
नोक्षेका, चेन्नै





## ग्रीन हाउस गैस उत्सर्जन

- पृथ्वी के लिए चिंतनीय

मानव जीवन का अस्तित्व पृथ्वी पर तभी तक है, जब तक पर्यावरण संतुलन बना रहेगा. पर्यावरण संतुलन के लिए वायुमंडल में ग्रीन हाउस गैस का सीमित उत्सर्जन आवश्यक है. विडम्बना है कि आज मानव ने अपने स्वार्थ एवं हितों के लिए पृथ्वी के अस्तित्व को नकार दिया है. जिसका परिणाम पर्यावरण असंतुलन, भूकंप, बाढ़, सूखे के अलावा मानवजनित रोग कैंसर, टीबी आदि के रूप में दिखाई दे रहे हैं. यह एक भारी विसंगति है. कार्बन-डाई-ऑक्साइड, मीथेन, नाइट्रस ऑक्साइड, सल्फर-डाई-ऑक्साइड आदि यदि ठीक परिमाण में हो तो ग्रीन हाउस गैसों की उपस्थिति जीवन और जलवायु की स्थिरता के लिए आवश्यक है. जब ये ग्रीन हाउस गैसों अधिक मात्रा में एकत्रित हो जाती हैं, तो पृथ्वी गर्म हो जाती है. इससे जलवायु में बदलाव आ जाता है. इन गैसों का वायुमंडल में अनुचित मात्रा में एकत्र हो जाना ही समस्या की जड़ है.

जलवायु परिवर्तन के प्रमुख कारक कार्बन-डाई-ऑक्साइड की अधिक मात्रा से गरमाती धरती, बढ़ते तापमान से दृष्टिगोचर होने लगा है. वातावरण में कार्बन-डाई-ऑक्साइड की मात्रा में निरंतर वृद्धि हो रही है. संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम की एक विज्ञप्ति के अनुसार लगभग 5.7 लाख टन कार्बन-डाई-ऑक्साइड वायुमंडल में घुलकर उसे जहरीला बना रही है.

### वातावरण में कार्बन-डाई-ऑक्साइड में वृद्धि के कई कारण हैं:

- तेल, कोयला आदि का उपयोग तथा
- वनों की अति कटाई.

आईपीपीसी की रिपोर्ट में बताया गया है कि प्रत्येक वर्ष वातावरण में 380 करोड़ टन कार्बन-डाई-ऑक्साइड गैस घुलती है. यह स्थिति तब है जबकि पेड़-पौधे और समुद्र अपनी क्षमता पर कार्बन-डाई-ऑक्साइड गैस सोख लेते हैं.

ओजोन परत को नष्ट करने वाली प्रमुख सीएफसी गैस परोक्ष रूप से ग्रीन हाउस को प्रभावीत करती है. ये गैसें स्थान, ऊंचाई तथा मौसम के अनुसार ग्रीन हाउस प्रभाव को घटाती और बढ़ाती हैं.

विश्व में बिगड़ते हुए पर्यावरण संतुलन एवं प्रदूषण के कारण पृथ्वी के तापमान में निरंतर वृद्धि हो रही है इसे ही 'ग्लोबल वार्मिंग' कहते हैं.

पृथ्वी पर जीवन को विकसित करने और इसे फलने-फूलने के लिए अनुकूल वातावरण उपलब्ध कराने का काम वायुमंडल करता है. हमारे वायुमंडल में जो ग्रीन हाउस गैसों विद्यमान हैं, वे धरती से परावर्तित सूर्य की किरणों को सोखकर पृथ्वी को गर्म रखती हैं.

### संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम के अनुसार:

"लगभग 5.7 लाख टन कार्बन-डाई-ऑक्साइड वायुमंडल में घुलकर उसे जहरीला बना रही है."

जलवायु परिवर्तन में 80 प्रतिशत योगदान कार्बन-डाई-ऑक्साइड का है. वर्तमान में ग्रीन हाउस गैसों के बढ़ जाने के कारण यह प्राकृतिक चक्र गड़बड़ा

गया है. यद्यपि समस्त पृथ्वी के वातावरण में परिवर्तन होना एक प्राकृतिक घटना है किंतु पिछले कुछ दशकों से पृथ्वी का वातावरण अत्यधिक असंतुलित है. इस परिवर्तन के लिए औद्योगीकरण, यातायात के साधनों का विकास, वन विनाश आदि जिम्मेदार हैं.

### इसी सन्दर्भ में संयुक्त राष्ट्र के महासचिव ने कहा है कि:

"जलवायु परिवर्तन प्रमुख पर्यावरणीय मुद्दा है और बड़ी चुनौती का सामना करना पड़ रहा है. इसके साथ आर्थिक, स्वास्थ्य, खाद्य उत्पादन, सुरक्षा व अन्य संकट बढ़ रहे हैं."

कृषि उत्पादकता में वृद्धि की आवश्यकता भविष्य में बढ़ती हुई जनसंख्या की पूर्ति हेतु आवश्यक होगी व कृषि स्वयं जलवायु परिवर्तन व देश के संसाधनों पर निर्भर है. जलवायु परिवर्तन के कृषि पर सकारात्मक व नकारात्मक दोनों प्रकार के प्रभाव हो सकते हैं. अंतर्राष्ट्रीय चैरिटी की नई रिपोर्ट के अनुसार पर्यावरण में बदलाव गरीबी और विकास से जुड़े हर मुद्दे पर प्रभाव डाल रहा है.

इटली में जी-आठ देशों के सम्मेलन से पहले ऑक्सफैम ने धनी देशों के नेताओं से अपील की है कि वो कार्बन उत्सर्जन में कमी करें और गरीब देशों की मदद के लिए 150 अरब डॉलर की राशि की व्यवस्था करें. ऑक्सफैम का कहना है कि जलवायु परिवर्तन के कारण एशिया, अफ्रीका और लैटिन अमरीकी देशों में गरीब लोग और गरीब होते जा रहे हैं.

### इस प्रकार जलवायु परिवर्तन के कई ऐसे कारक हैं जो कृषि को सीधे प्रभावित करते हैं:

#### औसत तापमान में वृद्धि :

औद्योगीकरण के प्रारंभ से अर्थात् 1780 से लेकर अब तक पृथ्वी के तापमान में 0.7 सेल्सियस वृद्धि हो चुकी है. कुछ पौधे ऐसे होते हैं, जिन्हें एक विशेष तापमान की आवश्यकता होती है, वायुमंडल का तापमान बढ़ने से उनके उत्पादन पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है तथा उत्पादन में भारी कमी आती है. उदाहरण के लिए आज जहां गेहूं, जौ, सरसो और आलू की खेती हो रही है, तापमान बढ़ने से इन फसलों की खेती न हो सकेगी, क्योंकि इन फसलों को ठंडक की आवश्यकता पड़ती है. इस प्रकार जलवायु परिवर्तन होने से स्थानीय जैव विविधता में परिवर्तन उनके क्षरण का कारण हो सकता है.

अतिरिक्त तापमान वृद्धि से वर्षा में कमी होती है, जिससे मिट्टी में नमी समाप्त हो जाती है. भूमि में निरंतर तापमान में कमी व वृद्धि से अपक्षय की क्रियाएं प्रारंभ हो जाती हैं. इस प्रक्रिया के द्वारा भूमि टूट-टूट कर उसके कण एक-दूसरे से अलग हो जाते हैं. इसी के साथ तापमान वृद्धि से गम्भीर सूखे की संभावना में भी वृद्धि हुई है.

#### वर्षा में परिवर्तन:

वर्षा की मात्रा का मिट्टी की नमी पर प्रभाव पड़ता है. वर्षा का कृषि पर महत्वपूर्ण रूप से प्रभाव पड़ता है. सभी पौधों को जीवित रहने के लिए कम से कम

पानी की आवश्यकता रहती है। इसी कारण वर्षा कृषि क्षेत्र के लिए महत्वपूर्ण है और इसके अंतर्गत भी नियमित रूप से हुई वर्षा का महत्व अधिक है। बहुत अधिक या बहुत कम वर्षा भी फसलों के लिए हानिकारक सिद्ध होती है। सूखा कटाव में वृद्धि करता है व फसलों को क्षति पहुंचा सकता है, जबकि अधिक वर्षा से भी हानि होती है तथा भू-क्षरण की समस्या उत्पन्न होती है। जो कि एक गंभीर चिंता का विषय है।

#### कार्बन-डाई-ऑक्साइड में वृद्धि :

कार्बन-डाई-ऑक्साइड की मात्रा बढ़ने से व तापमान में वृद्धि से पेड़-पौधों तथा कृषि पर भी इसका विपरीत प्रभाव पड़ेगा। भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद ने संभावित मौसमी बदलाव के नुकसानों को रेखांकित करते हुए बतलाया कि सूखे और आग के कारण बहुत-सी उपयोगी जातियां नष्ट हो जाएंगी तथा उनकी जगह नुकसानदेह जातियां पनपेगी।

#### जहरीली गैसों :

वर्तमान समय में वायुमंडल में सल्फर ऑक्साइड की 60 प्रतिशत की मात्रा व नाइट्रोजन ऑक्साइड की 50 प्रतिशत मात्रा उत्पन्न होती है। वातावरण की नमी के संपर्क में आने से ये गैसों गंधक, अम्ल और नाइट्रिक अम्ल बनाती हैं जो वर्षा के रूप में पृथ्वी पर गिरता है। यह प्रक्रिया अम्लीकरण कहलाती है। अम्लीय वर्षा का जल जब धरातलीय सतह पर पहुंचता है तो मिट्टी अम्लीय हो जाती है। मिट्टी के अन्दर स्थित सूक्ष्म जीव-जन्तुओं, जीवाणुओं, कवकों आदि को भी अम्ल नष्ट कर देता है। अम्लीयता के कारण धरती की ऊपरी सतह पर मिट्टी के पोषक तत्व नष्ट हो जाते हैं। इससे मिट्टी की गुणवत्ता कम हो जाती है, जिससे कृषि उत्पादन पर भी प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है।

#### ओजोन परत में कमी:

ग्रीन हाउस गैसों के उत्सर्जन का ओजोन परत पर विपरीत प्रभाव पड़ रहा है। ओजोन परत के मात्र 1 प्रतिशत से पराबैंगनी किरणों की मात्रा में 2 प्रतिशत की बढ़ोतरी होती है और उसी अनुपात में जीवन तथा खाद्य पदार्थों के उत्पादन पर प्रभाव पड़ता है।

इस प्रकार जलवायु परिवर्तन के यह कारक कृषि पर प्रत्यक्ष प्रभाव डालते हैं व अप्रत्यक्ष रूप से कृषकों की आर्थिक स्थिति, उत्पादन व उत्पादकता भी प्रभाव करते हैं।

हमारी भावी पीढ़ियों के जीवन को प्रभावित करने वाली जलवायु परिवर्तन की समस्या हम सब के लिए चुनौती है। इसका सामना प्रभावशाली ढंग से करने के लिए सरकारी, अंतर्राष्ट्रीय मंच पर यह मुद्दा उठाना होगा।

व्यक्तिगत जीवन में बिजली, पानी, ईंधन की बचत की दिशा में कदम उठाना होगा।

भारत पर्यावरण पर नियंत्रण से संबंधित योजनाओं पर सकल घरेलू उत्पाद का 2.5 प्रतिशत खर्च करता है।

जलवायु परिवर्तन किसी एक देश अथवा क्षेत्र तक सीमित नहीं है, इसलिए इनमें कमी लाने हेतु सभी स्तरों पर ठोस उपायों की जरूरत है।

वर्जिन ग्रुप के प्रमुख रिचर्ड ब्रेनसम ने हाल ही में 2.5 करोड़ डॉलर का पुरस्कार देने की घोषणा की है, जो ग्रीन हाउस गैसों के उपाय सुझा सके।

**ग्लोबल वार्मिंग एक हकीकत है,  
इसका सामना हम सब को मिल कर करना होगा।**

संतोष श्रीवास्तव  
एसटीसी भोपाल



'तुम्हें जैसे और जितना करने को कहा गया है, बस तुम जैसे और उतना ही काम करो। अपनी सलाह अपने पास रखो।' साहब ने उन्हें डांटते हुए कहा। हम सभी को कहीं-न-कहीं ऐसे सीधे और तीखे आदेशों व निर्देशों का सामना करना ही पड़ता है। ऐसे आदेश और निर्देश न केवल हमारे मनोबल को तोड़ते हैं, बल्कि आत्म-सम्मान को भी ठेस पहुंचाते हैं। इतना ही नहीं, ऐसे आदेश हमारे भीतर एक प्रकार के 'विद्रोह' और 'विरोध' को भी पैदा करते हैं। इस प्रकार का नेतृत्व करने वाले मार्गदर्शकों की निष्ठा दूसरों में कम और खुद में ज्यादा होती है। अब्राहम लिंकन ने कहा था कि यदि आप किसी आदमी का चरित्र जांचना चाहते हैं, तो उसे 'पावर' यानि अधिकार दे दें। विनम्रता किसी भी लीडर का पहला गुण होता है। रवीन्द्रनाथ टैगोर के शब्दों में 'हम महानता के नजदीक तब आते हैं, जब हम विनम्रता में श्रेष्ठ होते हैं'।

मशहूर लेखक 'डेल कारनेगी' अपनी किताब "हाउ टू विन फ्रेंड्स-एंड इन्फ्लूयेंस पीपल" में कहते हैं कि 'कोई भी व्यक्ति आदेश लेना पसंद नहीं करता'। डेल आगे कहते हैं कि 'ऐसा मत करो, वैसा मत करो, इसको मत करो, उसको मत करो' के बजाय अगर हम उनसे दोस्ताना लहजे में कुछ सवाल, जैसे कि 'ऐसा करेंगे, तो क्या होगा?' इसे और कैसे बेहतर कर सकते हैं? तुम्हारे पास और क्या सुझाव हैं? यह काम और जल्दी कैसे हो सकता है, आदि करते हैं और आदेश जारी करते हैं, तो वह आदेश सीधा आदेश न होकर एक 'रोचक आदेश' हो जाता है। इसे स्वीकारने में लोगों को किसी भी प्रकार की कोई दिक्कत नहीं होती, क्योंकि वे भी उस फैसले का एक हिस्सा होते हैं। इतना ही नहीं, लोगों से आपका सही सवाल पूछना, न सिर्फ उन्हें रचनात्मक स्तर पर प्रेरित करता है, बल्कि उनके सम्मान की रक्षा करते हुए उन्हें विद्रोही और असहयोगी होने से बचाता है। एक अच्छा और प्रभावशाली लीडर इसी कौशल का तो इस्तेमाल करता है।

योगेश मिश्र

(सेवा निवृत्त यूनियनाइट), हापुड़



# Project Utkarsh

New Regions under Project Utkarsh



Project Utkarsh was introduced in three more regions – Hyderabad, Jaipur and Lucknow - taking the total tally of Utkarsh regions to 17. The BPT team conducted comprehensive training sessions in each of these regions on the revised models for Union Xperience branch heads as well as ULP and SARAL teams.

With this, the coverage of Project Utkarsh touched ~575 branches, 29 ULPs and 16 SARALs.



## Utkarsh Olympics

Regions where Project Utkarsh has been launched compete with one another on various business parameters (like CASA, Retail Loans, MSME, business referrals, etc.). The theme for the competition this time was Olympics and 14 regions were part of the competition. Utkarsh Olympics was launched on 1st August 2016 and the regions were categorized as Pro and Amateur.

The competition was held amongst Union Xperience branches, ULPs and SARALs. A special prize category was also introduced for Best Analytics Region (among Pro 7 regions) and Best Customer Service Representatives (CSRs). The competition concluded on 30th September, 2016 and the results were as follows:

PRO 7	AMATEUR 7
Mumbai South	Mumbai North
Delhi South	Bengaluru
Kolkata	Ahmedabad
Delhi North	Baroda
Chennai	Pune
Raipur	Nagpur
Mumbai West	Kanpur

**Utkarsh Olympics: Overall winners**

Pro 7		Amateur 7	
Top region	Raipur	Top region	Nagpur
Top 3 ULP	Raipur Mumbai(W)	Top 3 ULP	Baroda Nagpur
Top 3 Saral	Raipur Kolkata	Top 3 Saral	Mumbai(N) Nagpur
Top 3 An/Ts	Mumbai South, Chennai Vadapalani, Chennai Mafra, Chennai	Top 3 An/Ts	Baroda, Mumbai(O) Tiruchirappalli, Bangalore Karnataka, Pune
Top 3 An/Ag/Ts	Mumbai South, Delhi (S) Knowledge Park, Noida, Delhi (N) Pillayaram, Chennai	Top 3 An/Ag/Ts	Mumbai(O), Mumbai(N) Jalandhar, Jalandhar Mumbai(South), Bangalore

Pro 7	Amateur 7
<p><b>Best Business Analytics Region (Excellence of Blending Loans campaign)</b></p> <p><b>RO Kolkata</b></p> <p><b>Top 3 outstanding CSRs</b></p> <ol style="list-style-type: none"> <li>Shri Dinesh Mazumdar, Droopati branch, RO Raipur</li> <li>Shri S. Binod Kippen, Sector 4 Gurgaon branch, RO Delhi (S)</li> <li>Shri Anand Yadav, Sadar Bazar branch, RO Delhi (N)</li> </ol>	<p><b>Top 3 outstanding CSRs</b></p> <ol style="list-style-type: none"> <li>Ms. Sonita Ramdas Ninkar, Puhar branch, RO Pune</li> <li>Mr. Suresh Dohar, Sarvodaya Nagar branch, RO Kanpur</li> <li>Shri Rahul Shantilal Bhogal, Sewdi Ahmednagar branch, RO Pune</li> </ol>

# Employee Engagement

While the Bank strengthens some of its core functional areas under Human Resources through various initiatives as part of Project Utkarsh, it is also important to keep the spirit and energy levels of our workforce high. And to ensure the same, a range of activities have been introduced under Employee Engagement which allow the employees to look beyond work and refresh their minds. Among these is the theme based monthly online quiz which covers diverse topics.

The quizzes are short & timed (5 minutes) and the winners are selected based on accuracy & speed. The correct answers are shared with the employees after the quiz through UBINET. A Sports Quiz was organized in the month of September for employees in Utkarsh branches & units. The quiz garnered encouraging response from the employees and was rated 4.5 on a 5-point scale. The employees expressed their desire to have such quizzes conducted on a regular basis. The event has, therefore, been made regular and will continue to be conducted every month going forward.



Apart from this, one event is conducted each month across branches and units to bring together the employees and foster bonding & team spirit. This series of events is named Urja. The first of these events was Family Day which was celebrated across all Utkarsh branches and units. Families of employees were invited to the workplace and acknowledged for their constant support and fruitful contribution in the lives of our employees which helped them work well in office. Our employees' work was also acknowledged in front of their dear ones. The event was also an opportunity for the families to mingle with and get to know one another. It also gave them a chance to see the place of work of their beloved family member. ED Shri Kathuria sent in a special message for the occasion and it was shared with the guests by the respective branch / unit heads. Different activities like drawing / painting competition for children were also organized at many branches/units. The event was celebrated with much joy and warmth and enjoyed by the employees as well as their families.



**Aparna Kutumbale**  
BPT, C.O. Mumbai





## हमारी सामाजिक जिम्मेदारियाँ

"देश हमें देता है सब कुछ, हम भी तो कुछ देना सीखें" कवि गोपाल कृष्ण कौल जी की ये प्रेरणादायक पंक्तियाँ हमें, हमारी राष्ट्रीय एवं सामाजिक जिम्मेदारियों का एहसास कराती हैं। समाज का ही वृहत् रूप राष्ट्र है, इसलिए राष्ट्र सेवा प्राथमिक स्तर पर समाज सेवा से ही शुरू होती है। हमारी राष्ट्र सेवा की कटिबद्धता दो प्रकार से है। एक-नागरिक होने के नाते और दूसरा-बैंक कर्मचारी होने के नाते। सर्वप्रथम एक नागरिक होने के नाते राष्ट्र सेवा की कटिबद्धता पर विचार करते हैं।

**स्वच्छता:** यह एक ऐसा विषय है जिस पर काफी कहा, सुना और लिखा जा चुका है, लेकिन



हमारे समाज की स्वच्छता की स्थिति में कोई व्यापक सुधार नहीं हो पाया है। हम उम्मीद करते हैं कि हमारा वातावरण स्वच्छ हो किन्तु स्वच्छता के संदर्भ में हमारी उम्मीदें दूसरों से शुरू होती हैं तथा सरकार की विवेचना पर समाप्त होती हैं। स्वच्छता के प्रति हमारी व्यक्तिगत जिम्मेदारी से हम कोसों दूर रहते हैं। हमें स्वच्छता के लिए क्या करना चाहिए, इस पर विचार करने की जगह हम दूसरों पर दोषारोपण करने पर ज्यादा विश्वास करते हैं। यदि भौतिक स्वच्छता की बात करें तो हम पाते हैं कि सरकार के द्वारा "स्वच्छ भारत अभियान" के बावजूद हमारा समाज स्वच्छता से परे है। स्वच्छता की शुरुआत हमारी सोच एवं आदत में छोटे-छोटे बदलावों से की जा सकती है, जैसे, भौतिक स्वच्छता के लिए घर के कचरे को बाहर सड़क, गली या नाले में ना फेंकना, पोलिथीन के दुरुपयोग की जगह पुनः इस्तेमाल किए जाने वाले थैले का उपयोग करना, नुक्कड़ पर गंदगी नहीं फैलाना, शौचालय में ही शौच करना इत्यादि। वातावरण की स्वच्छता के लिए जरूरी है कि कारखानों में प्रदूषण नियंत्रण के यंत्र सुनिश्चित किए जाएं। कारखानों के मालिकों की यह नैतिक एवं सामाजिक जिम्मेदारी है कि थोड़े से लाभ के लिए कारखाने के प्रदूषण से वातावरण को भारी हानि ना पहुंचाएं। प्रदूषित जल को शोधित किए बगैर नदी या नाले में प्रवाहित ना करें।

**नियम पालन:** हमारे समाज में व्यक्तिगत व्यवहार को संतुलित बनाए रखने के लिए कुछ नियम बनाए गए हैं एवं हमसे उम्मीद की जाती है कि हम उन नियमों का पालन करें, जैसे-बाईक चलाते वक्त हेलमेट का प्रयोग करना, कार चलते वक्त सीट बेल्ट का उपयोग करना, गाड़ी को नियत गति से चलाना, चलती रेलगाड़ी पर चढ़ने या उतरने की कोशिश ना करना, सड़क पर बाईं ओर चलना इत्यादि। यदि हम एवं हमारे परिवार के लोग नियमों का पालन करते हैं तो एक अच्छे समाज के निर्माण में योगदान देते हैं।

**जल एवं बिजली का सदुपयोग :** जल एवं बिजली का वितरण एवं आपूर्ति यदि हमारे घर में पर्याप्त हैं एवं बिल भरने के लिए पर्याप्त संसाधन हैं, इसका मतलब यह कतई नहीं है कि हम इनका दुरुपयोग करें। जल एवं बिजली भी हमारे समाज एवं राष्ट्र के संसाधन हैं तथा इन संसाधनों का सदुपयोग होने पर किसी जरूरतमन्द तक इसकी सुविधा पहुंचाई जा सकती है। जल एवं बिजली को बचाकर हम गाँव एवं खेतों तक पर्याप्त मात्रा में बिजली पहुंचाने में योगदान कर सकते हैं। हम जिस वातावरण में रहते हैं उसमें प्रकृति हमें बहुत सारी जीवनोपयोगी चीजें प्रदान करती है, जैसा कि कवि रहीम ने लिखा है "तरुवर फल नहीं खाता है, सरवर पियहिं न पान" इसलिए हमारा भी यह कर्तव्य है कि हम भी कुछ ऐसा करें, जिससे लोगों एवं समाज का हित हो सके।

**बच्चों को नैतिक शिक्षा :**

बच्चे समाज एवं देश के भविष्य हैं। यदि बच्चों को अच्छी नैतिक शिक्षा दी जाए तो देश एवं समाज का भविष्य सुरक्षित हाथों में हस्तांतरित होगा, यह माना जा सकता है। यह



अभिभावकों की प्राथमिक जिम्मेदारी है कि वो अपने बच्चों के रूप में समाज को ऐसा नागरिक दें, जिसे सही एवं गलत की पहचान हो। हमारे व्यवहार को बच्चे बहुत गौर से अवलोकन करते हैं इसलिए हमें सुनिश्चित करना चाहिए कि नैतिकता के संदर्भ में हमारी कथनी और करनी में कोई फर्क ना हो।

यदि एक बैंक कर्मचारी के रूप में हम, हमारी सामाजिक जिम्मेदारियों की विवेचना करें तो पाते हैं, कि हमारी काफी महत्वपूर्ण सामाजिक जिम्मेदारियाँ हैं, जो समाज में पर्याप्त आर्थिक बदलाव लाने में सक्षम हो सकते हैं।

**वित्तीय समावेशन :** देश की राजनीतिक स्वतंत्रता के 70 वें वर्ष में तथा बैंकों के राष्ट्रीयकरण के लगभग 46 वर्ष बाद भी हम यह कहने की स्थिति में नहीं हैं कि देश के हर परिवार में कम से कम एक बैंक खाता है। बैंक कर्मचारी होने के नाते यह हमारी सामाजिक जिम्मेदारी है कि हमारे कार्यक्षेत्र में कोई ऐसा परिवार ना हो जिसके

लक्ष्य निर्धारित कर योग्य नागरिक, ना हो। वित्तीय धरातल पर लाने जन धन योजना तथा कई वंचितों तक पहुंचाने का जनधन योजना की समावेशन के आधारभूत सूत्र के



बैंक खाते ना हों। फिर हम ऐसा पाएंगे कि कोई ऐसा बैंक खाते से वंचित समावेशन को के लिए सरकार ने की मुहिम चलाई को बैंक के चौखट वातावरण बनाया। सफलता को वित्तीय रूप में यदि देखा जाए तो मेरी दृष्टि से कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। बैंक के विकास एवं सामाजिक विकास एक-दूसरे के पर्याय हैं। समाज का आर्थिक विकास होगा तो बैंक भी नई आर्थिक ऊंचाई को छू पाएंगे। हम बैंक कर्मचारियों को ईश्वर का कृतज्ञ रहना चाहिए क्योंकि ईश्वर की कृपा से हम ऐसी संस्था में काम कर रहे हैं जिसका देश एवं समाज के आर्थिक

स्वतंत्रता एवं संपन्नता में काफी महत्वपूर्ण योगदान हो सकता है और इसके लिए सिर्फ हमें अपने कार्य को सामाजिक जिम्मेदारी के साथ करना होगा।

**आर्थिक विकास :** यह अक्सर कहा जाता है कि आधार मजबूत हो तो मजबूत इमारत की परिकल्पना की जा सकती है। जनधन योजना रूपी आधारशिला के सहयोग से वित्तीय समावेशन में निम्न तरिकों से हम बैंक कर्मचारी के रूप में मदद कर सकते हैं :-

1. सब्सिडी की राशि को बिना किसी लीकेज के संबंधित व्यक्ति तक पहुंचाने में सहायक होना
2. लोगों को बैंकिंग व्यवहार के प्रचलन में सहायता देना
3. नकद लेन-देन को कम कर बैंकिंग व्यवहार को बढ़ावा देना
4. आम लोगों में बचत की प्रवृत्ति को बढ़ाने में उत्प्रेरक का काम करना
5. बीमा की सुविधा को जन-जन तक पहुंचाने में सहायता करना
6. स्वरोजगार करने वाले या स्वरोजगार का प्रयास करने वालों तक बैंकिंग सुविधा एवं ऋण उत्पाद का लाभ पहुंचाना

बैंक कर्मचारी के रूप में हमारा सामाजिक दायित्व बनता है कि हम स्व-पूंजी से स्वरोजगार करने वाले एवं/अथवा स्वरोजगार का प्रयास करने वालों की पहचान करें तथा उन्हें विभिन्न ऋण उत्पादों जैसे मुद्रा योजना, स्टार्ट-अप इंडिया, स्टैंड अप इंडिया इत्यादि के द्वारा आर्थिक स्वावलंबन एवं विकास में योगदान करें। इस प्रक्रिया से रोजगार के भी नए अवसर सृजित होंगे तथा बेरोजगारी की समस्या से समाज को मुक्त करने में भी मदद मिलेगी। जैसे-जैसे स्वरोजगार करने वालों का बैंक के ऋण उत्पाद की मदद से आर्थिक विकास होगा, बैंक का कारोबार भी नई ऊंचाइयों तक पहुंच पाएगा। हमारे प्रयास के फलस्वरूप, श्रृंखला-बद्ध तरीके से इसका लाभ समाज के विभिन्न स्तरों पर दिखाई दिया जाने लगेगा।

'कवि गोपाल कृष्ण कौल' जी की निम्नलिखित पंक्तियों के द्वारा हम अपने सामाजिक जिम्मेदारियों का पुनः स्मरण करते हैं :

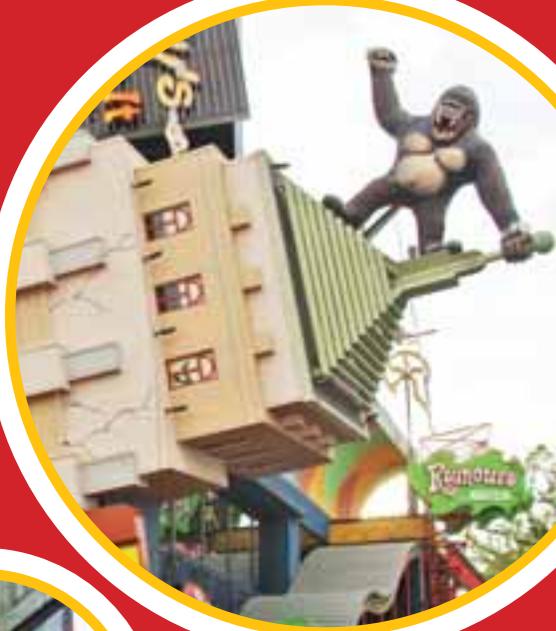
जो अनपढ़ है उसे पढ़ाएँ, जो चुप है उसे वाणी दें।  
जो पिछड़ा है उसे बढ़ाएँ, प्यासी मिट्टी को पानी दें।  
हम मेहनत के दीप जलाकर नया उजाला करना सीखें।  
देश हमें देता है सब कुछ, हम भी तो कुछ देना सीखें।

**पुष्कर कुमार सिन्हा**

स्टाफ प्रशिक्षण केंद्र, भोपाल



महोदय, हमारी कंपनी नकद नहीं देती. आप चेक लेने या सीधे खाते में जमा करना है.



# CANADA

A cool, calm, beautiful and eventful country. People are polite and well disciplined. Roads and traffic control systems are well-maintained. There is no difference between the roads of Cities and Highway so far as cleanliness and maintenance is concerned, I had opportunity to travel by car from Toronto to Quebec City which is about one thousand kms. I visited the cities of Toronto, Kingston, Montreal and Quebec. All these cities are live and people are full of passion.

Main attraction in Toronto is Down Town where so many business activities take place. So many high-rise buildings titled in the name of Banks like Scotia, BOM, TD, RBC, CIBC. The main attraction is CN Tower which was considered as the tallest Tower when it was built. Trams and Electric buses run through this market. People are also seen driving hand cart. Main Railway Station of Toronto "Union" is also located in this area from where trains for New York, Montreal and Quebec are available. Trains going to far off cities are called "VIA" trains whereas trains connecting suburbs of Toronto are called "Go



# CALLING...

Train". Metro trains are known as "Subway trains." A domestic air port in the down town is worth visiting as it is in the midst of lake.

World famous Niagra Falls was an exciting experience. Fort Henry in Kingston and Thousand islands in Lake and journey with car in a ship towards USA was a memorable one. A world famous Church and Bio-logical zoo in Montreal was worth visiting. Old and new parliament building and Rideu Canal in the peaceful-beautiful Capital City was eye catching. No fear of strict security near parliament building. People move here and there freely inside the parliament building. I enjoyed the picturesque city of Quebec. In Canada two languages i.e. English and French are spoken and written by the people. Apart from Canadians, people from India, China and Africa live a happy life in this country.

**Hemant Kumar Bhatt**  
Rtd. Unionite



# CSR and Brand Value



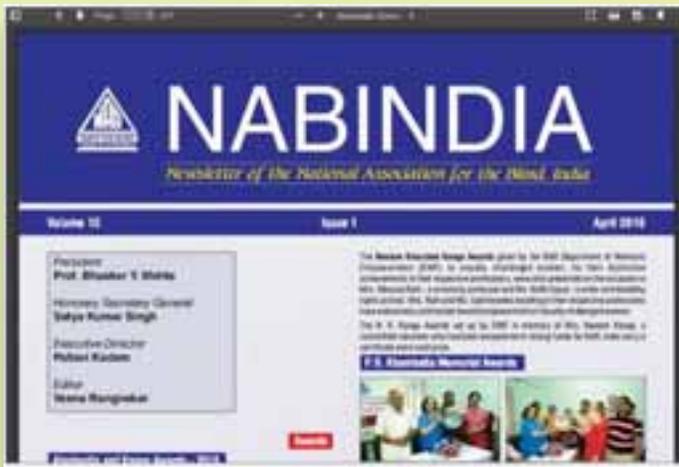
I vividly remember, long back there used to be an advertisement in the national television which used to depict the various welfare measures like free healthcare services, education for poor children, sports promotion activities, sanitation and water supply etc for the general public being undertaken by a company and in the end, there used to be a line -- We also make steel--which portrayed about what the company is actually in the business of. That ad and the way the business line was promoted are still afresh in my mind. Maybe that was the era when the word CSR- i.e Corporate Social Responsibility had not been coined the way it has been today but that reflected how much a business unit is sensitive to the basic concerns of a society and the contribution they make for the fulfillment of the issues.

Corporate Social Responsibility as we all know today is the moral and social responsibility that every business unit has to and should bear by way of various measures which directly or indirectly promote the welfare of the society. In fact, every business unit for its business set up and growth garners the required resources from the society itself, be it human resource or the infrastructure resource. Even though the business unit in economic terms may be paying for the resources it has garnered and used but that is not sufficient. A company might have paid the salary and emoluments to the employees for the work they have done but an employee who has put in his entire life, his entire youth from the time he joined the company to the time he has superannuated and left the job, needs something more than the monetary compensation he had been given for all the years of his job. Although the company cannot reverse or pay back the life gone by but the company surely can create an environment in the society wherein the people who had given their blood and sweat for the growth of the company as well as the public in large, to live a healthy and happy life. Same is the case with the infrastructural resources that the company might have used for its business operation and for which it might have paid in monetary terms but still something more has to be done. The resources one business unit has utilized need to be compensated by creation of another set of resources so that the balance is maintained. A company may practice CSR just by adopting the measures like keeping the smoke emanating from its chimneys ash and chemical free, discharging waste water which does not pollute the water resources, does not throw hazardous or environment polluting wastes in open and without treatment, does not use non-biodegradable products etc etc.

**CSR and the Brand image:-** Although as per the government guidelines, companies have to spend certain portion of their profits towards the social welfare measures as part of CSR but for a company it is much more in store than mere compliance of the statutory requirement. A company promoting CSR activities certainly enjoys a good image in the society on one hand and while on the other hand, the society by itself is the main consumer of the company's products. For any company to be successful, its image plays a major role and with its good image amidst its consumers, the company surely is benefitted. However at the same time, for any company to be successful for the long time and gain & retain market share, besides its image it has also to ensure that its products suit to the customers' requirements and satisfaction which in market parlance is known as Branding. Branding is the promise in itself about the Value for money, completeness and trust that a customer looks and pays for while buying a product. Thus a company with good brand value when gets the coating of good image by way of CSR activities certainly enjoys the edge which gets deep rooted in the hearts of consumers. We may think of a grandpa who because of his sweet nature and noble approach towards people has been admired a lot among his family and society. Since he has already got the admiration for his good persona, he may think of not doing something extra for the society and enjoys the time at his disposal but if the same grandpa starts adding his contribution to make life of many other people in the society happier, arranges healthcare camps, takes free educational classes for poor children, provides guidance to the needy and alike, what impact will it make to his personality in particular and the society in general? Certainly the image he already enjoys gets coated with the beauty of his added gracefulness while the society bears the fruits of his efforts.



We see many such examples in our neighborhood and society every day. The awesome growth of a famous ayurvedic company is well known to all of us. The company which started



its business just a few years ago but with the initiatives of yoga and home made products spread healthcare awareness throughout the country, has been riding high on the brand value and with the help of high branding, been making huge turnover nearing 5000 crores. So many IT, Healthcare, automobile, textile, pharma etc. companies have been contributing towards social welfare measures as part of CSR initiatives.

How can we forget our own beloved organization, Union Bank of India which through its CSR arm, Union Bank of India Social Foundation has been taking, besides its normal banking operations, several initiatives for social cause. Among its various such initiatives, one initiative that has been applauded widely is the installation of Talking ATMs for Blinds throughout the country for which the Bank has been applauded profusely by National Association for Blinds. Not only this, the Bank has also been adjudged as the Best employer for Blinds by NAB. The sentiment of being a sensitive organization towards blinds has also been echoed by the many visually impaired persons who have been employed by the Bank which in itself is a great recognition.

Conclusively we can say that any business enterprise or organization may run its business and earn profits through its professional parameters but through the CSR activities the enterprise gets a human touch to its identity and adds value to its Brand image which brings it even more closer to its consumers and that in turn makes it a socially more acceptable and

recognized enterprise. Further, the CSR activities which an enterprise undertakes are not the obligations on the society but the imperative responsibility that they have to bear more as a compliance function for the well being and sustainability of the society and environment and for the benefit of future generations.

**Richa Khurana**  
Haridwar Br., Uttarakhand



## बधाई



कुमारी एन.बी.एस. गीतिका, सुपुत्री श्रीमती एन.वी.एन.आर. अन्नपूर्णा, क्षे.का., विजयवाड़ा को दसवीं कक्षा में 10 सी.जी.पी.ए. प्राप्त करने के उपलक्ष्य में विद्यालय प्रशासन द्वारा ₹10,000/- की छात्रवृत्ति प्रदान की गई.

दिनांक 15.11.16 को युवा कल्याण मंत्रालय से कर्नाटक म्यूजिक प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार प्राप्त करती हुई कुमारी एन बी एस गीतिका, सुपुत्री श्रीमती एन.वी.एन.आर. अन्नपूर्णा, क्षे.का., विजयवाड़ा.



कुमारी तनुश्री, सुपुत्री श्री नरेन्द्र कुमार जोनवाल, सहायक प्रबंधक, भवानी खेड़ा शाखा, राजस्थान ने माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान की 10वीं कक्षा की परीक्षा में 89.17% अंक प्राप्त किए.

कुमारी नक्षत्रा, सुपुत्री श्री सुधाकर खापेकर, वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा), क्षे.म.प्र.का., कोलकाता ने सी बी एस ई बोर्ड की 10वीं कक्षा की परीक्षा 9.4 सीजीपीए ग्रेड के साथ उत्तीर्ण की.



कुमार ऋषभ, सुपुत्र श्री विमलेश जैन, उप महाप्रबंधक, आरएबीडी, कें.का., मुंबई ने सी.ए. (फाइनल) की परीक्षा प्रथम प्रयास में उत्तीर्ण की.

कुमारी साक्षी, सुपुत्री श्रीमती कविता पेडणेकर, प्रबंधक, भुलेश्वर शाखा, मुंबई ने मुंबई बोर्ड की 10वीं कक्षा की परीक्षा में 84.60% अंक प्राप्त किए.



# पुरकार और सम्मान



Our Bank has been awarded 'TOP PERFORMER FINANCIAL INSTITUTIONS - MSME CATEGORY' by the Federation of Indian Exporter Organization, Western Region. The award is the highest recognition to FIEO member company for making significant contribution to the expansion of Indian exports to International Market. The Honourable Minister of Industries and Mining, Govt. of Maharashtra, Mr. Subhash Desai presented the award to Mr. G.R. Padalkar, General Manager, DFB & IBD, CO, Mumbai.



क्षेत्रीय कार्यालय, पटना को नराकास से उत्कृष्ट राजभाषा कार्यान्वयन हेतु प्रथम पुरस्कार प्रदान किया गया. पुरस्कार प्राप्त करते हुए क्षेत्र प्रमुख श्री जगमोहन सिंह एवं राजभाषा प्रभारी श्री वी.के. पांडेय.



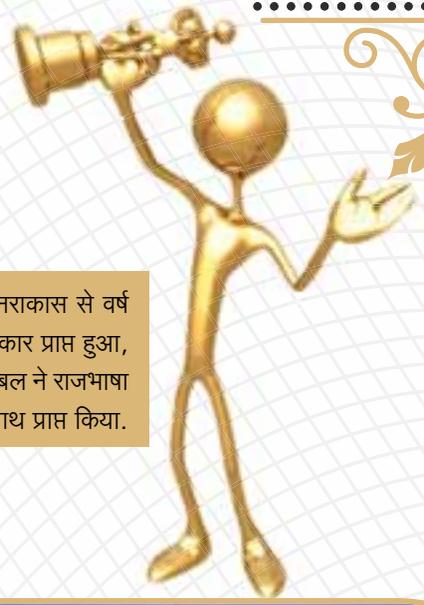
नराकास, चंडीगढ़ द्वारा क्षेत्रीय कार्यालय, चंडीगढ़ को प्रथम पुरस्कार प्राप्त हुआ. इसे उप क्षेत्र प्रमुख श्री लखबीर सिंह तथा राजभाषा अधिकारी श्री पवन कुमार झा द्वारा ग्रहण किया गया.



दिनांक 20.09.2016 को क्षेत्रीय कार्यालय, भोपाल को बैंक नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की ओर से प्रोत्साहन पुरस्कार प्राप्त हुआ.



क्षेत्रीय कार्यालय, बेंगलुरु को नराकास से वर्ष 2015-16 हेतु सांत्वना पुरस्कार प्राप्त हुआ, जिसे उप क्षेत्र प्रमुख श्री जे.जे. बल ने राजभाषा प्रभारी श्री अमित अग्रहरी के साथ प्राप्त किया.



नराकास, चेन्नै द्वारा नोडल क्षेत्रीय कार्यालय, चेन्नै को वर्ष 2015-16 के लिए सांत्वना पुरस्कार प्राप्त हुआ. 14.07.2016 को आयोजित पुरस्कार वितरण समारोह में सांत्वना पुरस्कार प्राप्त करते उप क्षेत्रीय प्रमुख श्री ई. पुल्लाराव; साथ में मुख्य प्रबंधक (राजभाषा), श्री विजय बिरकुरकर.



दिनांक 21.07.2016 को आयोजित समारोह में नराकास, बेंगलुरु द्वारा वर्ष 2015-16 के दौरान राजभाषा कार्यान्वयन हेतु स्टाफ महाविद्यालय, बेंगलुरु को पुरस्कार प्रदान किया गया. नराकास, बेंगलुरु के प्रेसिडेंट, श्री राकेश शर्मा, प्रबंध निदेशक, केनरा बैंक से पुरस्कार प्राप्त करते हुए श्री अतुल कुमार, प्राचार्य, स्टाफ महाविद्यालय, बेंगलुरु तथा साथ में श्री रामगोपाल सागर, स.म.प्र. (राजभाषा).



क्षेत्रीय कार्यालय, वाराणसी की गृह पत्रिका "काशी प्रवाह" को नराकास वाराणसी द्वारा गृह पत्रिका की श्रेणी में प्रथम पुरस्कार प्रदान किया.



नराकास, चंडीगढ़ द्वारा क्षेत्रीय कार्यालय, चंडीगढ़ की गृह पत्रिका 'यूनियन शिवालिका' को द्वितीय पुरस्कार प्रदान किया गया.



## तमसो मा ज्योतिर्गमय

यूनियन बैंक ऑफ इंडिया हमेशा से ही अपने सामाजिक दायित्व को लेकर सजग रहा है. राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के कर कमलों से प्रधान कार्यालय की नींव रखने से लेकर आज तक यूनियन बैंक ने बैंकिंग से इतर सामाजिक उत्थान के क्षेत्र में भी महत्वपूर्ण योगदान दिया है. यह यात्रा तब भी जारी थी, जब सरकार ने

कॉर्पोरेट सामाजिक दायित्व की प्रतिबद्धता तय नहीं की थी. यूनियन बैंक द्वारा कॉर्पोरेट सामाजिक दायित्व निभाने की प्रतिबद्धता के क्रम में क्षेत्रीय कार्यालय अहमदाबाद की ओर से अहमदाबाद क्षेत्र के अंतर्गत सामाजिक उत्थान के कई कार्य किए जा रहे हैं. अहमदाबाद स्थित 'गांधी आश्रम' के नाम से प्रसिद्ध 'साबरमती आश्रम' (जिसमें राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने लगभग 15 वर्षों तक निवास किया था) की सफाई, विद्यालय प्रकल्प को फंडिंग से लेकर 'अहमदाबाद असोसिएशन ऑफ डीफ एंड डम्ब' को डोनेशन देने जैसे अनेक सामाजिक कार्य किए जा रहे हैं. सामाजिक कार्यों की इसी परंपरा में एक महत्वपूर्ण कार्य 'ब्लाइंड पीपल असोसिएशन' को अनुदान देना शामिल है. अनेक अंधेरे जीवनो में रोशनी फैला चुकी इस संस्था का दौरा बैंक के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक श्री अरुण तिवारी द्वारा किया गया एवं उन्होंने इसे जीवन का एक अविस्मरणीय अनुभव बताया.



अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक के अहमदाबाद आगमन के अवसर पर, क्षे.का. अहमदाबाद द्वारा 'अंधजन मंडल संस्थान' (The Blind People Association) में अनुदानित प्रकल्प (Sponsored project) 'विज्ञान इन द डार्क' का उद्घाटन करते हुए अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक श्री अरुण तिवारी; साथ में महाप्रबंधक श्री एस. के. सिंह; क्षे. प्र. अहमदाबाद श्री अशोक कुमार सिरौही तथा बैंक एवं संस्था के अन्य गणमान्य.

विशिष्ट रूप से सक्षम (विकलांग) व्यक्तियों के विकास में 'अंधजन मंडल' नामक इस संस्था का बड़ा ही सराहनीय योगदान रहा है. इस संस्था में सैकड़ों दृष्टिबाधित लोगों एवं सैकड़ों अन्य शारीरिक एवं मानसिक दृष्टि से विकलांग लोगों के लिए न सिर्फ निःशुल्क रहने-खाने की व्यवस्था है, बल्कि जीवन को और बेहतर तरीके से जीने योग्य बनाने के लिए उन्हें विविध प्रकार के प्रशिक्षण भी दिए जाते हैं. इन प्रशिक्षण कार्यक्रमों को आईआईएम अहमदाबाद एवं गुजरात विश्वविद्यालय से मान्यता प्राप्त है. यहाँ शारीरिक और मानसिक रूप से विकलांग जनों को तिपहिया साइकिल बनाते, लकड़ी की मेज-कुर्सियाँ जैसे फर्नीचर बनाते, लोहे के कपाट बनाते, प्रिंटिंग मशीनों के माध्यम से प्रिंटिंग करते, अंधजनों द्वारा सिलाई करते, कॉल सेंटर चलाते आदि बहुत सी उत्पादक प्रक्रियाएँ करते देखा जा सकता है. विशेष प्रकार के विद्यालयीन प्रशिक्षण के अलावा, कंप्यूटर ट्रेनिंग, मोबाइल एवं अन्य इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों की मरम्मत के साथ-साथ अंधजनों को 'फिजियोथेरेपी' जैसे कोर्स भी कराए जाते हैं. साथ ही संस्था के माध्यम से अन्य बाहरी व्यक्तियों के लिए मुफ्त फिजियोथेरेपी की सुविधा उपलब्ध है. आपके भेजे हुए ईमेल का जवाब अंधजन आपको खुद देंगे. अंधजन मंडल में आकर यह महसूस होता है कि दृष्टि, आंखों की मोहताज नहीं है. आप इस संस्था में अंधजनों को क्रिकेट खेलते भी देख सकते हैं. संस्था के भीतरी कार्यों से इतर भी समाज के विकास के लिए भी संस्था द्वारा अन्य कार्य भी किए जाते हैं. आँखों का चेक-अप,

डेन्टल चेक-अप, ब्लड डोनेशन सरीखे शिविरों के आयोजन भी संस्था के कार्यों का हिस्सा है. भारत के माननीय राष्ट्रपति जी द्वारा पद्मश्री से सम्मानित इस संस्था का दौरा माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी भी कर चुके हैं.

ब्लाइंड पीपल असोसिएशन के दौरे में एक सबसे महत्वपूर्ण चीज है- 'विज्ञान इन द डार्क' का अनुभव. 'विज्ञान इन द डार्क' कार्यक्रम के निर्माण के लिए यूनियन बैंक की ओर से यूनियन बैंक सोशल फाउंडेशन द्वारा ₹25 लाख का अनुदान दिया गया है. इस कार्यक्रम के अंतर्गत 7 तरह की गतिविधियों का समावेश किया गया है, जिसमें गाँव में जाने, मंदिर में दर्शन करने के अलावा बागीचे में सैर करने, रिक्शा में बैठने, बोटिंग करने के साथ-साथ, थियेटर में फिल्म् देखने और रेस्टोरेंट में खाना-खाने जैसी गतिविधियाँ शामिल हैं. लेकिन यह सब कुछ करना है - अंधेरे में, एकदम अंधेरे में. दीवारें भी काली हैं और रोशनी की कोई संभावना नहीं है. एकदम घना अंधेरा और उसमें ये गतिविधियाँ करना. जब हमें आँखें होते हुए भी, दोनों आँखें खुली रखकर भी कुछ भी दिखाई नहीं देता. चारों तरफ सिर्फ अंधकार ही अंधकार. हम अंदर हाथों से टटोलते हुए आगे बढ़ते हैं और वह सब कुछ देखने की कोशिश करते हैं, जो जयदेव भाई या बेला बहन देखती हैं, जिनकी आँखों में रोशनी नहीं है और जो हमारे शब्दों में पूरी तरह से अंधे हैं. तब हमें एहसास होता है कि दरअसल इस अंधेरे में दृष्टि सिर्फ उनके पास है, क्योंकि वही तो हमें गाइड कर रहे हैं. कैसे जाना है, किस ओर जाना है, कहाँ क्या है? यह सब वही हमें बता



रहे हैं, जिनकी आँखों में रोशनी नहीं है। फिर एहसास होता है, उनके पास अंधेरे में भी दृष्टि है। वे अंधेरे में भी रास्ता खोज लेते हैं। ये हमारे लिए पहला अनुभव है, जब सचमुच हमारी अंधेरे से पहचान होती है। किसी भी प्रकार की कोई रोशनी नहीं, न बाहर की, न तारों की। और तब हम कुछ-कुछ सीखते हैं- स्पर्श की भाषा का महत्व और एहसास होता है कि जीवन में पाँचों इंद्रियाँ कितना बड़ा वरदान हैं। यह 60 मिनट का अंध जीवन हमारी आँखों के आगे से अंधेरा हटाने के लिए काफी होता है।

**विज्ञान इन द डार्क** के विषय में ब्लाइंड पीपल असोसिएशन के कार्यकारी सचिव डॉ. भूषण पुनानी कहते हैं- "People with sight have a lot of misgivings about the visually impaired. You can indeed feel good by your touch and feel. We therefore, wanted to create vision in the dark. We wanted to convey that it is not just about the eyesight but having the right vision which is key. "सचमुच में उस एक घंटे के अंधेरे के जीवन से हमें जीवन भर के लिए रोशनी मिल जाती है और इस बात का एहसास भी, कि ईश्वर ने हमें सब कुछ दिया है। यह बात दूसरी है कि हमारी आँखें होते हुए भी, उन्हें देख नहीं पाते। विज्ञान इन द डार्क को केवल 15 मिनट अनुभव करने के बाद, ब्लाइंड पीपल असोसिएशन की कार्यकारी निदेशक श्रीमती नंदिनी रावल के शब्दों में- "Fifteen minutes in the dark... a life time to thank god that he has given you sight." विज्ञान इन द डार्क का अनुभव उन लोगों को जरूर करना चाहिए, जिनकी आँखों में ईश्वर ने रोशनी दी है। अंधेरे में रोशनी की ये खोज हमें एक नई दृष्टि दे जाती है।

आइए, हम भी अपने कॉर्पोरेट सामाजिक दायित्व का निर्वहन करते हुए अंधेरे के खिलाफ अपनी लड़ाई जारी रखें। कवि की ये पंक्तियाँ हमारा मार्गदर्शन बनेंगी-

**"जलाए चलो दीये स्नेह भर-भर  
तभी तो धरा का अंधेरा मिटेगा."**

रोशनी और उजाले की ओर बढ़ने की बैंक की यात्रा जारी है। बैंक ने इसी क्रम में बीती तिमाही में भी ब्लाइंड पीपल असोसिएशन को विकलांग लोगों के लिए विशिष्ट 'टेक्नोलोजी रिसोर्स सेंटर' बनाने के लिए 11 लाख रुपए का अनुदान दिया है। आइए, ज्योति और प्रकाश की ओर बढ़ने की अपनी यात्रा जारी रखें और अपने सामाजिक सरोकारों के रूप में इस दुनिया को रोशन करते जाएं। वैसे भी हमारी संस्कृति की यही प्रार्थना रही है-

**"असतो मा सद्गमय, तमसो मा ज्योतिर्गमय."**

हे ईश्वर, हमें असत्य से सत्य की ओर और अंधकार से प्रकाश की ओर ले जाएँ।

ए.के.सिरोही

क्षे.का., अहमदाबाद



हमारी ओवरसीज शाखा, कोलकाता के सिंगल विण्डो ऑपरेटर-बी, **श्री मोहम्मद जनीफ अन्सारी** को बैंक नराकास, कोलकाता के तत्वावधान में युनाइटेड बैंक ऑफ इंडिया द्वारा आयोजित "कहानी अधूरी, करें उसे पूरी" इस अंतर-बैंक प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार प्राप्त हुआ।



'बाइकर्स आगरा क्लब' से जुड़े तथा क्षेत्रीय कार्यालय, आगरा में कार्यरत **श्री मनोज कुमार चौधरी** ने अपने साथी श्री विपुल माहेश्वरी के साथ शांति का संदेश लेकर आगरा से लद्दाख तक का सफर बाइक से तय किया। रास्ते में जगह-जगह रुककर उन्होंने लोगों को आपस में भाई-चारे के साथ रहने और पड़ोसी देश के साथ बेहतर संबंध बनाने के लिए जागरूक किया। वे रास्ते में कुल 19 जगह ठहरे। कारगिल में सेना के जवानों को आगरा का पेठा भी भेंट किया। इसी तरह पूर्व में भी जब चेन्नै में बाढ़ आई थी, तब इन्होंने 1200 कि.मी. का सफर बाइक से तय कर उत्तराखण्ड तक जगह-जगह हजारों लोगों को प्रधान मंत्री राहत कोष में धनराशि जमा करने के लिए प्रेरित किया था। हम इनके जज्बे को सलाम करते हैं।

**"We need business to understand its social responsibility, that the main task and objective for a business is not to generate extra income and to become rich and transfer the money abroad, but to look and evaluate what a businessman has done for the country, for the people, on whose account he or she has become so rich."**

*- Vladimir Putin*

# BANK

## A RESPONSIBLE CORPORATE CITIZEN

Countries, all over the world have made a resolution; necessary to mitigate climate change by putting their confirmation in 29 Articles of draft document as agreed in Conference of Parties 21 (COP21) in Paris dated twelfth December 2015 and submitted the Intended Nationally Determined Contribution (INDC). India's Intended Nationally Determined Contribution (INDC) centers around its policies on promotion of clean energy, increase in energy efficiency, development of less carbon intensive and resilient urban centre, efficient waste management, safe-smart and green transportation network, abatement of pollution and efforts to enhance carbon sink through creation of forest tree cover. The most important commitments of our country are:

1. To reduce the emissions intensity by 33 to 35% of its GDP by 2030 from 2005 level.
2. To achieve non fossil fuel base cumulative electric power installation capacity about 40% by 2030, with the help of transfer of technology and soft finance from international organizations.
3. To create additional forest and tree cover by 2030 for carbon sink of 2.5 to 3.0 billion tones of CO2 equivalent.

### Role of the Bank

Bank being a financial institution and socially responsible corporate citizen should take full responsibilities for the social and environmental impacts of their engagements and fully network its activities on the line of INDCs offered and articles of commitment as agreed in Paris, DECEMBER 2015. The survival of the banking industry is directly proportional to the survival of mankind. Survival of mankind is inversely proportional to global warming. Hence there is inverse relationship between banking and global warming. Therefore, Indian Banks should adopt environmental friendly business model without any further delay. Otherwise the climatic change and its multiplier chain effects have tremendous impacts on bank business and its survival.

### Objectives

- To identify different areas of operation for environmental concern
- To create environmental awareness of bank employees
- To redesign products and processes
- To reduce carbon foot print by appropriate strategies

### Environmental Impact of Banking

Internally, banking is never considered a polluting industry.

The veracity of present day banking operations combined with horizontal expansion and organic growth has considerably inclined into the carbon footprint of banks because of the massive use of energy, high paper wastage, lack of green buildings, wastage of water, lack of good transportation policy and massive use of non-biodegradable debit/credit/gift card etc.

Honoring the Country's commitment in Paris and for survival of the Globe, Bank has to regulate the internal and external processes accordingly by assigning responsibilities at various critical verticals. Presently there are wide gaps among present level of product quality, process, strategies, operation, management concern and staffs mind set. Following are the areas of grave concern:

- Financing various industries under manufacturing sector without complying environmental guide lines.
- No guidelines for financing green homes.
- No guidelines for financing green vehicles.
- Poor progress in financing renewable energy generating sector.
- Funds earmarked for Corporate Social Responsibilities (CSR) are very small and the amount being utilized for environmental development and nature enrichment is even smaller.
- Financing agriculture without suggesting proper mixed farming, mixed cropping, crop selection, crop rotation etc.
- No guidance to the farmers for proper application of fertilizer, causing deteriorating soil health.
- There are no statistical estimate for per head use of electricity energy from renewable source, water use, paper use etc.
- Correlation must be established for owning premises with square feet per staff, business, urban rural etc.
- While acquiring premises, green aspect of building is not complied.
- There is no proper transportation policy. Many staff moving in one direction are using multiple vehicles.
- No control over business travel per employee in kilometer.
- No proper justification and auditing for undue over sitting in the branch.
- No guidelines for computer and laptop use, switching, charging, tasking, night watchman control etc.

- No proper guidelines for Data centre administration for Central Office, Zonal office and regional office.

### I. Bank Externally Influencing Environment

Bank's products themselves do not pollute the environment, rather users of these products pollute the environment. Banks finance the companies by whom the pollution is caused. So the banks are liable for the environmental pollution. The risks for the customers are also risks for the banks.

A) Banking activities can be modulated for promoting environmental friendly investment. The National Mission on Enhanced Energy Efficiency (NMEEE) has a focus on improving energy efficiency across the sectors. The most designated largest energy demand sectors are Aluminum, Cement, Chlor-alkali, Fertilizers, Pulp and Paper, Power, Iron & Steel, Sponge Iron and Textiles. There has been encouragement for usage of energy efficient technologies such as ultra super critical and super critical boilers. It results in a reduction in demand of fuel and low GHG emissions per unit of electricity generated.

B) Electronic mode of remittance such as RTGS, NEFT, IMPS etc, internet banking, telephone and mobile banking facilities help customers for anytime, anywhere banking, which reduce the need to write and send by mail. Customer should be motivated to use all these facilities.

C) Bank is going massively for financing in housing sector Green buildings have the potential to save 30-40 percent energy and 35% water. To encourage the same interest concession may be proposed to the customers. Many banks are proposing concession in interest rate on World Environment day. Green Rating of buildings may be made by technically qualified professionals on the basis of materials used, radiation, conservation and saving of natural resources as per specifications.

D) Banks must encourage for financing Green Car which comply the necessary guidelines.

E) Banker's proactive attempt to finance in renewable energy sector can reduce carbon footprint. Purposes which have propensity to absorb credit in renewable sector: Solar Photovoltaic Energy (SPV), Biomass, Wind, Geothermal, Solar thermal, Small hydro-electricity plant etc.

F) Growing extensive forests, trees can sink CO2 through biological process of carbon assimilation. CSR funds may be diverted to enrich the environment.

G) After farm mechanization and commercialization of agriculture, the cropping intensity will increase tremendously which operates law of diminishing return on resources. So the suggested cropping pattern should be prepared in such way that land resources will not deteriorate. Crop rotation is the process of cultivating different crops in sequence in a field so that the soil health can be maintained. The scientific farm practices will protect soil health, fertility, reduce soil erosion, reduce insects/pests, reduces dependent on synthetic chemicals, and prevents diseases.

### II. Strategies to be adopted to Green the Internal System

A) Going green is more than just a social incentive. Making bank's IT infrastructure more environmentally friendly can also result in reduction in costs drastically. The principles are applicable in Data Centre, Central office Departments, Zonal and Regional office Computer Cells and branches also.

#### Use of Laptops, Desktop Computers and Servers

Bankers should make use of IT resources in an eco-friendly manner. Laptops, desktops, and servers should be used in such a way that energy can be conserved. When the laptop is connected to power socket even after full charging, it wastes lot of energy. The chargers step down the voltage and convert the AC to DC. Hence, it is advised to switch off the power supply when it is not in used. Monitors consume about 20 to 30% of the total energy used by a laptop. Strategies that help in reducing the power consumption of monitors include:

- Reduce the brightness of the monitor to the appropriate level. A brighter screen consumes more energy.
- When some background task is running in the computer and there is no need to use the monitor during this time, switch off the monitor instead of using screen savers as screen savers also consume some energy.
- Most of the computers operating systems provide power saving profiles which when enabled, reduces the amount of energy consumed by the computer.
- The processors of laptop also consume a lot of power particularly when carrying out complex work. Many aspects of applications that run on a system, impacts power consumption.

#### Need for Green IT Data Centers:

Various innovative ideas and best practices can be adopted to ensure optimal utilization of power, space and cooling requirements, leading to development of green IT data centers, which are eco-friendly. A green and energy efficient data center can not only deliver significant savings in operating costs and reduction in capital cost, but also achieve national recognition for the bank in terms of corporate social responsibility and their contributions towards sustainability.

Green banking opens up new markets and avenues. Real growth story will begin with our commitments to cut carbon-intensity from funding sustainable projects, designing and delivering environmental friendly products and services. Government with the help of RBI should formulate green policy guidelines proactively. To protect the banking industry, it is inevitable to remodel the banking business considering the environmental aspects of sustainability.



**Dibakar Lenka**  
Staff Training Centre, Bhubaneswar

## कॉर्पोरेट सामाजिक दायित्व का

# उपभोक्ता के व्यवहार पर प्रभाव

गाँव के विद्यालय की कक्षा 6 का विद्यार्थी रामेश्वर अपने विद्यालय में बैंक द्वारा प्रदान किए गए नए कम्प्यूटर को देखकर अभिभूत हो गया। बैंक द्वारा प्रदान किए गए इस कम्प्यूटर द्वारा गाँव के बहुत से छात्र-छात्राएं लाभान्वित हुए तथा उन्होंने कम्प्यूटर के माध्यम से बैंकिंग का ज्ञान भी प्राप्त किया। आज यह गाँव 90% वित्तीय रूप से समावेशित हो चुका है तथा रामेश्वर तथा उसके सहपाठी उच्च शिक्षित होकर देश के विभिन्न स्थानों पर कार्यरत हैं।

आज कॉर्पोरेट सामाजिक दायित्व को यथार्थ के धरातल पर उतारकर समाज का चहुँमुखी विकास संभव है। कॉर्पोरेट सामाजिक दायित्व उस कल्याणकारी निवेश की तरह है, जिससे लाभ प्राप्ति निश्चित एवं जमा राशि सदा के लिए सुरक्षित होती है। अब प्रश्न यह उठता है कि आखिर क्यों कॉर्पोरेट सामाजिक दायित्व का वहन करना उद्योगों, सार्वजनिक क्षेत्र की इकाइयों, शासकीय एवं अर्ध शासकीय उपक्रमों आदि द्वारा किया जाना आवश्यक है?

मानव व्यक्तित्व के स्वरूप निर्माण का अधिकांश श्रेय समाज को ही जाता है। समाज में ही हमारे संगठनों का गठन होता है तथा इनका अस्तित्व भी समाज से एवं समाज के लिए ही है। ऐसे में यह आवश्यकता अनुभव की जाती है कि एक व्यक्ति तथा संगठन के तौर पर हम वह लौटाने का प्रयास करें, जो हमने समाज से प्राप्त किया है। आज इसी अवधारणा को कॉर्पोरेट सामाजिक दायित्व कहा जाता है। हमारे देश में भी शनैः-शनैः कॉर्पोरेट सामाजिक दायित्व की अवधारणा ने जोर पकड़ा है, किंतु यह नहीं मानना चाहिए कि यह अवधारणा कोई नया विचार है। वस्तुतः भारतीय संस्कृति में 'सर्वजन सुखाय, सर्वजन हिताय' की अवधारणा अति प्राचीन है। यही कारण है कि देश में भामा शाह जैसे व्यक्तियों के कई उदाहरण हैं, जिन्होंने जन सामान्य के कल्याण हेतु अधिकतम त्याग किया। महाराज अग्रसेन के विषय में यह कथा प्रचलित है कि उनके नगर में निवास के लिए आने वाले किसी भी नए नागरिक को उनके अग्रोहा नगर के प्रत्येक घर से 1 रुपया एवं एक ईंट आगंतुक भेंट के रूप में प्रदान की जाती थी ताकि नवागंतुक अपना निवास एवं रोजगार दोनों ही स्थापित कर सके।

भारत सरकार द्वारा लागू किए गए नए कम्पनी अधिनियम में कॉर्पोरेट सामाजिक दायित्व हेतु 500 करोड़ या उससे अधिक शुद्ध संपत्ति वाले उद्योगों, कम्पनियों आदि को अपनी आय का केवल 2% कॉर्पोरेट सामाजिक दायित्व की मद में खर्च करना होता है। हालांकि, यह रकम पर्याप्त नहीं है और देश के बहुत से औद्योगिक घराने लंबे समय से बहुत बड़ी राशि जन कल्याण के कार्यों हेतु प्रदान कर अनूठी मिसाल प्रस्तुत करते रहे हैं। बहुत बार यह प्रश्न रखा जाता है कि आखिर सेवार्थ कार्य करने से उद्योगों अथवा कंपनियों को क्या लाभ होगा? कई लोग यह मानते हैं कि सामाजिक एवं कल्याणकारी कार्य करना केवल सरकार की ही जिम्मेदारी है; किंतु वास्तविकता तो यह है कि अपने सामाजिक दायित्वों का वहन करने वाला उद्योग न केवल समाज को लाभ पहुंचाता है, बल्कि अपने उपभोक्ताओं के हृदय में पैठ बनाकर स्वयं भी अधिक लाभान्वित होता है। किसी शारीरिक गतिविधि जैसे; व्यायाम अथवा प्राणायाम का तात्कालिक प्रभाव भले ही देखने को नहीं मिलता, किंतु इससे हम स्वस्थ रहते हैं और अच्छा अनुभव करते हैं। जब कोई कल्याणकारी कार्य किया जाता है तो उसके दूरगामी प्रभाव होते हैं। सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि होती है तथा संस्थान अथवा संगठन में कार्यरत कर्मचारियों को सकारात्मक अनुभव होता है। कॉर्पोरेट सामाजिक दायित्व उस व्यायाम की तरह है, जिसका लाभ व्यक्ति को धीरे-धीरे, किंतु स्थायी तौर पर मिलता है। ठीक वैसे ही संगठन द्वारा चलाए जाने वाले सेवा न्यासों से सेवाएं प्राप्त करने वाले ग्राहक अथवा उपभोक्ता तो प्रसन्न होते ही हैं, नए उपभोक्ता भी कम्पनी

के प्रति अपनापन अनुभव करते हैं और वे भी जुड़ना चाहते हैं। उपभोक्ताओं के व्यवहार संबंधी अध्ययनों से यह ज्ञात हुआ है कि सामाजिक दायित्व पूर्ण करने वाले व्यवसायों के ग्राहकों की संख्या में वृद्धि हुई है।

### कॉर्पोरेट सामाजिक दायित्व एवं उपभोक्ताओं की प्रतिक्रिया

उपभोक्ता एवं कॉर्पोरेट सामाजिक दायित्व पर बहुत से रोचक सर्वेक्षण हुए हैं, जिनसे कल्याणकारी कार्यों से उपभोक्ता के व्यवहार पर पड़ने वाले प्रभावों पर पर्याप्त प्रभाव पड़ता है। कोन/रोपर के सर्वेक्षण में भाग लेने वाले 84% उपभोक्ताओं ने यह स्वीकार किया कि उनके मन में ऐसी कम्पनियों की छवि बहुत अच्छी होती है, जो संसार को उत्कृष्ट बनाने का प्रयास करने अथवा किसी भी प्रकार की भलाई के कार्य करने में लगी हुई हैं।

- \* 78% युवाओं ने माना कि वे ऐसी कम्पनियों के उत्पाद खरीदना पसंद करते हैं जो उनकी चिंता के मुद्दों पर व्यय करते हैं।
- \* 66% उपभोक्ताओं ने यह स्वीकार किया कि वे ऐसी कम्पनियों के उत्पादों को खरीदना शुरू कर देंगे जो उनकी चिंता से संबद्ध सामाजिक दायित्वों पर व्यय करती हैं।
- \* 62% उपभोक्ताओं ने कहा कि वे सामाजिक दायित्व वहन करने वाले खुदरा सुपर बाजारों से खरीददारी करेंगे।
- \* 64% उपभोक्ताओं का यह मानना था कि किसी सामाजिक कार्य हेतु समर्पित होकर की गई विपणन पद्धति किसी कम्पनी के लिए मानक होना चाहिए।

इससे आगे यह भी पाया गया कि किसी सामाजिक कार्य से संबंधित विपणन गतिविधि का उच्च शिक्षित व्यक्तियों पर गहरा प्रभाव पड़ता है। 2001 में कोन/रोपर द्वारा किए गए सर्वेक्षण से ज्ञात हुआ कि जहाँ 11 सितंबर 2001 की घटना के पहले सामाजिक दायित्वों का वहन करने वाली कम्पनियों को पसंद करने वालों की संख्या 65% थी, वहीं इस घटना के पश्चात् यह संख्या बढ़कर 79% हो गई। लोगों का इस बात पर विश्वास सुदृढ़ हुआ कि कम्पनियों को सामाजिक दायित्वों का निर्वहन आवश्यक रूप से करना चाहिए।

### कॉर्पोरेट सामाजिक दायित्व, उत्पाद एवं उपभोक्ता

2002 के एक अध्ययन से यह तथ्य सामने आया कि 84% उपभोक्ता उपयोग किए जा रहे उत्पादों की उन ब्रांड्स को खरीदना पसंद करते हैं, जो किसी सामाजिक दायित्व संबंधी कार्य से जुड़े हों। अन्य सर्वेक्षणों से भी यही ज्ञात होता है कि ब्रांड छवि निर्माण में सामाजिक दायित्व के तहत किए गए कार्यों का महत्वपूर्ण स्थान होता है।

'मिनेट इमराइट' ने अपने एक लेख में बताया है कि उनके सर्वेक्षण से ज्ञात हुआ है कि गैर आर्थिक विषय भी खरीदी हेतु प्राथमिकता पाने लगे हैं। 75% लोग ऐसे ब्रांड खरीदना चाहते हैं, जिनका कॉर्पोरेट सामाजिक दायित्व व्यय पर्यावरण के संरक्षण से जुड़े कार्यों पर हो। 'चेस एवं स्मिथ' के द्वारा किए गए सर्वेक्षण से यह ज्ञात हुआ कि 85% उपभोक्ताओं का यह विश्वास है कि संयुक्त राज्य अमेरिका की कम्पनियाँ पर्यावरणीय तौर पर अधिक जिम्मेदार होने का प्रयत्न कर रही हैं। 1999 में एन्वॉनिक्स इंटरनेशनल द्वारा कॉर्पोरेट सामाजिक दायित्व पर 23 देशों में 25000 लोगों पर किए गए सर्वेक्षण से स्पष्ट हुआ है कि—

- 90% उपभोक्ताओं का मानना था कि कम्पनियों को लाभार्जन के स्थान पर अन्य विषयों पर विचार करना चाहिए।

- 60% लोगों का मत था कि उनके मन में किसी कम्पनी की छवि उसके कॉर्पोरेट दायित्व संबंधी अवधारणा के आधार पर बनती है.
- 40% उपभोक्ताओं का कहना था कि जिन कम्पनियों को वे कॉर्पोरेट सामाजिक दायित्वों से संबद्ध नहीं मानते, उनके विषय में नकारात्मक प्रतिक्रिया करते हैं.
- 17% का कहना था कि उन्होंने ऐसी कम्पनियों के उत्पादों को नजरंदाज किया जो कि कॉर्पोरेट सामाजिक दायित्वों का निर्वहन नहीं कर रही थीं.

हमारे अपने देश में भी ऐसे उदाहरणों की कमी नहीं है जहाँ पर औद्योगिक घरानों ने अपने कॉर्पोरेट सामाजिक दायित्वों का वहन किया एवं आज भी उनका नाम अच्छे समूह के रूप में लिया जाता है. आज से 2 दशक पहले की एक घटना याद आती है; जिसमें एक प्रसिद्ध अखबार ने यह घोषणा की थी कि वह बिकने वाली अपनी अखबार की प्रत्येक प्रति पर 5 पैसे किसी कल्याणकारी कार्य हेतु प्रदान करेगा. कहना न होगा कि वह अखबार दैनिक विक्रय की दृष्टि से मध्य प्रदेश में लंबे समय तक प्रथम अखबार बना रहा. महिलाओं हेतु उत्पाद बनाने वाली एक कम्पनी ने अपने विज्ञापनों में अपने उत्पादों की प्रत्येक खरीद पर 1 रुपया दृष्टिबाधित महिलाओं की शिक्षा हेतु व्यय करने की घोषणा की थी. आज भी उक्त कम्पनी अपने उत्पादों की बिक्री में अव्वल है.

एक एफएमसीजी कम्पनी विकलांग जनों की शिक्षा पर व्यय करती है, तो दूसरी कम्पनी द्वारा स्थापित न्यास द्वारा सेवार्थ कैंसर अस्पताल संचालित किया जाता है.

### शिक्षित एवं अशिक्षित उपभोक्ता

शिक्षित उपभोक्ता उत्पादों की गुणवत्ता को अधिक महत्व देते हैं, किंतु अशिक्षित ग्राहक कारोबार से भिन्न गतिविधियों से प्रभावित होते हैं. जहां देवालियों तथा अस्पतालों के निर्माण ने देश के अशिक्षित उपभोक्ताओं को बहुत प्रभावित किया है, तो वहीं शोध एवं अनुसंधानों पर व्यय करने वाले उद्योगों ने शिक्षित तबके को लुभाया है.

### कॉर्पोरेट सामाजिक दायित्व एवं उपभोक्ता के व्यक्तित्व के कुछ पहलू

उपभोक्ता का व्यक्तित्व एवं व्यवहार कॉर्पोरेट दायित्व से न केवल प्रभावित होता है, बल्कि उसका व्यक्तित्व निखरता भी है. इसे हम निम्नांकित बिंदुओं के माध्यम से समझ सकते हैं—

1. **सकारात्मकता** : जब कोई अच्छा काम होता है तो उसकी अनुमूँज दूर तक जाती है. कुछ अच्छा किया जा रहा है, यह सोच वास्तव में अच्छाई के लिए किए गए कामों से ही उपजती है. कॉर्पोरेट सामाजिक दायित्व लोगों को अच्छा सोचने एवं अच्छा करने दोनों की ही प्रेरणा देता है.
2. **समाज सेवा की भावना** : प्रत्येक व्यक्ति कुछ करना चाहता है, कुछ बनना चाहता है, किंतु सीमित संसाधनों के कारण वह अपनी पसंद के सामाजिक कार्य को करने में असमर्थ रहता है. ऐसे में वह जब किसी बड़ी कम्पनी से जुड़ कर यह ज्ञात करता है कि उसके द्वारा दी गई छोटी सी राशि से बड़े काम हो रहे हैं तो वह स्वयं को गौरवाचित अनुभव करता है तथा अन्यों को भी सामाजिक कार्यों से संलग्न होने की प्रेरणा देता है.
3. **छवि निर्माण** : किसी कम्पनी द्वारा अपनी ब्रांड से अर्जित धन को पुनीत कार्य में लगाया जाता है, तो जो छवि उस ब्रांड की उपभोक्ता के मन में बनती है उसके परिणाम दूरगामी होते हैं. मानव का स्वभाव है कि वह अपनी प्रसन्नता

अथवा अप्रसन्नता को स्वयं तक सीमित नहीं रखता. यदि किसी कम्पनी के कार्य से उसे प्रसन्नता प्राप्त हुई है तो उसे वह अवश्य ही अपने परिचितों, मित्रों, परिवार जन, संबंधियों आदि के साथ साझा करेगा. यदि ऐसा किया जाता है तो यह किसी कम्पनी के लिए बहुत लाभप्रद है क्योंकि उसे तो बिना किसी व्यय के प्रचारक मिल जाते हैं.

4. **सह उत्पादों का विक्रय आसान**: जब कोई उपभोक्ता किसी कम्पनी से प्रफुल्लित होता है तो वह अधिकाधिक वस्तुएं तथा सेवाएं उसी कम्पनी से लेने का इच्छुक रहता है. ऐसे में उपभोक्ता का विश्वास उन सह उत्पादों पर भी हो जाता है तथा उपभोक्ता का व्यवहार सह उत्पादों के प्रति भी बेहतर हो जाता है.
5. **सामाजिक दायित्वों का बोध** : प्रत्येक नागरिक के अपने सामाजिक दायित्व होते हैं, और वह उनका निर्वहन भी करना चाहता है. मानव स्वभाव है कि वह अपने परिवेश से सीखता है. जब कोई पुनीत कर्म किया जाता है, तो निश्चित रूप से इसकी सुगंध जन सामान्य के हृदय में जाती है तथा वह भी अपने तरीके से उसका अनुसरण करता है.
6. **चिर स्थायी विश्वास** : प्रायः जन सामान्य का विश्वास ऐसी कम्पनियों पर अधिक होता है, जिनके द्वारा चलाए गए न्यासों द्वारा उनका किसी प्रकार भला हुआ हो, चाहे फिर वह किसी विद्यालय के रूप में हो अथवा पुस्तकालय या अस्पताल के रूप में. छोटी सी सहायता लंबा विश्वास जगा देती है और यह विश्वास पीढ़ी दर पीढ़ी मजबूत होता जाता है.
7. **प्रारंभिक छवि का निर्माण** : कभी-कभी ऐसा भी होता है कि कोई व्यक्ति केवल किसी संगठन अथवा कम्पनी के सामाजिक कॉर्पोरेट दायित्व के कारण ही उससे जुड़ता है, जब उसे ज्ञात होता है कि उसे लाभ देने वाली कम्पनी तो उसकी आवश्यकता के उत्पाद भी बेचती है तो वह उन्हें सहर्ष खरीदने के लिए लालायित हो जाता है तथा साथ ही अपने साथियों को भी इस विषय में बताता है. इस आलेख के आरंभ में दिया गया उदाहरण इस बात को भलीभाँति स्पष्ट करता है.
8. **अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रभाव** : किसी एक देश में किए गए पुनीत कार्य अथवा कारोबार से कुछ ज्यादा किए जाने पर उसकी सुगंध अन्य देशों तक भी फैल जाती है, जब कम्पनी अपने कारोबार को अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर फैलाती है तो उसकी सकारात्मक छवि देश की सीमाएं लांघकर पहले ही अपना जनाधार तैयार कर चुकी होती है.
9. **राष्ट्रीयता की भावना का विकास** : कई बार उपभोक्ता द्वारा स्वदेशी कम्पनी का चयन किया जाता है, वह जब देखता है कि उसके अपने देश की कम्पनी अधिकाधिक लोगों को रोजगार प्रदान कर रही है तथा पर्यावरणीय मापदंड पर भी खरी है, तो स्वतः ही उस कम्पनी के प्रति आदर बढ़ता है. आजकल रोजमर्रा की वस्तुएं बनाने वाली स्वदेशी कम्पनियों के प्रति लोगों का रुझान बढ़ा है. निश्चित रूप से इसके पीछे स्वदेशी की भावना एवं बेहतर समाज की चाह है.

इस तरह से हम पाते हैं कि कॉर्पोरेट सामाजिक दायित्वों का निर्वहन उपभोक्ता के व्यवहार पर सकारात्मक प्रभाव डालता है. इसे कई सर्वेक्षणों ने भी सिद्ध किया है. आज आवश्यकता है कि हम अपने सामाजिक दायित्वों को समझते हुए उनका पालन करें तथा इस संसार को रहने के लिए और भी बेहतर स्थान बनाने में अपना भरपूर योगदान दें.



अर्पित जैन

स्टाफ प्रशिक्षण केन्द्र, भोपाल

**I am happy that  
I was wrong...**

I always tried to choose path that was always easy,  
Though This way or that way God kept me busy,  
On easy paths I could not have become that strong,  
I am happy that I was wrong...

For my failures, to Almighty I always used to blame,  
I forget, that times change, never remain same,  
For many good things God has chosen me out of Throng,  
I am happy that I was wrong...

I believed I was made for roads that are dark,  
I would not be able to see any positive spark,  
But through thick and thin God took Me along,  
I am happy that I was wrong...

**Amit Kumar Sharma**  
Jalandhar (M) Br.



औरतें ओढ़ लेती हैं गंभीरता,  
नहीं हँसती,  
न ही कहती हैं बात दिल की,  
क्योंकि जानती हैं छल का इतिहास,  
समझती हैं,  
उनकी स्वतंत्रता, व्यभिचार कहलाएगी।  
औरतें अक्सर,  
चिढ़ जाती हैं,  
लड़ पड़ती हैं अकारण,  
घृणा करती हैं,  
अविश्वास में जीती हैं,  
जानती हैं, उनका सरल आचरण  
डाल देगा कठिनाई में।  
औरतें दिखाती हैं दृढ़ता  
मासूम चेहरे में,  
कमजोरी न नज़र आए।

दुनिया दिखाती है उसे बहुत बड़ा,  
पर औरतें, जानती है, सच्चाई।



**प्रियंका शर्मा**

रा.भा.का.प्र., के.का, मुंबई



**शुभमस्तु**



**श्री शैलेन्द्र कुमार सिंह**  
महाप्रबंधक



**श्री जी.एस. रावत**  
महाप्रबंधक



**श्री के. चन्द्रशेखर**  
महाप्रबंधक

**हम आपके सुखद एवं स्वस्थ  
सेवा निवृत्त जीवन की  
कामना करते हैं**



**श्री आर. नेलीयप्पन**  
उप महाप्रबंधक



**श्री के. सी. चरमणा**  
उप महाप्रबंधक



**श्री आर. सेंथिल**  
उप महाप्रबंधक



**श्रीमती लता एम. पै**  
उप महाप्रबंधक



## जिंदगी चलती जाती है

जब जूलियो दस साल का था तो उसका बस एक ही सपना था, अपने पसंदीदा क्लब **रियल मेड्रिड** की ओर से फुटबॉल खेलना. वह दिन भर खेलता, प्रैक्टिस करता. धीरे-धीरे वह एक बहुत अच्छा गोलकीपर बन गया. बीस वर्ष का होते-होते उसके बचपन का सपना हकीकत बनने के करीब पहुँच गया, उसे **रियल मेड्रिड** की तरफ से फुटबॉल खेलने के लिए साइन कर लिया गया. खेल के धुरंधर जूलियो से बहुत प्रभावित थे और यह मान कर चल रहे थे कि बहुत जल्द वह स्पेन का नंबर वन गोलकीपर बन जाएगा.

1963 की एक शाम, जूलियो और उसके दोस्त कार से कहीं घूमने निकले. दुर्भाग्यवश उस कार का एक भयानक एक्सिडेंट हो गया और रियल मेड्रिड तथा स्पेन का नंबर वन गोलकीपर बनने वाला जूलियो हॉस्पिटल में पड़ा हुआ था, उसके कमर के नीचे का हिस्सा पैरालाईस्ड (शक्तिहीन) हो चुका था. डॉक्टर इस बात को लेकर भी असमंजस में थे, कि जूलियो फिर कभी चल भी पाएगा या नहीं. फुटबॉल खेलना तो दूर की बात थी. ठीक होना बहुत लंबा और दर्दनाक अनुभव था. जूलियो बिलकुल निराश हो चुका था. वह बार-बार उस घटना को याद करता, तो उसका मन क्रोध तथा मायूसी से भर जाता.

अपना दर्द कम करने के लिए वह रात में गाने और कविताएं लिखने लगा. धीरे-धीरे वह गिटार पर भी हाथ आजमाने लगा. 18 महीने बिस्तर पर रहने के बाद जूलियो फिर अपनी जिंदगी को सामान्य बनाने लगा और संगीत प्रतियोगिताओं में भाग लेकर '**लाइफ गोड ऑन द सेम**' गाने पर पहला पुरस्कार जीता.

वह फिर कभी फुटबॉल नहीं खेल पाया, पर अपने हाथों में गिटार और होठों पर गाने लिए जूलियो इंग्लिश संगीत की दुनिया में श्रेष्ठ दस गायकों में शुमार हुआ और अब तक उसके 30 करोड़ से अधिक एल्बम बिक चुके हैं. यह है कमाल-कभी हार न मानने का.



सूर्या

जनरल गंज शाखा, कानपुर



## शिखर की ओर

उच्च कार्यपालक वेतनमान VII में पदोन्नति पर हार्दिक बधाई



श्री लाल सिंह



श्री डी.सी.चौहान



श्री एस.एन. कौशिक



श्री के.एल.राजू

उच्च कार्यपालक वेतनमान VI में पदोन्नति पर हार्दिक बधाई !!



श्री के.एस. यादव



श्री वी.के.एस. साख्री



श्री राकेश चोपड़ा



श्री एम.पी. सिंह



श्री अखिलेश कुमार



श्री के. पलानी  
वेलू चामी



श्री विजू वासुदेवन



श्री एन.के. राउत



श्री डी. चिरंजीवी

हम आपके नेतृत्व में बैंक के उच्चतम  
भविष्य की कामना करते हैं.



## परोपकार पद्मो धर्मः

### अष्टादश पुराणेषु व्यासस्य वचनं द्वयम् परोपकारः पुण्याय पापाय परपीडनम्

हमारे 18 पुराणों में वेदव्यास जी का यह सारगर्भित कथन है कि दूसरों की भलाई करना ही पुण्य का कार्य है तथा दूसरों को दुःख पहुँचाना ही पाप है।

वस्तुतः हमारा भारत प्रारंभ से ही महान राष्ट्र रहा है, यहाँ स्वहित के बजाय परहित को महत्ता दी जाती है। इसी कारण भगवान राम ने 14 वर्षों तक वनवास भोगा। महर्षि दधिति ने देवताओं के कार्य हेतु अपनी अस्थियाँ तक दान में दे दीं। कर्ण जैसे महान योद्धा ने परहित हेतु अपने कुंडल कवच दान में दे दिए। परहित के रास्ते पर चलकर ही अकबर ने दीने इलाही धर्म चलाया। महान शासक अशोक ने परहित के मार्ग पर चलकर ही अपनी कीर्ति सर्वत्र बिखेरी।

भारत संतो-महात्माओं का देश रहा है। यहाँ स्वामी विवेकानंद, दयानंद सरस्वती, महात्मा गांधी सरीखे महान महात्माओं ने देश को ऊँचाइयों के पथ पर अग्रसर किया। भगवान कृष्ण सरीखे महान कर्मयोगी ने परहित के मार्ग को सदैव प्रशस्त किया।

परहित का सबसे सुंदर उदाहरण हमारी प्रकृति है। सूर्य अपनी अग्नि से हम सभी को ताप प्रदान करता है। नदियाँ अपने जल से सभी को शीतलता प्रदान

करती हैं। वृक्ष अपना फल स्वयं नहीं खाते। धरती हमें अन्न-जल प्रदान कर जीवन देती है। अतः प्रकृति परहित का स्वयं सिद्ध ऐसा उदाहरण है, जो मानव को निरंतर एक नया संदेश देती है।

मदर टेरेसा ने अपना पूरा जीवन दूसरों के हित हेतु कुर्बान किया। विनोबा भावे ने परहित के मंत्र को ध्यान में रखकर ही भूदान आंदोलन चलाया।

आदिगुरु शंकराचार्य जिन्होंने अद्वैतवाद की स्थापना की, वे भी परहित के धर्म पर ही आजीवन चलकर जीवन का मार्ग प्रशस्त किया। महान कवि तुलसीदास ने अपने महानग्रंथ रामचरित्र मानस के माध्यम से परहित का सार्थक उदाहरण प्रस्तुत किया। कबीर, रहीम ने अपने सारगर्भित दोहे से जीवन का परम सत्य उजागर किया और परहित के सुंदर स्वरूप को वाणी दी।

रसखान, जायसी, मीरा जैसे कवियों ने अपने प्रेम से सराबोर रचनाओं से जीवन का अभिन्न अंग परहित को ही प्रस्तुत किया।

### कीरति भनिति भूति भलि शोई सुदरति राम राव कहँ हित होई

तुलसीदास का यह कथन परहित का सम्यक् उदाहरण प्रस्तुत करता है। इतिहास साक्षी है कि जब भी, जिस किसी ने परपीडा सिद्धांत को अपनाया तो

उस व्यक्ति का नामों निशां तक नहीं रहा। चाहे वह रावण जैसा महानजानी हो अथवा दुर्योधन जैसा वीर। सभी ने मुँह की खाई है, क्योंकि व्यक्तिगत हित कभी भी व्यक्ति को गिरा सकता है।

गीता प्रेस गोरखपुर से प्रकाशित कल्याण का वार्षिक और मासिक दोनों अंक परहित के सिद्धांत को लक्षित कर चल रहे हैं। वह अपने दोनों अंकों के माध्यम से निरंतर मानव कल्याण के सिद्धांत को अपनाकर चल रहा है, तभी पत्रिका का मूल्य केवल लागत मूल्य है।

जिन-जिन भारतीय फिल्मों ने परहित सिद्धांत को अपनाया वे फिल्में बॉक्स ऑफिस पर सफल रही हैं। रुस्तम, बजरंगी भाईजान, पीके, ओ माई गॉड, मैरी कॉम, कोई मिल गया, तारें जमीं पे, लगान, चक दे इंडिया, बागवान इसका वलंत उदाहरण है।

भारत में महात्मा गांधी सरीखे युग पुरुष ने अपने परहित के सिद्धांत के बल पर विदेशों तक में अपनी धाक जमाई।

युधिष्ठिर, एकलव्य, राजा बलि, प्रह्लाद- सभी धर्म, क्षमा, दान शीलता, परोपकार के अन्नय उदाहरण हैं।

अतः यह सार्वभौतिक सत्य है कि दूसरों की भलाई करने वाले को ईश्वर की ओर से भलाई ही मिलती है। दूसरों को कष्ट पहुँचाने वाला व्यक्ति कुछ समय के लिए सुखी हो सकता है। परन्तु अंत बुरा ही होता है।

ईसा मसीह आज इसी कारण जीवित है। क्योंकि उन्होंने परहित को अपना उद्देश्य बनाया। गुरुनानक देव की वाणी आज भी उतनी ही सटीक है, क्योंकि वह परहित को संदेश देती है।

परहित की भावना तभी बलवती हो सकती है। जब हम मनसा, वाचा कर्मणा - एक हों। इससे हमसे बुराई स्वतः नष्ट हो जाएगी तथा मानवता का प्रभाव दर्शित होने लगेगा। तभी परहित की महान भावना उद्भूत हो मानवता का कल्याण करेगी।

मीना कुमारी

क्षे.का., दिल्ली (उत्तर)

# सामाजिक दायित्व



भारतीय दर्शन में कहा गया है कि खाली हाथ आए हैं, खाली हाथ जाना है। हकीकत यही है कि कुछ भी हमारा नहीं है। जो कुछ है, वह प्रकृति की उस इकाई का है, जिसे हम 'समाज' कहते हैं। लगभग सभी वस्तुएं हमारी व्यक्तिगत न होकर इस समाज की हैं, फिर चाहे वह हवा हो या पानी। वे सड़कें भी नहीं, जिन पर हम जीवन भर चलते हैं। कहने का मतलब सब कुछ साझा है, हमारे अकेले का नहीं। हम ताउम्र सब कुछ तो समाज से ही लेते हैं। अन्य प्राणियों की तुलना में हम इसीलिए विकास कर पाए, क्योंकि हमने सहअस्तित्व को सबसे पहले जाना और स्वीकार किया। हमारा सारा विकास, हमारी सारी टेक्नोलॉजी इसी सहअस्तित्व का परिणाम है।

हमारे विकास की इसी कड़ी में वह दौर भी आया, जब हम चलते-चलते दौड़ने लगे। कुछ देशों में अपने-अपने साम्राज्य को आगे बढ़ाने की होड़ लगने लगी और इसका परिणाम यह हुआ कि कुछ चंद सभ्य कहे जाने वाले देशों ने मिलकर अन्य सहनशील देशों को अपना उपनिवेश बनाना शुरू किया। औद्योगीकरण की प्रतिस्पर्धा तो अब तक जारी है। लेकिन अंधी दौड़ में बहुत कुछ छूट जाता है। जब इस असंतुलन के लिए प्रकृति की ओर से समुचित सावधानी बरतने के संकेत मिलने लगे, तब इस छूटे हुए पर हमने चर्चा करना शुरू किया। विश्व के तमाम देशों ने मिलकर समितियाँ बनाईं और बैठकें आयोजित होने लगीं। इन्हीं बैठकों से एक निष्कर्ष निकला- "सतत विकास, समावेशी विकास"। कहने का मतलब हमें आज तो तेजी से विकास करना है, लेकिन इस विकास में यह भी याद रखना है कि भविष्य में भी विकास करने के लिए हमारे पास पर्याप्त साधन उपलब्ध हों। हम आनेवाली पीढ़ियों से उनका हक न छीनें।

पहले तो बहुत कुछ स्वैच्छिक रहा लेकिन जब इसके परिणाम आशातित नहीं रहे तब लोगों को उनके सामाजिक उत्तरदायित्व के प्रति जागरूक करना शुरू किया गया। उन लोगों पर अलग से जिम्मेदारी भी सौंपी गई, जो इसके लिए सबसे अधिक जिम्मेदार थे। इस प्रकार कॉर्पोरेट सामाजिक दायित्व की संकल्पना ने जन्म लिया। कॉर्पोरेट घरानों और बहुराष्ट्रीय कंपनियों के लिए कुछ नियम भी बनाए गए कि वे अपने लाभ का कुछ हिस्सा उस क्षतिपूर्ति के लिए भी व्यय करें जो वे लाभ अर्जित करने के दौरान प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से पर्यावरण को हानि पहुँचाकर कर रहे हैं। साठ के दशक में यह बात चर्चा का विषय बनी।

सरल शब्दों में कहें तो इसका अर्थ होगा कि संस्था द्वारा समाज और पर्यावरण के प्रति अपनी जिम्मेदारियों को समझते हुए उसके प्रति संवेदनशील होकर कुछ करना। इसके लिए संस्थान शैक्षिक एवं सामाजिक कार्यक्रमों में सहभागिता करके या फिर पर्यावरण के हितों को ध्यान में रखते हुए प्रदूषण और कचरे को कम करने

जैसे कदम उठाएं। हालांकि इसके विरोध में एक तर्क यह भी दिया जाता है कि इससे वित्तीय संस्थाओं का मुख्य बिजनेस प्रभावित होता है। लेकिन व्यवहारिकता को ध्यान में रखते हुए भी यह तर्क व्यवहारिक नहीं लगता। देखने में यह आता है कि जो संस्थाएं अपने कॉर्पोरेट सामाजिक दायित्व को लेकर जितनी ही सजग हैं और जितना ही अच्छा योगदान दे रही हैं, उन कंपनियों की लाभप्रदता का प्रतिशत भी उतना ही अच्छा है। कुछ ऐसे भी उदाहरण मिलते हैं, जब बड़े-बड़े उद्योगपतियों ने अपनी पूरी संपत्ति ही सामाजिक उत्थान के लिए, सामाजिक कार्यों के लिए समर्पित कर दी। यह क्रम अभी भी जारी है, जब हमें कुछ ऐसे भी उदाहरण देखने को मिलते हैं, जब किसी ने अपनी अरबों की संपत्ति भी दान में दे दी। वारेन बफेट और बिल गेट्स कुछ ऐसे ही नाम हैं। लेकिन कुछ व्यक्तिगत उदाहरणों के अलावा यह अच्छा है कि सरकार द्वारा कुछ ऐसे नियम बनें कि जैसे हम अपनी आय पर आयकर देते हैं, उसी तरह सामाजिक सेवाओं का उपभोग करने के लिए हम सामाजिक कर भी दें।

आज इसे अनिवार्य बनाना क्यों जरूरी है? इसका उत्तर बिल्कुल स्पष्ट है। पहले, जहाँ तक बात है, विकास की, तो उसमें काफी असमानता है। एक ओर कुछ देशों ने प्रकृति का भरपूर दोहन कर बहुत अधिक भौतिक विकास कर लिया है वहीं कुछ देश विकास की इस दौड़ में बहुत पीछे रह गए हैं। एक देश के भीतर भी यह पूरी तरह से समान नहीं है। किसी राज्य ने बहुत अधिक तरक्की कर ली है, तो कोई राज्य बुनियादी सुविधाओं के लिए भी संघर्ष कर रहा है। इस असमानता की खाई इतनी बड़ी हुई है कि बिल्कुल पास-पास के लोगों में कोई आसमान छू रहा है तो कोई उठ खड़ा होने के लिए भी संघर्ष कर रहा है। सभी को विकास के समान अवसर मिल सकें इसके लिए हमें कुछ जवाबदेही तो तय करनी ही चाहिए।

इन सबसे इतर, जो सबसे महत्वपूर्ण चीज है, वह है अपनी व्यक्तिगत जिम्मेदारी का एहसास। हम सबके व्यक्तिगत प्रयास ही सबसे बड़ा बदलाव ला सकते हैं। एकता में बड़ी शक्ति होती है। आइए, हम अपने प्रयासों में और शक्ति लाएँ और पुरजोर कोशिश करें कि विकास की हमारी दौड़ में हर कोई शामिल हो सके। इसका लाभ उन लोगों को भी मिले, जो पीछे छूट गए हैं। आइए, समावेशी विकास के लक्ष्य को हासिल करने में हर संभव कदम उठाएं और दीपक वहाँ भी जलाएं जहाँ रोशनी अभी नहीं पहुँची है। आएं, पूरा जहाँ रोशन करने के लिए अपनी रोशनी को और फैलाएं।

मनोज कुमार  
क्षे.का., अहमदाबाद





# कॉर्पोरेट सोशल रिस्पॉन्सिबिलिटी एक अहम कर्तव्य

मनुष्य का अस्तित्व एक सामाजिक प्राणी होने से है। सामाजिक होने के कारण ही हम मानवीय और सभ्य जीवन को जी पाते हैं। इस समाज का हिस्सा होने के नाते हमारी सामाजिक जिम्मेदारियाँ भी हैं। ठीक उसी तरह, अंतर्राष्ट्रीय स्तर की संस्था, संगठन या फिर इस निगमित तंत्र की समाज के प्रति कुछ जिम्मेदारियाँ होती हैं। चूँकि ये संस्थायें उपभोग करने से होने वाले लाभ से हुई आमदनी से चलती हैं, अतः इन संस्थाओं का नैतिक कर्तव्य बनता है कि वे अपने इस लाभ का कुछ हिस्सा समाज के हितकारी कार्यों में लगाएँ, ताकि समाज में स्वास्थ्य, शिक्षा, रोजगार, वातावरण इत्यादि में सुधार किया जा सके। इसके अलावा, ये संस्थायें उत्पादन के दौरान प्रदूषित जल या धुएँ से वातावरण को प्रदूषित करती हैं। अतः सी.एस.आर.के माध्यम से ये संगठन समाज हित में अपनी भागीदारी सुनिश्चित करते हैं।

सी.एस.आर.वर्ष 1991-92 में शुरू किए गये उदारवाद, निजीकरण और वैश्विक नीति का एक सामाजिक जवाब था। राजनीतिक समाजशास्त्रियों के मुताबिक सी.एस.आर. आर्थिक उदारवाद से हुए नुकसान की सामाजिक भरपाई कर पाने में कामयाब होगा। खैर, कुछ हद तक यह कामयाब भी हुआ है। कुछ बड़े संस्थान जैसे - टाटा, बिरला, अंबानी, इंफोसिस, विप्रो, एचसीएल, टीसीएस, और भी कई बड़ी और नामी संस्थाओं ने समाज के हित में कार्यक्रम शुरू किए। यह कार्यक्रम खासकर दूर-दराज के क्षेत्रों में क्रियान्वित किए गए, ताकि समाज के निचले स्तर को सुधारा जा सके। वैश्विक स्तर पर भी सी.एस.आर. को काफी स्वीकार किया गया और आईएसओ-26000 को सी एस आर के लिए अंतर्राष्ट्रीय मानक घोषित किया गया।

ग्राहकों के परिप्रेक्ष्य में देखा जाए तो सी.एस.आर. एक जिम्मेदारी है, क्योंकि संस्था का लाभ, ग्राहकों की संतुष्टि पर निर्भर करता है। ग्राहक उन संस्थाओं में ज्यादा रुचि दिखाते हैं, जो सी.एस.आर. में काफी कुछ निवेश करती हैं। सही अर्थों में, संस्था की सफलता और समाज कल्याण एक दूसरे पर निर्भर करता है। एक संस्था की उत्पादकता बढ़ाने के लिए स्वस्थ और शिक्षित मानव संसाधन, सतत विकास और सक्षम प्रशासन की आवश्यकता होती है। ठीक उसी तरह, एक समाज

को लाभकारी संस्था, गुणवत्ता से परिपूर्ण उत्पादन, और समाज हित में काम करने वाली संस्थाओं की आवश्यकता होती है। समाज और संस्था, दोनों एक दूसरे पर निर्भर करते हैं। सी.एस.आर. इन दोनों को जोड़ने का काम करता है।

सी.एस.आर. के कई पैमाने हो सकते हैं। इन पैमानों के आधार पर किसी भी संस्था के द्वारा सी.एस.आर. क्षेत्र में किए गए कामों को सत्यापित किया जाना चाहिए। यह सत्यापन गाँव, समाज या फिर कोई खास समुदाय के कार्य क्षेत्र में होना चाहिए ताकि ज़मीनी स्तर पर किए गए कामों को ही दर्शाया जा सके। सी एस आर पर्यावरण, हरियाली, शुद्ध जल, स्वच्छता कार्यक्रम, शिक्षा, छात्रवृत्ति, संसाधनों का प्रदाय, जागरूकता अभियान, प्रौद्योगिकी साक्षरता, कौशल विकास, प्रौढ़ साक्षरता, लिंगानुपात, स्वास्थ्य, जनसंख्या नियंत्रण इत्यादि क्षेत्रों में किया जा सकता है। सी.एस.आर. एक नैतिक कर्तव्य है, जिससे संस्थाएं समाज से जो लेती हैं, या सार्वजनिक संसाधनों का जो क्षरण करती हैं, उसकी भरपाई कर पाती हैं। निश्चित ही, यह समावेशित भागीदारी का एक रास्ता है।

अर्थव्यवस्था के उदार होने के बाद सी.एस.आर. पर काफी चिंतन प्रारंभ हुआ। अंतर्राष्ट्रीय संस्थाओं के भारत में आगमन से इस नीति को और अनुशासन से लागू किया गया। कॉर्पोरेट कार्य मंत्रालय ने कंपनी अधिनियम 2013 में धारा 135 के अंतर्गत सी.एस.आर. का उल्लेख किया है। इस कानून के माध्यम से हम समझ सकते हैं कि सी.एस.आर. की महत्ता क्या है? कई नामी कंपनियों ने सी.एस.आर. क्षेत्र में निवेश कर समाज के चेहरे को बदलने में एक अहम हिस्सेदारी निभाई है। इन कंपनियों में महिंद्रा एंड महिंद्रा, टाटा पावर, टाटा स्टील, लार्सन एंड टूब्रो, टाटा केमिकल, टाटा मोटर्स, गेल (इंडिया), भारत पेट्रोलियम, इंफोसिस, मारुति सुजुकी, कोका-कोला और जुबिलिएंट लाइफ जैसी कंपनियों के नाम शामिल हैं।

महिंद्रा एंड महिंद्रा ने बालिकाओं, युवाओं और किसानों के कल्याण के लिए शिक्षा, लोक स्वास्थ्य और पर्यावरण में कई कार्यक्रम शुरू किए। महिंद्रा प्राइड विद्यालयों के जरिये सामाजिक और आर्थिक रूप से पिछड़े लगभग 13000 लोगों को प्रशिक्षित किया। चेन्नई, पटना, चंडीगढ़ और श्रीनगर में महिंद्रा ने लाइफ लाइन

एक्सप्रेस रेलों को प्रायोजित किया ताकि स्वास्थ्य सेवाएं दूर-दराज के क्षेत्रों तक पहुँचाई जा सकें। उसके बाद, हरियाली कार्यक्रम जिससे 70 लाख पौधे लगाए गए। इसके अलावा, महिंद्रा ने 11 राज्यों में 1171 स्थानों पर 4340 शौचालयों का निर्माण करवाया और 104 जिलों में स्वच्छ भारत, स्वच्छ विद्यालय के अंतर्गत लड़कियों के लिए सरकारी स्कूलों में शौचालयों का निर्माण करवाया। लगभग 83 करोड़ के सी.एस.आर. कार्यक्रमों के साथ महिंद्रा अव्वल रहे।

टाटा ने सुरक्षा, संसाधनों और ऊर्जा संवर्धन, महिला सशक्तता, कौशल विकास, और आजीविका बढ़ाने के क्षेत्र में काफी काम किए। 31 करोड़ की राशि को समाज के हितकारी कार्यों में उपयोग किया गया। सतत आजीविका के लिए ओडीशा, झारखंड, और छत्तीसगढ़ राज्यों के आदिवासी क्षेत्रों में कई उत्थानकारी कार्य किए गए। मातृत्व और शिशु विकास कार्यक्रम झारखंड में काफी प्रचलित रहा। लार्सन एंड टूब्रो ने जल और स्वच्छता, शिक्षा, स्वास्थ्य और कौशल निर्माण के क्षेत्रों में क्षेत्रीय निगमों के साथ मिलकर कई अहम कार्यों को अंजाम दिया। प्रजनन, टीबी, लकवा नियंत्रण के लिए सलाह केंद्र खोले गए। सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र मुंबई, ठाणे, अहमदनगर, हजीरा, वड़ोदरा, कोयम्बटूर, चेन्नई, लोनावाला में खोले गए। 50 बाँधों का निर्माण महाराष्ट्र के पालघर जिले में किया गया। जो लगभग 75000 गाँवों को पानी की उपलब्धता करवाएगा।

टाटा केमिकल ने सतत सामुदायिक विकास और पर्यावरण को बचाए रखने के लिए कई कार्यक्रम चलाए। टाटा मोटर्स ने शिक्षा और रोजगार के लिए काम किया। 'सीखो, कमाओ और आगे बढ़ो' मिशन के अंतर्गत कई युवाओं को प्रशिक्षित कर रोजगार उपलब्ध करवाया गया। 'गेल उत्कर्ष' के अंतर्गत गेल (इंडिया) ने पिछड़े बच्चों की शिक्षा के इंतजाम किए और अच्छे महाविद्यालयों में प्रवेश दिलवाया। मासिक छात्रवृत्ति की योजना भी काफी सफल रही। भारत पेट्रोलियम ने अध्यापकों की सशक्तता के लिए प्रशिक्षण केंद्र स्थापित किए। पानी बचाने, कौशल विकास, और सभी वर्गों को समावेशित करने के उद्देश्य से योजनाएँ लाई गईं। दिव्यांग व्यक्तियों को संसाधन और सुविधाएँ उपलब्ध कराई गईं। 'बूँद' योजना के तहत

बारिश के पानी को सहेजने का काम बड़े स्तर पर किया गया, जिससे कई गाँव सिंचित किए गए। यह महाराष्ट्र के 4 गाँव से शुरू होकर पिछले 6 सालों में महाराष्ट्र, कर्नाटक, राजस्थान, आंध्र के लगभग 140 गाँव में क्रियान्वित किया गया।

इंफोसिस ने 'वर्क विथ इन्फोसीस फ़ाउंडेशन' के माध्यम से कुपोषण को खत्म करने, स्वास्थ्य के ढाँचे को अच्छा बनाने, प्राथमिक शिक्षा को बढ़ावा देने और भारतीय कला और संस्कृति को प्रचारित करने के लिए काफी सफल प्रयास किए। गरीब तबके के बच्चों को प्रौद्योगिकी में प्रशिक्षित करने के लिए बहुत कुछ निवेश किया।

सी.एस.आर. मानवीय आधार पर अपनी योग्यता के मुताबिक समाज को वापस देने की परंपरा का एक पहलू है। सामाजिक ढाँचे को मजबूत बनाने के लिए समाज के हर वर्ग का योगदान बेहद ज़रूरी है। मजबूत संस्था और अच्छा विश्व, दोनों सफलता की लंबी यात्रा के लिए बेहद ज़रूरी हैं। निःस्वार्थ भाव से दूसरों के लिए किया गया समर्पण ही पुण्य में गिना जाता है। महान होना आसान नहीं है। समर्पण और साहस के अंतिम छोर पर जाकर महानता का अनुभव होता है। हमें एक सामाजिक प्राणी होने के नाते, व्यवसाय, लाभ, सफलता से परे कल्याणकारी कार्यों में अपना योगदान देना चाहिए, ताकि हम विश्व को "वसुधैव कुटुंबकम्" के सिद्धांत पर एक कुटुंब के रूप में स्थापित कर पाने में कामयाब हो।

अंत में, जैसा कि महान व्यक्तित्व 'विंस्टन चर्चिल' ने कहा था,

"ज़िम्मेदारी महाबता की कीमत है और यह कीमत चुकाबा हर किसी के बस की बात नहीं"।

महेंद्र कुमार पटीदार  
क्षे.का., इंदौर



का  
टू  
न  
को  
ना



# Train to Jelapang

I was on my first tour abroad with my family. It was the summer of 2010 when I was holidaying in Singapore with my wife and two kids. As I did in India, this tour was also planned by me and did not go through any tour operator, though many close friends and relatives had warned me against taking the risk of travelling abroad on my own. The idea was to explore the new places leisurely at our own pace, without the restriction that comes along when you travel in a group. Moreover, I was not staying in a hotel but with one of the families of a friend who hailed from my native place.

Singapore, as everyone knows, has strict laws and discipline is its hallmark. Cheating and littering around is considered a crime and strong action is taken for doing so. The taxi drivers will invariably give you a receipt for the fare, once you reach the destination. They will accept any tip that is given over and above the fare but will never demand it.

Considering that we were four of us, travelling by taxi was cheaper than the bus or train for us, and also a more convenient and faster mode of travel. The bus and train fares in Singapore are not subsidized for public in general like they are in India, though some concession is available for Senior citizens, disabled persons, students etc. However, we preferred travelling by different modes of travel in newer places, just to experience the uniqueness of it.

One of my friends, Ivan, who was working in Singapore, got the news of my visit there. He called on me one day and invited us to visit his home in Singapore. He was staying in the one of the most posh and happening places in Singapore, the Orchard Road. Orchard Road is a high profile commercial and shopping centre and is in the heart of Singapore. My wife was

naturally delighted at the shopping opportunity there, as my friend guided us through the busy street. She was overjoyed when my friend gifted her a handbag, on which she had her eyes on. The meaning of her suggestive glance towards me, immediately after she had the prized possession in her hand, was not lost on me. She was indirectly telling me, 'You don't care about me. Look at your friend, how he values women!!'

We had a good time at the Orchard Road. It was already 6.30 in the evening and now it was time to go back to our resting place at Jelapang Road. I suggested that we take the train back home rather than hire a taxi, just to have the feel of the train in Singapore. Ivan was also accompanying us. We entered the neat and clean railway station at Orchard Road. There was no need to ask directions for trains because those were very clearly put on display. Ivan had a pre-paid rail card which automatically deducts the exact fare amount, once he swipes the card while exiting from the destination station.

We were staying at Jelapang Road but in the hurry, I could not locate a train going towards Jelapang station. So I purchased tickets through the automated ticket vending machine from Orchard Road for Bukit Panjang, which was close to Jelapang Road. There was no manual intervention in ticket vending. The tickets were in the form of cards, just like the credit cards. The fare was somewhere around Singapore dollar 2.50 (1 Singapore dollar was equivalent to approximately ₹34 then). In addition to the actual fare, dollar 1 was taken as security deposit. This amount of 1 dollar is refunded after depositing the card ticket in the ticket vending machine after exiting at the destination station.

As we entered the train, I was looking around for some unique

features that distinguish the Singaporean rails from our own. As expected, the trains were 'spitlessly' clean with no biscuit, namkeen or pan masala packets lying on the floor. While looking around, my eyes fell on the top of the train door, where the name of the approaching station and the route of the train were displayed by LED blinkers. I suddenly realized that the train, in which we were travelling, was going beyond Bukit Panjang, for which we had booked the tickets for and in fact was passing through Jelapang, the station which was closest to our residence! "Ivan, this train is passing through Jelapang... we can alight at that station.." I told Ivan excitedly.

"But your tickets are only up to Bukit Panjang... I have no problem as I have got the pre-paid rail card. You may face problem if you go beyond the Panjang station."

I thought for a while and decided to take the risk. A bit of diversion from the routine always adds spice to your journey. Jelapang was more convenient for us as our residence was at a walking distance and just 2 stations further from Bukit Panjang. "We will take the risk", I told Ivan, "Let's see what happens. If there is any issue, we can always return back to Panjang." Ivan agreed and we skipped Bukit Panjang and alighted at Jelapang station. We came to the exit gate of the Jelapang station. The gate opened for Ivan as he swiped his rail card and he went out. We swiped our ticket cards, but the exit gate won't open as our tickets were valid only up to Bukit Panjang. Now our real test had started! I saw a ticket vending machine attached to the exit gate, which we could access from within.

I decided to try getting the refund of additional security deposit of dollar 1, which is taken during the purchase of ticket and see whether that helps open the gate. I put my ticket card in the designated slot and pressed the refund button. The machine pulled in my ticket card and promptly dollar 1 popped out in the money dispenser. I picked up the money but my ticket card was gone and the gate remained closed! As I wondered what to do next, I spotted a small shop just next to the gate in the rail premises. The person in the shop was watching me all this time.

"If you have any problem, just press the black button in the centre of the machine. The customer care center will guide you", He volunteered the information. A big black button was right there in the center of the machine. No sooner did I press the button, a lady's voice spoke through the machine, "Hello, what can I do for you?" "Well, we had purchased the tickets for Bukit Panjang but we have come two stations ahead and we want to exit from this station." I explained, "Can you please guide us?"

"No problem! Put your card in the machine slot, just press the 'Add value' button and pay the fare difference which the machine displays." She prompted. 'Oh! It is so easy', I thought to myself. "Thank you Madam." I said. "You are welcome" She said and put off the line. I pressed the 'Add Value' button and put the ticket cards of my wife and 2 children in the machine slot. The machine prompted to pay 10 cents for each ticket, being the difference of fare between Bukit Panjang and Jelapang. The ticket cards came out with the added value and on swiping the cards; all three of them could exit out of the station. However, I was not able to exit as I had already put my card ticket in the vending machine and also obtained the refund of 1 dollar!

I again pressed the black button. "Now what?" The same lady's voice spoke. "Madam, I'm sorry but though my family could exit the station, I was not able to, as I have already taken the refund of 1 dollar by putting my card ticket in the machine. Can you help me out?"

I was sure that I would be slapped with a fine like the railways do in India, even if you have a valid reason for breaking the rules. "Ohhh! You have already taken a refund?" "Yes, madam. I'm so sorry" "Ok, I will open the service gate for you. You can exit from there." She said. "Thank you, Madam." I said and started walking towards the gate on the right.

"No no, not that gate. Go through the small gate on your left." She advised me. So all the time she could see us and she was watching us, sitting in the office somewhere in the city! That was great! "Ok Madam." I said and as I walked to my left, sure enough, a small service gate was there which was specially opened for me. At last I was out of the station without even paying the 10 cent fare difference, with a very wonderful, enjoyable and a different experience. The lady understood my difficulty very well and without much hassle, the same was sorted out smoothly. With this unique experience, we walked to our residence on Jelapang road merrily.



**Gregory Machado**  
C.O., Mumbai





# QUIZ

Your Time Starts  
**Now**

1. **What is meant by the phrase CSR?**
  - a) Corporate Social Responsibility
  - b) Company Social Responsibility
  - c) Corporate Society Responsibility
  - d) Company Society Responsibility
2. **Name the Act which mandates the concept "Corporate Social Responsibility (CSR)".**
  - a) The Companies Act, 2013
  - b) Societies Registration Act, 1860
  - c) Benami Transactions (Prohibition) Act, 1988
  - d) Consumer Protection Act
3. **Which section of the Companies Act, 2013 requires every company to constitute a Corporate Social Responsibility (CSR) committee to recommend a CSR policy?**
  - a) Section 131 b) Section 135 c) Section 142 d) Section 35
4. **Which of the following statement with respect to constitution of a committee to recommend a CSR policy under Corporate Social Responsibility (CSR) is true?**
  - a) Company having a net worth of ₹250 crore or more during any financial year
  - b) Company having a net worth of ₹300 crore or more during any financial year
  - c) Company having a net worth of ₹500 crore or more during any financial year
  - d) Company having a net worth of ₹1000 crore or more during any financial year
5. **Which of the following statement with respect to constitution of a committee to recommend a CSR policy under Corporate Social Responsibility (CSR) is true?**
  - a) Company having a turnover of ₹250 crore or more during any financial year
  - b) Company having a turnover of ₹500 crore or more during any financial year
  - c) Company having a turnover of ₹750 crore or more during any financial year
  - d) Company having a turnover of ₹1000 crore or more during any financial year
6. **Which of the following statement with respect to constitution of a committee to recommend a CSR policy under Corporate Social Responsibility (CSR) is true?**
  - a) Company having a net profit of ₹5 crore or more during any financial year
  - b) Company having a net profit of ₹10 crore or more during any financial year
  - c) Company having a net profit of ₹15 crore or more during any financial year
  - d) Company having a net profit of ₹20 crore or more during any financial year
7. **The board of an eligible company has to ensure that it spends, in every financial year, at least \_\_\_% of the average net profit of the company made during three immediately preceding financial years.**
  - a) 1% b) 2% c) 3% d) 4%
8. **Schedule \_\_\_ of the Companies Act, 2013 lists activities to be included by companies under Corporate Social Responsibility (CSR) policies.**
  - a) Schedule IV b) Schedule VI c) Schedule VII
  - d) Schedule VIII
9. **The Government notified Companies (Corporate Social Responsibility Policy) Rules, 2014 to take effect from \_\_\_\_.**
  - a) 01.04.2011 b) 01.04.2012 c) 01.04.2013 d) 01.04.2014
10. **Corporate Social Responsibility activities can be undertaken through a registered trust or a registered society or a company set up under section \_\_\_ of the Companies Act, 2013.**
  - a) Section 8 b) Section 9 c) Section 10 d) Section 11
11. **Which of the following is not true with respect to Corporate Social Responsibility (CSR)?**
  - a) A company may also collaborate with other companies for undertaking CSR projects, programmes or activities.
  - b) Contribution to any political party shall be considered as CSR activity
  - c) Administrative expenditure shall not exceed 5% of the total CSR

## जिमीकंद

जिमीकंद बहुपयोगी एवं पुष्टिवर्धक है। इसका रस घावों, अल्सर, बवासीर, ब्रॉन्कियल इरिटेशन, कफ, मंदाग्नि, मोटापे के लिए उत्तम है।

जिमीकंद को सूरन एवं ओल के अलावा एलीफेंट फ्रूट, याम, व्हाइट स्पॉट जाईंट एरम के नाम से भी जाना जाता है। इसकी पैदावार बिहार, केरल, पश्चिम बंगाल, आंध्रप्रदेश, कर्नाटक, महाराष्ट्र एवं ओडिशा में होती है। जिमीकंद में कार्बोहाईड्रेट, प्रोटीन, विटामिन, एंटी ऑक्सीडेंट्स, खनिज, भोज्य रेशे काफी मात्रा में पाए जाते हैं।

जिमीकंद के औषधीय गुण एवं इसके लाभ :

- 1 यह एस्ट्रोजन हार्मोन के स्तर को बढ़ाता है।
- 2 जिमीकंद में प्रोटीन होता है, यह मांसपेशियों की क्षति को ठीक करता है और ऊतकों व हड्डियों का निर्माण करने में मदद करता है।
- 3 कब्ज और पाइल्स की परेशानी में जिमीकंद लाभ पहुंचाता है।
- 4 जिमीकंद हानिकारक कोलेस्ट्रॉल को कम करता है।
- 5 जिमीकंद का उपयोग करने से उच्च रक्तचाप में राहत मिलती है।
- 6 ओमेगा 3 फैटी एसिड की प्रचुरता के कारण यह अच्छे कोलेस्ट्रॉल को बढ़ाता है।
- 7 जिमीकंद में ऐसा तत्व होता है, जो रक्त के गैर-जरूरी जमाव को रोकने में सहायक होता है।
- 8 शर्करा के रोगियों को जिमीकंद लाभप्रद है, क्योंकि इसमें प्राकृतिक चीनी कम मात्रा में पाई जाती है।
- 9 जिमीकंद का उपयोग सब्जी के रूप में किया जाता है। बेसन के साथ इसके पकोड़े स्वादिष्ट लगते हैं।
- 10 नींबू के साथ इसकी चाट बनाई जाती है।
- 11 देश के कई प्रांतों में दीपावली के त्योहार में जिमीकंद का हलवा पकवानों में विशिष्ट स्थान रखता है।



संतोष श्रीवास्तव

स्टाफ प्रशिक्षण केन्द्र, भोपाल

- d) Projects or activities that benefit only the employees of the company or their families shall not be considered as CSR activities.

**12. Under Corporate Social Responsibility (CSR), the CSR committee consists of \_\_\_ directors.**

- a) 1 b) 2 c) 3 d) 4

**13. The systematic evaluation of an organization's social impact in relation to standards and expectations is called as \_\_\_\_\_.**

- a) Regular Audit b) Statutory Audit c) Revenue Audit d) Social Audit

**14. Our Bank's Social Foundation Trust was established in 2006 and is functioning from its office at RO, \_\_\_\_\_.**

- a) Bangalore b) Chennai c) Varanasi d) Baroda

**15. Name the scheme under CSR in which a girl child can be adopted by our bank's branch for supporting her studies from 6th to 12th standard.**

- a) Project hariyali b) Union Adarsh Gram c) Union Shakti d) Union Pragati

**16. Corporate Social Responsibility is otherwise called as \_\_\_\_\_.**

- a) Corporate Conscience b) Corporate Citizenship c) Responsible Business d) All of these

**17. \_\_\_\_\_ is the recognized international standard for Corporate Social Responsibility (CSR).**

- a) ISO 16000 b) ISO 26000 c) ISO 36000 d) ISO 46000

**18. Triple Bottom Line means \_\_\_\_\_, \_\_\_\_\_, and \_\_\_\_\_.**

- a) Purpose, People, Profit b) Planet, peanut, Poverty c) People, Planet, Profit d) Peacock, Pigeon, Pearls

**19. Expand UBISFT.**

- a) United bank of India society Fundamental Trust  
b) United Breweries Institute Socially Formed Trust  
c) Union Bank of India Social Foundation Trust  
d) Unique banker's institute for society formation Trust

**20. The Book "Cannibals with Forks: the Triple Bottom Line of 21st Century Business written by \_\_\_\_\_.**

- a) Vikram Seth b) John Elkington c) Robert J Rubinson d) Robin Sharma

**U Sethupitchai**  
Staff College, Bengaluru



## Face In The Union Bank Crowd



"Aiming The

**BULLS EYE**

Perfectly"

Shivam Toriya

Friends, all of us are fascinated by the charisma of 'First Place' or 'Number One Position' and I'm sure, each one tries hard to achieve this position even today's rat race. This is even more difficult in the sporting event like shooting. Let me introduce you all to one such daredevil who focuses on getting closer range every time he picks up his weapon and for whom, hitting the bulls eye is not a fluke. He is **Shri Shivam Toriya**, Manager, R.O., Pune. With the qualifications of BCA and MBA in Marketing & HR, he joined the Bank in July, 2011 and also cleared JAIB & CAIB. For the first time he won the Silver medal in Shooting Championship organized by the State Rifle Association, Madhya Pradesh in 2015 and qualified for the Nationals, followed by the Gold Medal in State Level Shooting Championship in 2016. He also won the position in "Renowned Shoot" category at the Nationals. Previously he had also bagged President Award in Scouts & Guides in 2001 from the former President, Dr. K.R. Narayanan and in 2000, the Governor's Award in Scout & Guide from the former Governor, Shri Bhai Mahaveer. Though no one from his family is in this sport, he dedicates all his achievements to his Shooting Academy, parents and colleagues as well, who always stood for him and encouraged him. Apart from shooting, he loves listening to soft music. Till date he has invested 70% of his savings for this sport. He is very proud to be the first one from our Bank to participate in the Rifle Shooting events and winning accolades. He is also very thankful to the Bank for providing avenues and support to nurture his talent. In this candid interview, he describes in detail about his aiming passion.

### How have you landed in this game of 'Rifle shooting'?

Since childhood, I was always more inclined towards aiming games like marbles, pittuk, etc. and guns. 3 Years after joining the Bank, I got opportunity to take a 'Trial Shoot' at the 'Gun For Glory Shooting Academy'. Here, for the first time I hold the real Rifle and started aiming the given targets and to my surprise, I could shoot all the 5 targets. My father and one of my colleagues from Service Branch, Jabalpur, Shri Shwinash Wani, are my pillars of strength and encouragement. With the initial motivation from them, I started my training at the academy on 1st September, 2014. There I had to undergo some tests for opting rifle or pistol. These tests revealed my inclination towards rifle

shooting and from then onwards, I concentrated on rifle shoot only. I owe my success to the Academy. The Academy provides sportspersons with all the aides and facilities required to buck up their individual skills and abilities. Besides, the Academy has an eminent league of sporting greats to train young talents.

### What are the basic requirements of this game?

The kit for this game is expensive as compared to other sports. Since it is an Individual game, the kit includes Trouser, Jacket, Inners, Gloves, Shoes, Rifle and is used for both practice and match purpose. For practice, one has to go to shooting range only. Nowadays, there are many Shooting Academies in India in each state, though not in every city. Any person, irrespective of his age, can join the Beginner Level shooting. The charges are levied towards training and weapon, which one has to import. So altogether it becomes an expensive game to follow.

### Which are the categories & events in the shooting competitions?

Based on the gun used, there are two main categories i.e. Rifle and Pistol. Further, rifle has 3 while pistol has 6 events. In the rifle events, we have different categories depending on the distance of range and the different positions in which shooters have to shoot the target. These are further categorized into different age groups. In 50 mts rifle three position, the male shooter has to fire 40-40 rounds in standing, kneeling or sitting and prone positions while females have to fire 20-20 rounds. In 50 mts rifle prone, the shooter has to fire 60 shots while lying down position. In 10 mts air rifle, the male shooter has to fire 60 rounds while females to fire 40 rounds in standing position. There are three top position i.e. Gold, Silver and Bronze respectively in both individual and team event, played in each category.

### What are the prestigious competitions in India & abroad?

In India, each state can have its own competition with the state's name, then comes



the 'PRE-NATIONAL Championships' in the name of famous personalities followed by the National Championship i.e. National Competition of Shooting Sports. At the international level, any country can organize its own competition under the supervision of ISSF (International Shooting Sport Federation). The World Cup is organized every year by ISSF. Finally the Olympic Games in every Four Years. The main shooting events in India are National Shooting Championship; All India G.V. Mavlankar Shooting Championship; Kunwar Surendra Singh Memorial Air Weapon Shooting Championship; Sardar Sajjan Singh Sethi Memorial Shooting Championship & the Zonal Championship (once in a year).

### **Since this is a weapon based game, how do you obtain the licence?**

The licence is required for every event except air gun events. Initially, we practice with weapon provided by the Academy under supervision of certified coach. Then you have to pass a test wherein you have to achieve the minimum qualifying score (MQS) set by the State Association to fetch the certificate of 'Renowned Shot'. Then by applying, you can get the licence. With the help of this, you can import the gun duty free. You can import 15,000 bullets per year. Every game has its rules and regulation with safety measures, which everyone has to follow. You can purchase bullets/pellet at the time of competition or via Shooting Academy with the help of Competitor Card of shooting match or with the help of Shooter ID card.

### **Have you been any time trained under an international coach?**

Yes, I am being trained by the international coach at the Academy. She has lent her unconditional support to amateurs like me. During the training sessions, she gives us wonderful tips to cope with mental stress and retain balance and also help's us to go deep into in this sport.

### **What is mind training?**

Since this is a game of

repetition and consistency, we have to prepare our mind accordingly for the match of 60 shots, where every shoot counts equally. Hence we have to maintain balance of mind and body stability for each shot. I believe in 'practice makes a man perfect'. Hence, in addition to the rigorous 3 to 4 hours of practice on daily basis, I regularly do exercises + yoga for maintaining my physical and mental state. This also increases my concentration level.

### **Who is your 'Guru'? What role does a coach play in developing one's game?**

Without a good Coach it is very difficult to play a game, specially shooting where we have to maintain a stable mind as well as body under all circumstances. Here, the coach helps us out as he is aware of our strengths & weaknesses. Under his watchful eyes, the sportsman flourishes further as a perfect shooter.

### **What is the difference in female shooting events?**

While all other factors remain the same, the only difference is that male shooters have to play a match of 60 shots whereas their counterparts have to plays 40 shots only at the National and International level.

### **Who are your idols?**

Every great shooter has some awesome qualities that must be adopted by the sports person of their category. My all time favorite is Mr. Gagan Narang.

### **In all how this game has helped you in your life?**

Rifle shooting has helped me to develop confidence and oratory skills with better concentration. The entire shooting activity also develops sharp reflexes, proper mind-body coordination, improves steadiness, increases grasping power and most importantly relieves me of any mental and physical stress.

### **What are your future plans?**

My first target is to get selected in Indian National Shooting Squad and participate in Olympic 2020 in Japan. Also I wish to be the best rifle shooter in the world and facilitate the sports in every manner for the real and deserving sports persons.

*With such dedication and focus, besides able guidance and training from eminent sporting greats, this sharp Unionite will definitely hit the bull's eye not only at the national & international journeys, but also in the Olympic Arena soon. 'Union Dhara' wishes him all the Best in his future shooting endeavours. More power to his perfect hits!*

**Supriya Nadkarni**  
Union Dhara, C.O.



# सितंबर 2016 तिमाही के दौरान बैंक द्वारा जारी महत्वपूर्ण परिपत्रों की सूची

(क्रमांक के अनुसार)

क्र. सं.	परि. क्र.	जारी तिथि	विभाग	विषय
1	594	23/09/2016	आरएबीडी	दीनदयाल अंत्योदय योजना- राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन
2	591	23/09/2016	अनुपालन	अनुपालन नीति 2016-17
3	590	22/09/2016	एसएसडी	पूंजी एवं राजस्व खर्च नीति 2016-17
4	589	21/09/2016	केलेपनिवि	समवर्ती लेखापरीक्षा नीति 2016-17
5	588	21/09/2016	केलेपनिवि	प्रबंधन लेखापरीक्षा नीति 2016-17
6	584	16/09/2016	पीबीओडी	दस्तावेजों को संभालने एवं सुरक्षित रखने की नीति 2016-17
7	583	16/09/2016	पीबीओडी	प्रतिपूर्ति नीति 2016-17
8	582	15/09/2016	पीबीओडी	बैंक की शिकायत निवारण नीति में संशोधन
9	581	15/09/2016	पीबीओडी	वित्तीय वर्ष 2016-17 के लिए ग्राहक अधिकार नीति
10	580	15/09/2016	पीबीओडी	चेक/लिखतों के संग्रहण तथा चेकों के अनादरण पर नीति 2016-17
11	579	15/09/2016	पीबीओडी	वित्तीय वर्ष 2016-17 के लिए बैंक अंतरण नीति
12	572	01/09/2016	केलेपनिवि	वर्ष 2016-17 के लिए सूचना प्रणाली लेखापरीक्षा नीति
13	562	20/08/2016	पीबीओडी	जमाकर्ता ग्राहक संतुष्टि सर्वेक्षण
14	556	10/08/2016	सीपीएमएसएमई	ऋण संविभाग का प्रबंधन
15	552	10/08/2016	सीपीएमएसएमई	ऋण संविभाग का प्रबंधन
16	290	04/08/2016	जोप्रवि	निधि अंतरण मूल्य निर्धारण नीति 2016-17
17	538	29/07/2016	जोप्रवि	रियल इस्टेट सेक्टर के लिए ऋण नीति 2016-17
18	523	21/07/2016	डिजिटल बैंकिंग	बोर्ड द्वारा वर्ष 2016-17 के लिए अनुमोदित एटीएम नीति
19	520	16/07/2016	आरएबीडी	अग्रणी बैंक योजना पर मास्टर परिपत्र
20	518	16/07/2016	आरएबीडी	अल्प संख्यक समुदायों हेतु ऋण सुविधा पर मास्टर परिपत्र
21	517	16/07/2016	आरएबीडी	राष्ट्रीय आजीविका मिशन (एनआरएलएम) पर मास्टर परिपत्र
22	516	16/07/2016	आरएबीडी	एनयूएलएम पर मास्टर परिपत्र
23	515	16/07/2016	आरएबीडी	स्वयं सहायता समूह- बैंक संबद्ध कार्यक्रम पर मास्टर परिपत्र

अमित महतो  
यूनियन धारा, कै.का., मुंबई





On the eve of the second anniversary of Antwerp Branch, Belgium, a Customer Meet was held on 04/07/2016 wherein Shri Arun Tiwari, our Chairman & Managing Director is seen interacting with customers.

The board meeting at London was held on 06.07.2016. Seen (l/r) are Shri Bharat Bhagani, MLRO, Union Bank of India (UK) Ltd.; Shri Brajeshwar Sharma, MD & CEO, Union Bank of India (UK) Ltd.; Shri Arun Tiwari, Chairman, Union Bank of India (UK) Ltd.; Dr. Anand Kumar, Dy. CEO & Executive Director, Union Bank of India (UK) Ltd.; Shri Patrick Quinn, Non-Executive Director, Union Bank of India (UK) Ltd. and Shri John Kerr, Non-Executive Director, Union Bank of India (UK) Ltd.



On 11th July, 2016 our UK Overseas Headquarters celebrated their 2nd Foundation Day. Shri S.K. Jain, the former ED of our Bank, who happened to be in London, graced the occasion. Shri S.K. Jain, former ED, is seen cutting the cake while Shri Brajeshwar Sharma and Dr. Anand Kumar look on.



During his visit to Antwerp Branch, Belgium on the occasion of the branch's second anniversary, Shri Arun Tiwari, Chairman & Managing Director, is seen with staff members of the branch.

## Brief History of CSR in India

- **Atharvana Veda** says that “one should procure wealth with one hundred hands and distribute it with one thousand hands”.
- The **Yajurveda** says that “enjoy riches with detachment, do not cling to them because the riches belong to the public, they are not yours alone”.
- In the **Rig Veda**, there is also a mention of the “need for the wealthy to plant trees and build tanks for the community as it would bring them glory in life and beyond. Let us walk together, Let us talk together, Let our heart vibrate together”.
- **Kautilya** also “emphasized ethical practices and principles while conducting business”.
- **CSR & Islam**: Islam had a law called Zakaat which ruled that a portion of one’s earning must be shared with the poor in the form of donation.
- **CSR & Sikhism** : Similar to Islam’s Zakaat, Sikhs followed what they called **Daashaant**.

## केंद्रीकृत कार्यक्रम



Shri Arun Tiwari, Chairman and Managing Director, flanked by Shri Vinod Kathuria, Executive Director, at the press conference held on the occasion of announcement of Financial Results for quarter ended June 30, 2016.

Our Bank has entered into MoU with PIAGGIO Vehicles Pvt. Ltd., an Italian Company, manufacturing and selling its two and three wheelers vehicles in India, for financing their Light Commercial Vehicles PAN India. Seen here Shri Praveen Nagpal, Vice President, PIAGGIO Vehicles Pvt. Ltd. exchanging MoU with Shri D. C. Chauhan, our GM in presence of Shri Vinod Kathuria, ED.



## Our Bank launches Ucontrol in association with Worldline for mobile based card control

Users can now control usage of multiple credit cards from a single mobile app. Our Bank in association with Worldline, launched "Ucontrol" - a revolutionary way for customers to control credit card usage through mobile phones. Developed by Worldline, this service gives cardholders the power to enable and disable transaction channels as and when required. Shri Gulshan Pruthi, VP-Sales & Marketing, Worldline; Shri Vinod Kathuria, our ED; Shri Deepak Chandnani, CEO, South Asia & Middle East, Worldline; Shri Arun Tiwari, our CMD; Shri Raj Kamal Verma, our ED and Shri Debjyoti Gupta, our GM, Digital Banking were present at the launch of "Ucontrol", a first of its kind solution designed to give customers the convenience of controlling their credit card usage with a mobile application powered by Worldline.

Keeping the tradition of fore fronting the technological developments, our Bank, in association with NPCI, is one of the first public sector Banks to launch Unified Payment Interface (UPI) mobile application for their customers and non-customers on 25.08.2016. At present, the application is available for Android based mobile phones and for download on the play store as "Union Bank UPI App".



Shri Arun Tiwari, our CMD, unfurling the national flag on the occasion of Independence Day celebrations held at Central Office, Mumbai.

### Our Bank launched USSD based \*99# mobile App

Our Bank launched USSD based \*99# mobile application on PlayStore on Android platform. Our Bank, in association with NPCI, is the first bank to introduce Android based mobile application on USSD platform which does not require internet connectivity for performing banking and other value added services. APP is available for download on the Play Store as Union Bank \*99#. This facility can be used widely by all sections of people in the country. As the product is equipped with 10 languages, this will bring PMJDY customers into Digital Banking fold for satisfying their banking needs. It provides basic banking transactions such as checking account balance, money transfer and MPIN (mobile personal identification number) management. It also provides value-added services like checking Aadhaar-linked overdraft status and PMJDY account overdraft status.

### नए कदम



दिनांक 30.07.2016 को क्षेत्रीय कार्यालय, अहमदाबाद के नए परिसर का उद्घाटन करते हुए श्री अरुण तिवारी, अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक; साथ में हैं श्री एस. के. सिंह, महाप्रबंधक; श्री के. पी. आचार्य, महाप्रबंधक; श्री अशोक कुमार सिरोही, क्षेत्र प्रमुख, अहमदाबाद एवं अन्य गणमान्य.

दिनांक 29.08.2016 को एर्णाकुलम क्षेत्र की मालीपुरम शाखा के नए परिसर का उद्घाटन 'वयपेन' (एर्णाकुलम) क्षेत्र के विधायक श्री सरमा एस. द्वारा किया गया. इस अवसर पर एर्णाकुलम के क्षेत्र प्रमुख श्री पी. एस. राजन; स्थानीय पंचायत प्रेसिडेंट श्री पी. के. कृष्णन; मालीपुरम शाखा प्रबंधक श्री डी. श्रीकांत एवं अन्य वरिष्ठ अधिकारीगण उपस्थित थे.



The first E-Lobby of Udaipur region and fully furnished premises of the Shobhagpura Branch, Udaipur were inaugurated on 16-07-2016 by Shri Arun Tiwari, CMD and Shri Arjun Lal Meena, Honourable Member of Parliament, Udaipur in the presence of Shri A K Dixit, FGM.



## ग्राहक संबंध

दिनांक 08.09.2016 को भोपाल में स्टाफ मीटिंग के माध्यम से श्री अरुण तिवारी, बैंक के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक, बैंक की भोपाल स्थित विभिन्न शाखाओं में कार्यरत स्टाफ सदस्यों को संबोधित करते हुए.

दिनांक 30.07.2016 को शाम 6.30 बजे आयोजित कार्यक्रम में अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक, श्री अरुण तिवारी ने अहमदाबाद के सभी स्टाफ सदस्यों से चर्चा की.



## कारोबार समीक्षा

नेल्लूर क्षेत्र में दिनांक 18.07.2016 को शाखा प्रबन्धकों की बैठक में उपस्थित स्टाफ सदस्यों को संबोधित करते हुए बैंक के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक श्री अरुण तिवारी.



आदरणीय अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक के अहमदाबाद आगमन के अवसर पर, हमारे क्षेत्रीय कार्यालय, अहमदाबाद द्वारा अंधजन मंडल संस्थान (The Blind People Association) में अनुदानित प्रकल्प (Sponsored project) "विज्ञान इन द डार्क" का उद्घाटन करते हुए, अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक श्री अरुण तिवारी, साथ में महाप्रबंधक श्री एस.के. सिंह, क्षेत्र प्रमुख, अहमदाबाद श्री अशोक कुमार सिरौही और बैंक एवं संस्था के अन्य गणमान्य.



क्षेत्रीय कार्यालय, अहमदाबाद द्वारा मुद्रा योजना के तहत एलसीवी ऑटो फाइनेंस के अंतर्गत (बजाज के साथ टाई अप) ऋण लाभार्थियों को श्री अरुण तिवारी, अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक के हाथों ऑटो की चाभियां बाँटी गईं एवं इस अवसर पर उन्होंने हरी झंडी दिखाकर सभी ऑटो रवाना किए. इस अवसर पर श्री एस.के. सिंह, महाप्रबंधक; श्री के.पी. आचार्य, महाप्रबंधक एवं अन्य गणमान्यों की उपस्थिति रही.

बैंक के कार्यपालक निदेशक श्री विनोद कथूरिया जी के अहमदाबाद आगमन पर क्षेत्रीय कार्यालय, अहमदाबाद द्वारा प्रधानमंत्री मुद्रा योजना के अंतर्गत एलसीवी (LCV) फाइनेंस कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिसमें श्री विनोद कथूरिया, कार्यपालक निदेशक; श्री एस.के. सिंह, क्षेत्र महाप्रबंधक, अहमदाबाद एवं श्री अशोक कुमार सिरौही, क्षेत्र प्रमुख, अहमदाबाद द्वारा ऋण लाभार्थियों को ऑटो की चाभियां बाँटी गईं.



अटल पेंशन योजना – नामांकन, आधार अंकन, रुपये कार्ड, मुद्रा योजनांतर्गत (हल्के व्यवसायी वाहन) ऋण वितरण शिविर, समस्तीपुर में ऋणियों को ऋण वितरण करते हुए जिलाधिकारी श्री प्रणव कुमार; साथ में महाप्रबंधक श्री पी.सी. पाणिग्रही; क्षेत्र प्रमुख श्री प्रदीप कुमार श्रीवास्तव.



दिनांक 16.7.2016 को.क्षे.का., उदयपुर द्वारा आयोजित मेगा मुद्रा लोन कैम्प के दौरान एक महिला लाभार्थी को चेक प्रदान करते हुए मध्य में श्री अरुण तिवारी, अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक; बाईं ओर श्री ए.के. दीक्षित, क्षे.म.प्र., दिल्ली एवं श्रीमती उषा डांगी, प्रधान, पं.स. बड़गाँव; दाईं ओर श्री अर्जुन लाल मीणा, सांसद, उदयपुर; श्री खूबी लाल पालीवाल, प्रधान, पं.स. बड़गाँव एवं श्री आलोक कुमार, क्षेत्र प्रमुख.



प्रोजेक्ट उत्कर्ष के तीसरे चरण में दिनांक 01.08.2016 को बड़ौदा क्षेत्र के सरल एवं यूएलपी सहित कुल 20 शाखाओं में प्रोजेक्ट उत्कर्ष का शुभारंभ किया गया. इस अवसर पर श्री दिवाकर कामत, क्षेत्र प्रमुख, बड़ौदा; श्रीमती सौम्या श्रीधर, उप क्षेत्र प्रमुख, बड़ौदा; श्री जी.जी. गुप्ता, सरल प्रमुख; श्री पवन कुमार गौड़, शाखा प्रमुख, आईएफबी शाखा, बड़ौदा एवं क्षेत्रीय कार्यालय के स्टाफ सदस्य उपस्थित थे.



दिनांक 09 सितंबर 2016 को होटल मेरियट में आयोजित वित्तीय समावेशन सम्मेलन में श्री अरुण तिवारी, अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक ने भाग लिया, जिसमें आरबीआई के डिप्टी गवर्नर श्री एस.एस. मूंदड़ा, सिडबी के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक डॉ. छत्रपति शिवाजी, मध्यप्रदेश के मुख्य सचिव श्री एंटनी डीसा मुख्य अतिथि के रूप में आमंत्रित थे.



On 24-07-2016 Shri Arun Tiwari, CMD conducted the Bhoomi Pooja and laid the foundation stone for the New Hostel Building coming up at Staff College, Bengaluru. Seen (l/r) are Shri Arun Tiwari, CMD; Shri Kanekal Chandrashekar, FGM, Bengaluru and Dr. K.L. Raju, Regional Head, Bengaluru and Shri Atul Kumar, Principal, Staff College, Bengaluru.



On the eve of the World Environment Day, all staff members of Staff College, Bengaluru planted & adopted Mango Saplings. Seen in the picture are Shri Atul Kumar, Principal & Shri G.N. Das, Vice Principal, Staff College, Bengaluru along with other staff members & their family members and participants attending training programs as well.

दिनांक 26 सितंबर, 2016 को हिन्दी उत्सव-2016 के आयोजन के दौरान मानव संसाधन विभाग द्वारा प्रकाशित संदर्भ साहित्य-2016 का विमोचन करते हुए बैंक के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक श्री अरुण तिवारी (मध्य में) के साथ (दायें से): श्री अतुल कुमार गोयल, कार्यपालक निदेशक, श्री राज कमल वर्मा, कार्यपालक निदेशक, श्री आर.आर. मोहंती, महाप्रबंधक (मासं), श्री राम गोपाल सागर, सहायक महाप्रबंधक (राभा) व मासं विभाग के राजभाषा प्रभारी.



क्षेत्र महाप्रबंधक कार्यालय, चेन्नै द्वारा दिनांक 03.08.2016 को कार्यालय परिसर में अंचलाधीन राजभाषा अधिकारियों की अर्ध-वार्षिक समीक्षा बैठक हुई. दक्षिण भारत में राजभाषा - समस्याओं एवं निदान पर चर्चा करते अंचल प्रमुख श्री विजय प्रकाश उशारिया, महाप्रबंधक; साथ में अंचल उप प्रमुख श्री विजय श्रीवास्तव, सहायक महाप्रबंधक (राजभाषा) श्री राम गोपाल सागर.



दिनांक 20.08.2016 को क्षे.का. चंडीगढ़ द्वारा 'सूचना प्रबंधन में राजभाषा' विषय पर एक दिवसीय सेमिनार का आयोजन किया गया। इस सेमिनार में चंडीगढ़ स्थित विभिन्न बैंकों से कुल 38 राजभाषा व आई टी अधिकारी तथा बैंक के राजभाषा प्रभारी श्री राम गोपाल सागर, स.म.प्र., श्री जय प्रकाश चौधरी, मु.प्र. (रा.भा.), मुख्य अतिथि वक्ता के रूप में श्री केवल कृष्ण, वरिष्ठ तकनीकी निदेशक, गृह मंत्रालय, भारत सरकार, श्री सुरेश चंद्र तेली, क्षेत्र प्रमुख; उपस्थित हुए.



दिनांक 03.08.2016 को बैंक नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, लखनऊ के तत्वाधान में यूनियन बैंक द्वारा सामूहिक हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया था, उक्त कार्यशाला के उद्घाटन अवसर पर संबोधित करते हुए श्री सी.एम. गुप्ता, उप महाप्रबंधक एवं फ़ैकल्टी के रूप में उपस्थित भारतीय रिजर्व बैंक के राजभाषा प्रभारी साथ में श्री राजेश कुमार, मुख्य प्रबन्धक(राजभाषा)



स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर क्षेत्रीय कार्यालय सिलीगुड़ी द्वारा 'सुकन्या समृद्धि योजना' को बढ़ावा देने हेतु 'किड जी' में एक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। पूर्व क्षेत्रीय प्रमुख श्री सुधाकर राव की अध्यक्षता में यह कार्यक्रम आयोजित किया गया।

# हल्दी

हल्दी से सभी परिचित हैं। भारतीय गृहणियों के रसोई-घर में प्रयोग होने वाले मसालों में हल्दी अपना विशिष्ट स्थान रखती है। सच तो यह है, कि कोई भी मांगलिक कार्य, बिना हल्दी के पूरा नहीं होता। सौंदर्य प्रसाधनों में भी इसका जबरदस्त इस्तेमाल होता है।

तासीर गर्म होने के कारण यह कफ-नाशक, गैस-नाशक, शरीर से पित्त निकालने वाली तथा दर्द निवारक है। प्रमेह के लिए यह श्रेष्ठ है। इसका लेप सूजन समाप्त करने वाला, फोड़ा-फुंसी ठीक करने वाला है। इसका धुआं हिक्का-निवारण, स्वासहर (साँस फूलने में लाभकारी) और विषघ्न है। इसका प्रयोग कफ विकार, यकृत(लीवर) विकार, रक्त विकार, अतिसार(डिसेंट्री) प्रमेह तथा चर्मरोग में किया जाता है।

- कान बहता हो, तो हल्दी और फिटकरी को 1:20 के अनुपात में मिलाकर, दिन में तीन बार 2-2 बूंद कान में डालने से कान का बहना ठीक हो जाता है।
- खांसी में हल्दी को भूनकर इसका 1-2 ग्राम चूर्ण मधु अथवा घृत के साथ चाटने से लाभ होता है।
- जुकाम में हल्दी के धुएं को रात के समय सूंघते हैं, उसके बाद कुछ देर तक पानी नहीं पीते, इससे जल्दी लाभ होता है।
- पायरिया - सरसों का तेल, हल्दी तथा सेंधा नमक मिलाकर सुबह-शाम मसूड़ों पर लगाकर अच्छी प्रकार मालिश करने तथा बाद में गरम पानी से कुल्ला करने पर मसूड़ों के रोग दूर हो जाते हैं।
- पेटदर्द - इसकी जड़ की 10 ग्राम छाल को 250 ग्राम पानी में उबालकर गुड़ मिलाकर पिलाने से पेट दर्द मिटता है।
- दारु हल्दी की जड़ की छाल और सोंठ बराबर लेकर चूर्ण बनाकर 2-5 ग्राम की मात्रा में दिन में दो-तीन बार फंकी देने से अतिसार(डिसेंट्री) मिटता है।
- प्रदर में हल्दी का चूर्ण तथा गुग्गुलु का चूर्ण बराबर मात्रा में मिलाकर 5-10 ग्राम की मात्रा में सुबह-शाम सेवन करने से लाभ होता है।
- प्रदर में हल्दी का चूर्ण दूध में उबालकर एवं गुड़ मिलाकर सेवन करने से लाभ होता है।
- हल्दी, पिप्पली, पाठा, छोटी-कटेरी, चित्रकमूल, सोंठ, पिप्पलामूल, जीरा, मोथा को समभाग लेकर इसके कपड़छन चूर्ण को मिलाकर रख लें। इस चूर्ण को 2-2 ग्राम की मात्रा में गुनगुने पानी के साथ सेवन करने से त्रिदोषजनित सूजन तथा पुरानी सूजन का नाश होता है।

- दारु हल्दी की शाखाओं का 10-20 ग्राम काढ़ा पीने से पसीना होकर गठिया की पीड़ा मिटती है।
- दारु हल्दी की जड़ का सूखा सत्व बच्चों को विरेचन हेतु दिया जाता है। दुखती हुई आँख पर भी इसके सत्व का लेप करते हैं। सूर्य को देखने से आँख की जो ज्योति घट जाया करती है, वह इसके लेप से ठीक हो जाती है।
- खुजली, दाद, फोड़ा, रक्त विकार एवं चर्मरोगों में हल्दी के 2-5 ग्राम चूर्ण को गोमूत्र के साथ दिन में दो-तीन बार सेवन किया जाता है। हल्दी के चूर्ण को मक्खन में मिलाकर रोगग्रस्त भाग पर इसका लेप किया जाता है। 5 ग्राम हल्दी के साथ 2 ग्राम मिश्री मिलाकर प्रातः-सायं सेवन करने से भी लाभ होता है।
- 5 ग्राम हल्दी और नीम की पत्तियों 20-30 ग्राम चूर्ण को मक्खन में मिलाकर लेप करने से त्वचा कोमल और कांतिवान हो जाती है।
- दूब तथा हल्दी को एक साथ पीसकर लेप करने से दाद एवं शीत पित्त नष्ट होता है।
- चोट, मोच, ब्रण एवं पुराने घावों पर हल्दी, चूना और सरसों का तेल मिलाकर लेप करने से बहुत ही लाभ होता है। चोट के कारण उत्पन्न सूजन ठीक हो जाती है।
- दारु हल्दी की जड़ की छाल में बहुत सा कड़वा सत्व होता है। इसलिए अंतराल से आने वाले ज्वर को छुड़ाने के लिए यह काम आती है।
- दारु हल्दी की जड़ का 10-20 ग्राम काढ़ा पिलाने से निरंतर रहने वाला ज्वर शांत होकर चला जाता है। यह क्राथ स्प्रीन और लीवर वृद्धि में भी लाभ पहुँचाता है।



अनीता भोबे  
के.का., मुंबई

# Let us play

## Cross-word

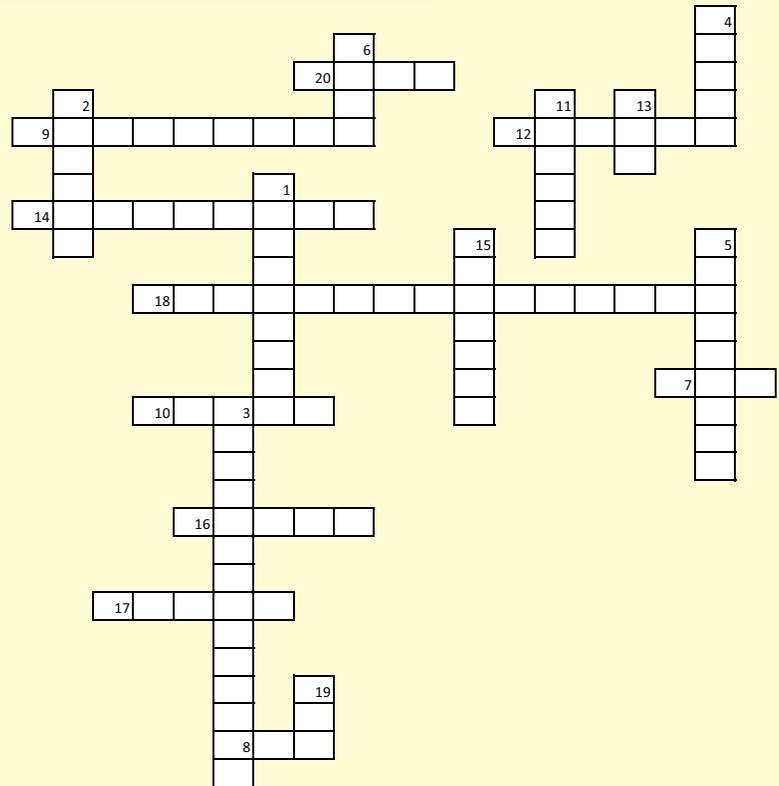
### Across

7. CSR provisions are applicable if turnover of company is----- thousand crore or more during any financial year.
8. Section 135(5) of Companies Act mandates spending at least----- percent of average net profit during the three immediately preceding financial year on CSR activities.
9. Company to which CSR is mandatory should appoint a CSR ----- to undertake and monitor CSR activities.
10. For listed company CSR committee should consists of ----- or more directors out of which at least one should be an independent director.
12. UBISFT means Union Bank of India ----- Foundation Trust.
14. UBISFT is functioning from its office at Regional Office -----.
16. ----- may decide to undertake its CSR activities approved by CSR committee.
17. CSR projects or programs or activities undertaken in ----- only shall amount to CSR expenditure.
18. Union Bank of India CSR scheme under which a girl child can be adopted by our bank branch for supporting her studies from 6th to 12th standard is -----.
20. CSR provisions are applicable if net profit of company is Rs----- crore or more during any financial year.

### Down

What is meant by CSR

1. -----
2. -----
3. -----
4. CSR is effective from 1st ----- 2014.



5. Section 135(1) of ----- Act 2013 mandates the CSR expenditure.
6. CSR provisions are applicable if company having a net worth of Rs ----- hundred crore or more during any financial year.
11. The systematic evaluation of an organization's social impact in relation to standards and expectations is called as ----- audit.
13. UBISFT was established in year two thousand -----.
15. The provisions of CSR are applicable to ----- company having branch office or project in India and fulfill the criteria.
19. In case of foreign company the CSR committee should have at least----- persons.

**Vishavajeet Kumar**  
Staff College, Bengaluru





Government of India

## CABINET SECRETARIAT DIRECTORATE OF PUBLIC GRIEVANCES

### Unresolved Grievances Bothering You?

You may seek help of Directorate of Public Grievances (DPG) in resolution of grievances relating to Ministries' Departments and Organisations under its purview in last few years nearly ninety percent of the grievances taken up by the Directorate have been resolved favourably.

Please read carefully the conditions listed below before lodging your grievance:

- You should have exhausted the Department's remedies for individual grievances
- Your grievance should not relate to service matter (other than payment of terminal benefits like gratuity, GPF, etc.) a case disposed off at the level of Minister of the concerned Department commercial contract a sub-judice case, a case where quasi-judicial procedures and appellate mocha
- Suggestion of any sort will not be treated as grievance.

#### List of Ministries / Departments / Organisations under DPG's Purview

(a) Ministry of Railways	(i) Public Sector Banks
(b) Department of Posts	(j) Public Sector Insurance Companies
(c) Department of Telecommunications including BSNL and MTNL	(k) National Saving Scheme of Ministry Scheme
(d) Ministry of Urban Development including Delhi Development Authority, Land & Development Office, CPWD and Directorate of Estates	(l) ESI hospitals and dispensaries directly controlled by Employees State Insurance Corporation under Ministry of Labour and Employment
(e) Ministry of Petroleum and Natural Gas including Public Sector Undertakings	(m) Employees' Provident Fund Organization
(f) Ministry of Civil Aviation including Airports Authority of India and Affairs of India	(n) Regional Passport Authorities under Ministry of External Affairs
(g) Ministry of Shipping Road Transport and Highways	(o) Central Government Health Scheme under Ministry of Health and Family Welfare.
(h) Ministry of Tourism	(p) Central Board of Secondary Education, Kendriya Vidyalaya Sangathan, National Institute of Open Schooling, Navodaya Vidyalaya Samiti, Central Universities, Deemed Universities (Central) and Scholarship Schemes of Ministry of Human Resource Development
	(q) Ministry of Youth Affairs

Note: You can lodge your grievance online on our website:

"<http://dpg.gov.in>". You may also send your grievance to us by post or fax with complete information and relevant documents.

Contact us

**The Secretary,**

Directorate of Public Grievances

2nd Floor, Sardar Patel Bhawan, Sansad Marg,

New Delhi - 110001

Tel.: 011-23743139, 011-23741228, 011-23363733

Fax: 011-23345637, e-mail: [secypg@nic.in](mailto:secypg@nic.in)

Website: <http://dpg.gov.in>



## सुरति लोचो (Surti Locho)

खाने में सुपरहित, सेहत को रखे फिट. आल टाइम फेवरिट स्नैक्स सुरति लोचो. कम तेल से बना और भाप में पका ये गुजराती व्यंजन मसालेदार चटनी, हरी मिर्च और सेव के साथ परोसा जाता है जो खाने में बेहद स्वादिष्ट और लजीज़ है.

### जरूरी सामग्री

#### सुरति लोचो के मिश्रण के लिए सामग्री

चना दाल-1 कप, उड़द दाल -1/3 कप, पोहा 1/3 कप, तेल 2-3 टेबल स्पून, हरी मिर्च 1-2, अदरक पेस्ट 1 छोटा चम्मच या कद्कूस किया हुआ, हींग 1-2 पिंच, हल्दी पाउडर 1 छोटी चम्मच से कम, काली मिर्च 1 छोटा चम्मच, लाल मिर्च पाउडर-1/2 छोटा चम्मच, ईनो फ्रूट साल्ट 1 छोटा चम्मच, नमक 1 छोटा चम्मच (स्वादानुसार)

### सर्व करने के लिए सामग्री:

हरे धनिया की चटनी:- आधा प्याला हरा धनियां, हरी मिर्च 4-5, 1 नींबू का रस, बारीक सेव 1 प्याली

### बनाने की विधि:

चने और उड़द दोनों दालों को अच्छे से धो कर अलग-अलग पानी में 5-6 घंटे के लिए भिगो दें. भीगने पर दोनों दालों से फालतू पानी निकाल दें, 1-मिनट के लिए पोहा भी पानी में भिगो दें. अब चने की दाल को आवश्यकतानुसार पानी डाल कर दरदरा पीस लें और एक अलग बड़े बर्तन में निकाल लें.

अब उड़द की दाल और भीगे हुए पोहे को एक साथ बारीकी से पीस लें और इस मिश्रण को भी चने की दाल वाले मिश्रण में डाल कर अच्छे से मिला लें. अब इस मिश्रण में अदरक का पेस्ट, हरी मिर्च, हींग और हल्दी पाउडर, नमक, आधा चम्मच लाल मिर्च और 2 छोटे चम्मच तेल डालकर मिला दें. (बैटर की कनसिसटेंसी) ढोकला के बैटर की कनसिसटेंसी जैसी ही रखिए) जरूरत के अनुसार आप 1-2 चम्मच पानी और मिला सकती हैं.

सुरति लोचो पकाने के लिए आपको स्टीमर या किसी ऐसे बर्तन की जरूरत होगी जिसमें कोई दूसरा बर्तन रख कर भाप से इसे पकाया जा सके. इसके लिए एक कुकर या बड़े बर्तन में 2 कप पानी डाल कर गरम होने के लिए रख दें और साथ ही एक जाली का स्टैंड भी रख दें. अब किसी दूसरे बाउल या बर्तन में तेल लगाकर उसे चिकना कर लें. मिश्रण में इनो फ्रूटसाल्ट मिला कर इसे चिकने किए बर्तन में डाल दें और हिला कर एक बराबर कर लें. साथ में ऊपर से लाल और काली मिर्च बुरक दें.

बड़े बर्तन में रखा पानी उबलने लगे तो मिश्रण वाला बर्तन जाली वाले स्टैंड पर रख दें. बड़े बर्तन को ढक कर इसे 20 मिनट तक पकने दें. सुरति लोचो पक गया है या नहीं, ये देखने के लिए इसमें चाकू डालकर देखें, अगर पतला बैटर चाकूपर नहीं चिपकता तो इसका मतलब आपका सुरति लोचो बन कर तैयार है.



### ऐसे करें सर्व

इसे गर्म-गर्म एक प्लेट में निकाल कर चम्मच की मदद से दबा कर फैला दें. अब इसके ऊपर चारों तरफ एक चम्मच तेल, नींबू का रस, 1-2 चम्मच चटनी, थोड़ा सा हरा धनियां और 2-3 टेबल स्पून सेव डालें. अब तली हुई क्रिस्पी साबुत हरी मिर्च से सजाकर परोसें.

### अनीता भोबे

के.का., मुंबई



# आप की प्वाती

## Opinion Gallery



At the outset I thank you very much for sending me copy of Union Dharma June, 2016. The front page itself depicts the colours/flavours of entire Folk culture of our country. It is indeed heartening to note that Sri Haldhar Nag, Lok Kabi happens to be our customer. Interview of Sri A.K Jain by Sri R.G. Sagar was excellent.

In Folk festival 'Paus Mela' of Shantiniketan, West Bengal could have been mentioned because even folk artists from other countries attend this mela. As regards Neyyapam, same preparation of rice and jaggery is made in eastern India and is called 'Gur Pitha'.

It is indeed proud moment for all Unionites that our CMD himself is doing Yoga on Yoga Divas on 21.6.2016.

With all good wishes

**Tapan Kumar Bhattacharjee**  
Rtd. Unionite

यूनियन धारा का अप्रैल-जून 2016 बहुसंजी एवं बहुआयामी अंक प्राप्त हुआ। लोक संस्कृति विश्व में भारत की एक पहचान है और अनेकता में एकता की मिसाल! सम्पादकीय में स्टाफ प्रशिक्षण केन्द्र भोपाल के प्रति प्रकट उद्गार हेतु भोपाल केन्द्र आभारी है। परिदृश्य में हमारे प्रबंध निदेशक महोदय के विचार प्रेरणादायक है।

यह भारत के पाठकों का सौभाग्य है कि इतनी विविध संस्कृति, परम्परा, खान-पान की झलक एक ही जगह मिली। इतने अच्छे अंक के सम्पादन एवं प्रकाशन के लिए सम्पादक एवं सम्पादकीय टीम निश्चित ही बधाई के पात्र है। शुभकामनाओं सहित।

**संतोष श्रीवास्तव**  
स्टाफ प्रशिक्षण केन्द्र, भोपाल

"हिंदी दिवस" की ढेर सारी शुभकामनाएं! मैं यूनियन बैंक का भूतपूर्व कर्मचारी हूँ और सरदारनगर शाखा, अहमदाबाद का वर्तमान ग्राहक भी हूँ। "यूनियन धारा" का जनवरी-मार्च, 2016 का तिमाही अंक पढ़कर बहुत अच्छा लगा। यूनियन धारा जैसे अपने सभी पूर्व सहयोगियों से संपर्क करने की एक कड़ी है। सधन्यवाद!"

**अतुलकुमार र. कतीरा**  
सहायक प्रबंधक-वाणिज्य, एयर इंडिया लिमिटेड  
सरदार पटेल अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डा, अहमदाबाद

"यूनियन धारा का मार्च 2016 अंक प्राप्त हुआ और इसको पढ़ने के बाद इंडिया 2020 की बहुत जानकारी हासिल हुई। सभी लेख बहुत ही रोचक और ज्ञानचर्धक हैं। बड़ी प्रसन्नता की बात है की दिनों-दिन आप पत्रिका में नवोन्मेषण कर रहे हैं - जैसे आर्ट (कमाल कामज का) आदि बहुत ही सुंदर और रोचक हैं। एक बार पुनः समस्त संपादकीय सलाहकार और यूनियन धारा की पूरी टीम और सभी लेखकों को बधाई और अभिनंदन !!"

**एस.के. रुबेल**  
दुववाड़ा शाखा, विशाखापट्टनम



फोटो प्रस्तुति: - दीपा राजे, एन.आर.आई. शाखा, मुंबई.

मेरा ध्येय सतत चलना है,

कल-कल-छल-छल बस बहना है,

सुंदर-स्वच्छ मुझे रहने दो

मुझको बस इतना कहना है.

प्राकृतिक शंकाएँ लिए मैं,

सबका हित-उद्धार लिए मैं,

हरियाली से सजती जाऊँ

हर माचण से बहती जाऊँ

मेरी उज्वल जलधारा है,

ध्यान मग्न तट, कविता है

जी हाँ ठीक मुझे पहचाना,

मेरा नाम एक सचिता है.

-सागर